ब्रह्मसङ्गोष्ठी उपक्रम

प्रकाशक : श्रीवल्लभाचार्य ट्रस्ट, मांडवी–कच्छ

कंसारा बजार, मांडवी–कच्छ,
गुजरात–३७०४६५
Tel. 02834-231463
Email:gosharad@rediffmail.com
www.vallabhacharyavidyapeeth.org
www.pushtimarg.net

प्रकाशन वर्ष :
वल्लभाब्द ५३८,
वि.सं.२०७२, सन.२०१५

प्रति : ५००

मुद्रक :
पूर्वी प्रेस्, राजकोट

जय श्रीकृष्ण

श्रीवल्लभाधीशो जयति

काशक : श्रीवल्लभाचार्य ट्रस्ट, मांडवी–कच्छ

विषयानुक्रमणिका

प्रथम दिवसीय उपक्रम

मङ्गलाचरण ०१
उपक्रम ०३
नाम- रूप - कर्म के संदर्भमें - जैन, बुद्ध, विज्ञान, नैयायिक, शांकरादिकनके मत ०७
वाल्लभमत ०९
नैयायिकमत १७
जैन - बौद्ध मत १८
शांकरमत १८
वाल्लभमत १८
ब्रह्मवाद २०
बौद्धमत २७
रामानुजमत २८
वाल्लभमत २९
ब्रह्मवादी चार्ट ३१
शांकरमत ३३
ज़रथुष्ट्रमत ३३
द्वितीय दिवसीय उपक्रम **३५**
बौद्धमत ४३
वाल्लभमत ४५
ब्रह्मवादके संदर्भमें बौद्धमत / वाल्लभमत ४५
तृतीय दिवसीय उपक्रम **६४**
ज़रथुष्ट्रमत ६४
ज़रथुष्ट्रमत चार्ट ६९
चतुर्थ दिवसीय उपक्रम **८४**
ब्रह्मवादके संदर्भमें ईजिप्शियन् (मिस्र)मत ८९

ब्रह्म संगोष्ठी उपक्रम

।। मङ्गलाचरण ।।

चिन्तासन्तान्हन्तारो यत्पदाम्बुजरेणवः ।।
स्वीयानां तान् निजाचार्यान् प्रणमामि मुहुर्मुहुः ।।१।।
यदनुग्रहतो जन्तुः सर्वदुःखातिगो भवेत् ।।
तमहं सर्वदा वन्दे श्रीमद्-वल्लभ-नन्दनम् ।।२।।
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।३।।
नमामि हृदये शेषे लीलाक्षीराब्धिशायिनम् ।।
लक्ष्मीसहस्रलीलाभि सेव्यमानं कलानिधिम्।।४।।
चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च त्रिभिस्तथा ।।
षडभिर्विराजते योऽसौ पञ्चधा हृदये ’’ ।।५।।

गो. शरद् : आपकी आज्ञासु ये संगोष्ठीको प्रारम्भिक वक्तव्य जो वल्लभाचार्य ट्रस्ट संस्था द्वारा आयोजित हे वाके द्वारा कर रह्यो हूं. साधनाप्रणालीमें याही स्थानपे याही तरहसु एकत्रित भये हते वाके बाद काफी लंबे समयके बाद यहां पुनः एकत्रित होयवेको अवसर मिल्यो हे. ठठाई भाटिया फंड और वल्लभ सेवा सुखधामकी सुंदर व्यवस्था ब्रह्मके गहन चिंतनमें सहायक होगी, ऐसी आशा रखें. जो शृंखला लंबे समयसु चली आ रही हे वाके बीचमें एक लंबो अंतराल आ गयो; पुनः अपन एकत्रित हो रहे हैं वो सौभाग्यको विषय हे पर ये बात कम समयमें एकत्रित होवेको अवसर मिले तो ज्यादा अच्छो और ज्यादा चिंतनको अवसर मिले.

ग्रंथनको भी सघन अध्ययन करनेको अवसर मिल जाय. अन्यथा प्रासंगिक अध्ययन-अध्यापनमें प्रवचनमें जुड़े भए जो

ग्रंथ हें उनको होतो रहे पर ऐसे लीकसु हटके विषयकी चर्चा जहां नहीं होती होय वो ग्रंथ भी बंदसे रेहते होवें.

अब ये जो संगोष्ठी हे वामें या बखत एक नयो फीचर ऐड् कर रहे हें : सम्प्रदायके बाहरसु अन्य मतके विद्वानन्कु यामें आमन्त्रित कियो गयो हे. अभी वो ऑन् रूट हें. कुछ समय बाद यहां आ जायेंगे. प्रतिदिन एक एक विद्वान जो तत्त्वचिंतनके क्षेत्रमें कार्य कर रहे हें, उनकु अपनने निमन्त्रित कियो हे. उनके लिये अपनी प्रक्रिया देखनेको अवसर मिलेगो और अपनकु उनकी शैलीको उनके चिंतनको लाभ मिलेगो. या सेमिनारमें अपनकु कई लाभ मिल रहें हें. जैसे पिछली बार भी अपन संगोष्ठीमें देखते आये हें के आलेख लिखनेवालो स्वयं अपने पत्रकु प्रस्तुत नहीं करे परन्तु कोई दूसरो व्यक्ति प्रस्तुत करे वा शैलीसु या बखत भी सबनकु अपने अपने पत्रकु दूसरेके मौंहसु सुननेको अवसर मिलेगो. प्रक्रिया ये रहेगी के पंद्रह–बीस मिनटमें पत्रकी प्रस्तुति होवे. आलेख जाने लिख्यो हे वो वाके बाद वा विषयमें जो कुछ भी केहनो चाहे वो पंद्रह बीस मिनटमें कहे. तीसरे क्रममें ओपन फोरमपे चर्चा. या तरेहसु प्रत्येक आलेखपे अपन करेंगे. कुछ आलेख जिनने लिखे हें वो कोई कारणवश यहां उपस्थित नहीं हो पाये तो भी अपन उनके पत्रकु अपन ले रहें हें के जासु वा विषयकी आनुपूर्वी बनी रहे.

जो अतिथि बाहरसु आ रहे हें उनसु अपन ये अपेक्षा रखेंगे के वो चर्चा और पत्र अगर वो देख पाये होंय अथवा वो चर्चा सुन पायें वासुं उनके जो भी ऑब्सर्वेशन हें वो यहां दे सके हें. और उनको भी वा विषयके प्रति कोई वक्तव्य होवे वाकी प्रस्तुति भी वो करें.

या बखत साम्प्रदायिक विषयके ऊपर जो चर्चा संगोष्ठी

चल रही हती वाकी शृंखला करीब फल पर्यन्त पोहोंचके सफल होवे और अब तत्त्वचिंतनके विषयनकु अपन आगे बढ़ा रहे हें. या तरहसु जैसे श्यामुदादाकी प्रेरणा और आज्ञा होयगी वा अनुसार आगे भी. ब्रह्मको विषय या बखत अपन ले रहे हें. और आप भी संगोष्ठीके आरम्भमें या विषयपे प्रतिदिन विषयप्रवर्तनके रूपमें और जो विषय या सूचीमें नहीं आ पाये हें उनसु भी अपनकु परिचय हो सके हे. अन्य मतके भी विषयमें जो जो विचार हें वा विषयमें भी आप निरूपण करेंगे. समय अपनो यद्यपि दससु लेके रात तक जब तक अपनो सामर्थ्य होवे तब तक हे. पर विषय जितने हें वा हिसाबसु संभव जितनो फायगो वो पूर्ण करनेको प्रयास करेंगे. पर विषयकु अन्याय होय और जल्दीसु खतम हो जाये वो दृष्टि नहीं रखके. हो सकेगो तो याकु दो भागमें भी अपन, जो छूट जायें उनकु अपन करें. ये जो सेमिनार पेहले वल्लभाचार्यपीठ हालोलमें आयोजित होनो हतो पर वाकु हाईजैक कर लियो गयो. अब वाकी जो भी कुछ अदायगी होय वो करके वापिस वाकु वाके ठिकाने पहुंचाके वाकी सम्पन्नता हो सके, ऐसी या मंगलशुभाकांक्षाके साथ आपश्रीकु मैं प्रार्थना करूं के आप आगेकी प्रक्रिया प्रारम्भ करें.

गो.श्या.म. : नमो भगवते तस्मै कृष्णाय अद्भुतकर्मणे रूपनामविभेदेन जगत् क्रीडति यो यतः.. यन् मूर्ध्नि मे श्रुतिशिरस्सु च भाति यस्मिन् अस्मन्मनोरथपथः पथ सकल समेति स्तोष्यामि नः कुलधनं कुलदैवतं तत्पादारविन्दम् अरविन्दविलोचनस्य तत्त्वेन महिमार्णव यस्य शीकराणुः शक्यो न मातुमपि शर्वपितामहद्यैः कर्तुं तदीयमहिमस्तुतिमुद्यताय मह्यं नमोऽस्तु कवये निरपत्रपाय.

ब्रह्मपे संगोष्ठी होनी, ब्रह्म जैसे विषयपे, ये सचमुचमें सौभाग्यको विषय हे, जैसे के यामुनेयाचार्य केह हें ये मेरे

मस्तकपे और श्रुतिके मस्तकपे बिराजमान ब्रह्म हे और प्रमाणके, प्रमेयके, साधनके, फलके मनोरथ जहां नदियें जैसे सागरमें एकत्रित होवें हैं वा ब्रह्मकी स्तुति करनेके लिये ये ब्रह्मसंगोष्ठी हे. एसे अपने प्रभुके पादारविन्द जो है अरविन्दविलोचन हें. वासु बड़ी मजेदार एक बात यामुनेयाचार्य ये केह रहे हें जो महिमाको पूरो पूरो वर्णन ब्रह्माजी, शिवजी भी नहीं कर सकते होंय वाकी महिमाको अपन हाईजैक की भई या जैसी भी संगोष्ठीमें करनो चाहते होंय, संभव तो नहीं हे. बोहोत मीठी बात उनने कही हे वाकी भी स्तुति करनेलिये मैं जो तैयार भयो हूं तो सबसु पेहले दूसरेनकु नमस्कार नहीं करके मोकु नमस्कार करूं हूं. अपन सब एक दूसरेकु नमस्कार करें वाके बजाय खुदकु नमस्कार करलें. महाप्रभुजीकु तो अपनने नमस्कार कियो ही हे अपने ठाकुरजीकु भी नमस्कार किये हें. सचमुचमें अपन नमस्करणीय हें अपने लिये के अपन ब्रह्मके विषयपे संगोष्ठी कर रहे हें. कोई दूसरो करेके नहीं करे व्हाई शुड आई केयर एबाउट यु. नो प्रोब्लम.

तो बोहोत दुर्लभ बात हे, ब्रह्म विषयपे संगोष्ठीको आयोजित होनो. ये हाईली टेक्नीकल विषय हे. खाली टेक्नीकल हे इतनो ही नहीं हे. अपनने २२ पेपर लिये हें. वाके बाद भी ब्रह्मके सारे पहलुनको कवरेज यामें नहीं भयो हे. वो जो भी आकरग्रंथनको देखें हें उनकु ये बात पता चलेगी. अपनने एक फॉरमेट बनायो और वो फॉरमेट ब्रह्मकी महिमाके आधारपे नहीं बनायो पर अपनी समझकी आधारपे बनायो के ब्रह्मको यदि अपनेकु समझनो हे तो ये फॉरमेट हे अपने पास. या फॉरमेटसु अपन ब्रह्मकु समझ सकें. अपन जा फॉरमेटसु ब्रह्मकु समझनो चाह रहे हें वो अपनी लिमिटेशन हे. जैसे अपन बारीमेंसु आकाशकु देखें. बारीमेंसु जा बखत आकाशकु देखेंगे वा बखत आकाश तो वही दीखेगो के जो असीम हे अगाध हे पर दीखेगो उतनो ही जितनो बारीमेंसु देख्यो

जा सकतो होय.

सो अपनी ये संगोष्ठीकी ये जो बारी हे वामेंसु अपन वा असीम अगाध ब्रह्म तत्त्वको देखनेको प्रयास कर रहे हें. दीखेगो तो वही असीम अगाध तत्त्व पर दीखेगो उतनो ही जितनो अपनी अपनी संगोष्ठीकी बारी हे. ये एक बेसिक अन्डरस्टेन्डिंग अपनेकु समझके चलनो हे. कोई भी पेपरकु अपन लें तो सभी पेपर मैंने सर्सरी निगाहसु देखें हें. काफी अच्छे ढंगसु सभीने परिश्रम कियो हे. जिनने भी परिश्रम कियो हे या विषयमें वो सभी बोहोत अभिनन्दनीय हें. मह्मं नमोऽस्तु कवये न्यायसु. या विषयपे इतनो परिश्रम तो कियो ना! क्योंके ब्रह्मसु सरस विषय और कोई हो नहीं सके और ब्रह्मसु नीरस विषय कछु हो नहीं सके. अब वो ब्रह्मकी विरुद्धधर्माश्रयता समझो के माहात्म्य समझो के अपनी लाचारी समझो. हकीकत ये हे और ये ही हे.

जा ब्रह्मकी महाप्रभुजीने स्तुति ‘‘**नमो भगवते तस्मै कृष्णाय अद्भुतकर्मणे रूपनामविभेदेन जगत् क्रीडति यो यत:**’’ करी है. अपने प्रथम क्कि मङ्गलाचरणसु; मैं याकु प्रथम मङ्गलाचरण या लिये केह रह्यो हूं के महाप्रभुजीके ग्रंथनमें प्रथम ग्रंथ शास्त्रार्थ प्रकरण हे. शास्त्रार्थ प्रकरणको ये प्रथम मङ्गलाचरण हे. षोडशग्रंथ वगैरह सारे ग्रंथ महाप्रभुजीके, क्योंके प्रतिज्ञा महाप्रभुजी उन ग्रंथनकु लिखनेकी शास्त्रार्थ प्रकरणमें कर रहे हें. यासु अपनेकु पता चले के ये महाप्रभुजीको प्रथम ग्रंथ हे. वा प्रथम ग्रंथको मङ्गलाचरण है नमो भगवते तस्मै कृष्णाय अद्भुतकर्मणे रूपनाम विभेदेन जगत् क्रीडति यो यत:. या मङ्गलाचरणमें एक बोहोत गम्भीर इन्साईट अन्तर्दृष्टि महाप्रभुजीने वापरी हे. अपने बोलचालकी भाषामें अपनेकु साधारणसी बात लगे. पर जब वा प्रोब्लममें अपन उतरके देखें तब अपनेकु पता चले के कितनी गम्भीर बात महाप्रभुजीने एक छोटेसे मङ्गलाचरणमें कही हे. वामें बोहोत थोड़े शब्द हें रूपनामविभेदेन जगत् क्रीडति यो यत:. चाहे अपनी इण्डियन फिलोसफी होय, चाहे वेस्टर्न

फिलोसफी होय ये रूपनामके विभेद – ये टर्मको वापरते ही कोई चीज ऐसी नहीं रेह जाये के जाको कवरेज नहीं भयो होय.

बौद्धधर्मकु अपन देखें तो नामरूपको वहां बोहोत प्रोमिनेन्ट रोल हे. वेस्टर्न फिलोसफीकु अपन देखें तो परसेप्ट और कन्सेप्टको बोहोत ही प्रोमिनेन्ट रोल रह्यो हे, वेस्टर्न फिलोसफीके पूरे डिस्कशनमें. सारी स्कूल्स् और ब्रांचेस् डिवाईड भई हें और अभी भी डिवीजन् चलते रहे हें, वो रूपनामके झगड़ाके चल रहे हें. संक्षेपमें अपन केह सकें के कोई दर्शन रूपवादी होवे हे, कोई दर्शन नामवादी होवे हे. मने लेटेस्ट् जो अभी तक आजकल नयो डीकन्स्ट्रक्शनिज्म् चल रह्यो हे. वहां भी सारो झगड़ा रूपनामको हे जो पुराने विटगिंस्टाईन और ऐसे सब भये वहां भी झगड़ा रूपनामको ही है.

तो अपन समझ सकें हें के अपने महाप्रभुजीने अपने प्रथम मङ्गलाचरणमें रूपनामविभेद केहके बोहोत छोटीसी बात कही हे पर वाको जो स्कोप इतनो बड़ो स्कोप हे के जा स्कोपके अंतर्गत अपन यों समझलें ऐसी कौनसी बात हे जाको यामें कवरेज नहीं मिल्यो होय. और ये शब्द महाप्रभुजीके खुदके घड़े भये नहीं हें. वेदने सबसु पेहले यह बात कही हे. ‘‘**ब्रह्मैव सर्वाणि नामानि रूपाणि कर्माणि बिभर्ति. तदेतत् त्रयम् सद् एकम् अयम् आत्मा. अयमात्मा एकः सन् एतत्त्रयम्.**’’

तो मैं समझूं के तथ्य जो भी होंय अब अपनो सिद्धांत ये हे के वेद पेहले हे और सारी दर्शनकी विचारधारायें बादमें प्रकट भई. अपन वा झगड़ामें नहीं पड़ें के वेद पेहले या कौन पेहले और कौन पीछे हे. पीछे होंयके पेहले होंय मुद्दाकी बात ये हे के जिन लोगनने नामरूपके बारेमें जितनो विवाद कियो वो सारो विवादकु वेदने ‘‘**सर्वेहोतारो यत्रैकनीडं भवन्ति समानसीन आत्मा जनानाम्**’’ के न्यायसु – या एक छोटेसे सूत्रमें अपनेकु समझा दियो के ‘‘**तदेतत् तत्त्रयम् सद् एकम्**

अयमात्मा. अयमात्मा एकः सन् एतत्त्रयम्.''

ये नाम, रूप और कर्म तीन होते भये भी आत्मतया यूनीफाईड हो रहे हें. एक हो रहे हें. आत्मा एक होते भये भी नामरूपकर्मात्मना त्रिविध हो रही हे. तीन बन रही हे. ये पेहली यूनीफिकेशन् थियरी हे के जो तीन बराबर एक और एक बराबर तीन प्रोक्लेम कर रही हे. जो बात मेथेमेटिकली सम्भव नहीं हे. या ब्राह्मिक दृष्टिकु **''ये ही बात सत्य हे.''** ऐसे उपनिषद् अपनेकु केह रह्यो हे. अपन भी आनन्दसु केह सकें के यदि मेथेमेटिक याको ओपोज् करती होय तो मेथेमेटिक गई भाड़में, परमार्थ सत्य ये ही हे. मेथेमेटिक्स् कोई मेथेमेटिकल सत्य है, वाको अपन डिनाई नहीं करेंगे. वो सत्य नहीं हे ऐसी बात नहीं हे पर ब्राह्मिक सत्यके आगे ये मेथेमेटिकल सत्य बोहोत टुच्ची पड़े हे. वो टुच्चोपन उपनिषद्ने अपनेको या तरहसु समझायो हे के **''तदेतत् तत्त्रयम् सद् एकमयम् आत्मा. अयमात्मा एकः सन् एतत्त्रयम्''**. ये तीन होते भये भी आत्मतया एक हें और आत्मा एक होते भये भी तीन हे. नामरूपकर्मात्मना एक होते भये भी तीन हें. ये इक्वेशन कभी अपने माइन्डमेंसु जानो नहीं चईये.

आईन्स्टीनको जो यूनिफिकेशन हे ई.एम.सी.को - वो यूनिफिकेशन् भी याको ही पार्ट हे. याके कवरेजमेंसु वो बाहर जा सके ऐसो वो यूनिफिकेशन् नहीं हे. तो अपन समझ सकें हें के या सूत्रकी ब्रह्मकु समझनेमें कितनी महत्ता हे.

नाम रूप और कर्म इनकु अपन जा बखत एनालाईज् करें तो ये सारी सृष्टि को मूलमें कॉन्स्टिटट्यूशन् रूप और नाम हे. महाप्रभुजीके शब्दमें देखनो होय तो रूप सदंशमें प्रकट हो रह्यो हे. नाम चिदंशमें प्रकट हो रह्यो हे.

नाम- रूप - कर्म के संदर्भमें जैन, बुद्ध, विज्ञान, नैयायिक, शांकरादिकनके मत :

जैन धर्मकी दृष्टिसु देखो तो जीव और अजीव दो पदार्थ हें. जो जीव पदार्थ हे वो नामवान् हे. अजीव पदार्थ हे वो रूपवान् हे. जीव और अजीवको जो इन्टरएक्शन् हे वही तो ये सृष्टि हे. वा सृष्टिकी एक पूरी सिस्टम् हे. वो पूरी सिस्टम क्या हे? जाकु उपनिषद् त्रयं सद् एकम् केह रह्यो हे के कर्म. सारे कर्म हें ब्रह्म सो अपन समझ सकें के कर्म एक वो फिनोमिना हे जो इटसेल्फ एक सिस्टम हे. वा कर्मकु सिस्टम् तरीके स्वीकार करके सारे नास्तिकवाद अनीश्वरवाद प्रवृत्त भये हे. वो ब्राह्मिक सिस्टमसु डिससेटिस्फाईड् हें. वासुं ज्यादा कोई ऊंची उड़ान अपनेकु नहीं करनी हे.

बुद्धधर्मभी वोही केह रह्यो हे. जैनधर्म भी वोही केह रह्यो हे. आजको भौतिकवाद भी वोही केह रह्यो हे. साइन्टिफिक् जो भी कोई थियोरीस् आई हें. आजकल मटिरियलिस्मको तो साइन्स्ने गणपतिबापा मोरिया कर दियो हे. गोन विद् द् विन्ड्स् हो गयो मटिरियलिस्म्. कोम्युनिस्टनकुं भले ही अभी भी मटिरियलिस्मको हैन्गोवर सतातो होय. भौतिकवाद अब कोई कन्सेप्ट नहीं हे आउटडेटेड् हो गयो हे. जो प्रिवेलिङ कन्सेप्ट् हे वो कर्मको हे. या कर्मसु अतिरिक्त कोई ब्रह्मकी आवश्यकता नहीं हे. क्योंके सिस्टम् अपने आपमें सफिसियेन्ट् हे कर्मकी. भगवान् बुद्ध भी येही बात केहते थे के ईश्वर भी यदि हे तो कर्मके बिना ईश्वर अपनो ऐश्वर्य प्रकट नहीं करेगो. यदि ईश्वरकु भी कर्मकी अपेक्षा हे तो ईश्वरकी क्या आवश्यकता हे. तो अपन समझ सकें हें कर्म मने पापपुण्यवालो कर्म तो एक इन्स्टेन्स् हे. कर्मको मतलब साईन्स्की बेसिक टर्मिनोलोजीमें समझनो होय तो मोशन्, एक्शन्. तो कुछ नोन एक्टिव पदार्थ हें कुछ काईनेटिक पदार्थ हें. उन दोनों पदार्थनके बीचमें जो इन्टरएक्शनको जेनेरेट कर पा रह्यो हे, वाकी कोई एक सिस्टम् हे, जो के कर्मनामकी सिस्टम् हे. वो कर्मनामकी जो सिस्टम हे वाके नाम और रूप पार्ट हें. सिस्टम कर्मकी हे और नाम रूप वा सिस्टमके दो

पार्ट हें. जाको जैन जीवाजीव केह हें. बुद्ध वाको नामरूपके ही नामनसु स्वीकारें हें. माइन्ड और मैटरके रूपमें वेस्टर्न फिलोसोफर्स् ने स्वीकार्यो हे. अब टाईम, स्पेस्, एनर्जी और मैटरके रूपमें वाको स्वीकारें हें.

नाम– रूप – कर्म के संदर्भमें –

वाल्लभमत :

महाप्रभुजी इतने अवेयर हें या बारेमें के क्रीडति कहे हैं. आखिर क्रीडा क्या हे? वा कर्मकी महाप्रभुजीने क्रीडात्मिका व्याख्या करी हे. एक्च्युली केहनो क्या चइतो थो रूप नाम कर्म विभेदेन. महाप्रभुजीने कर्मकु ड्रोप कियो वहां. ड्रौप करके एक बात बताई के रूपनामविभेदेन जगत् क्रीडति यो यत:. क्रीडा कर्म हे. कर्मकी व्याख्या महाप्रभुजीने क्रीडात्मिका कर दी.

जब क्रीडात्मिका करी तब अपने सामने एक बोहोत बड़ो मुद्दा उछलके आयो. क्रीडा व्यक्ति प्रभावसु करे, कम्पल्शन्सु करे, ड्युरेस् सु करे अथवा कैसे करे? सर्कस्में जितने शेर और हाथी और हिप्पोपोटेमस् जैसे बिचारे हन्टरके बलपे क्रीडा करते होवें वैसे? उनसु खुदसु पूछ्यो जायके तुम क्रीडा कर रहे हो? कोई जानवरकु वो बात पसन्द नहीं आवे. जा बखत बिफर जाये वा बखत अपन देख सकें के रिङ्गमास्टरकु खा जातो होवे जानवर. यदि क्रीडा मानतो होतो तो खातो नहीं. हंटरके मारे करे बिचारो क्रीडा. शेरको कहो के वो फायरकी रिङ्गमेंसु कूदो तो वो कूदे. हाथीको कहो के बोल खेलो तो बौल खेले बिचारो. अब वो छोटेसे टेबलपे जापे अपन नहीं मा सके वापे हाथी बैठके और दिखा दे. ये सब ठीक हे. हंटरके बलपे क्रीडा कर रह्यो बिचारो पर वाको खुदको एहसास क्रीडाको नहीं है.

जो बेसिक डिफरेन्स् आ रह्यो हे वो याबातपे आ रह्यो हे. कोईके कारण कोई कर्म कियो जा रह्यो हे तो वामें अपनेकु क्रीडाको भाव नहीं

जगे. यदि अपन कोई कामनासु कर रहे हें तो भी क्रीडाको भाव नहीं जगे. क्योंके महाप्रभुजीने वाकी परिभाषा करी **अनायासात् हर्षेण् क्रियामाणा चेष्टा** लीला क्रीडा. ये बोहोत बड़ी इन्साइट हे, ब्रह्मके संदर्भमें सोचें ना, तब अपनेकु लगे के महाप्रभुजीने जैसे सूरदासजीको डपट लगादी के सूर व्हेके काहे घिघियात हे कछु भगवद्लीला गा. ऐसे भगवद्लीलागानके मूडमें महाप्रभुजी वाको केह रहे हैं. वो ठीक बात हे वो ब्रह्मकी लीलाको गान करनो होय तो वाको वा तरहसु केहनो चईये.

पर या बातपे ध्यान दो के यदि स्वभावनियत क्रीडा हे तो वामें कॅलकुलेशन संभव हे. कॅलकुलेशन संभव हे तो प्रिडिक्शन संभव हे. क्योंके जहां कैलकुलेशन हे याको मतलब के एकके बाद दो आनो है दो के बाद तीन आनो हे चार आनो हे. दसके बाद बीस आनो हे, चालीस आनो हे. कॅलकुलेशन जहां संभव हे वहां प्रेडिक्टेबिलिटी आवे. जो अनप्रेडिक्टेबिलिटी आती होय वहां अपनी कॅलकुलेशनकी सामर्थ्य खतम हो जाये. क्योंके अनप्रेडिक्टेबिल कुछ आ रह्यो हे. अपन सीजनको दिनको केलेन्डरको कॅलकुलेशन कैसे करें? या महीनाके बाद वो महीना तो आयेगो ही. यदि वा महीनाके बाद वो महीना नहीं आवे. अपने यहां वा तरीकेकी थोड़ी सिस्टम रखी हे के कुछ क्षय हो जाये कुछ अधिक हो जाये. जो भी रोमन कैलेन्डरसु काम चला रहे हें उनको दिमाग चकरा जाये के भई महीनाको क्षय कैसे हो गयो? क्या अर्थमें क्षय भयो? अपन जाकु महीना समझते होंय के ३० दिन. उनको क्षय भयो कहां? ३० दिन तो आ ही रहे हें. तो अपन कहे के नहीं ऐसे नहीं पर ऐसे हो गयो. आम नहीं पण ओम थई गयो. अब वो आम और ओम करते रहो पर समझ नहीं पड़े के क्षय का भयो? क्योंके कैलकुलेट नहीं कर पावे आदमी. तो जितनो भी लौजिक हे, मेथेमेटिक्स् हे, साईन्स् हे, वाकी बेसिक रिक्वायरमेन्ट् कॅलकुलेशन हे. ऐसे आजसु पचास साल पुरानी साइन्टिस्टनकी कल्पना हती.

अपन सबनपे एक घोर लाञ्छन हतो के इनकी जो दार्शनिक दृष्टि हे वो कॅलकुलेशन स्वीकार नहीं करे हे लीला केहके. कॅलकुलेशन अलाउ नहीं करे हे करके वामें प्रेडिक्टेबिलिटी नहीं हे के प्रिमाईज् ये हे तो कन्क्लुजन क्या आयेगो? सारे वेस्टर्न स्कॉलर्स्कु, जैननकु, बौद्धनकु अपने या दर्शनपे आपत्ति हती और वो लोग ये केहते थे के याको मतलब ये हे के भगवान या ब्रह्म पागल हे. क्योंके अनकैलकुलेटेड कुछ काम कर रह्यो हे. अब तो साईन्स् भी ये मान रह्यो हे के कॅलकुलेशन संभव नहीं हे. एक बखत शान्तिसु घोषणा करो के साईन्टिस्ट् सब पागल हें. तब अपन कहेंगे के ब्रह्म महासाईन्टिस्ट् हे. वेदान्त जो हे वो महासाईन्स् हे. ये छोटे छोटे साईन्स् हें जो कॅलकुलेशन संभव नहीं मान रहे हें. मने लाईट वेव हे के पार्टिकल हे यामें कॅलकुलेशन संभव नहीं हे.

अभी ग्रांडयुनीफिकेशन् थियोरीके तहत कॅलकुलेशन संभव नहीं हे. अपन लोग केहते थे स्टिफन होकर्स् केह रहे हें के भूल जाओ ये यूनिवर्स नहीं हे पर मल्टीवर्स हे. कोई एक मल्टीवर्सके तहत कोई एक यूनिवर्स एक प्रिन्सिपलसु काम नहीं कर रह्यो हे. पच्चीसन प्रिन्सिपल वामें संभव हें. और यहां तक केह रहे हें साईन्टिस्ट् लोग के जा प्रिन्सिपलसु काम कर रहे हें, वो एकही पॉसिबिलिटी नहीं हे. ऐसी पचास पॉसिबिलिटी हो सकें. तो कॅलकुलेशन खतम.

अब कॅलकुलेशन खतम हो गयो तब क्या करनो – ब्रह्म संगोष्ठी करनी? के उपादानता क्या हे? अन्तर्यामिता क्या हे? सर्वातीतता क्या हे? उपपत्ति क्या हे? विकृति क्या हे? लय क्या हे? हां करनी. मह्यं नमोस्तु कवये. अपनेकु कॅलकुलेशन करनो. कायके लिये करनो के जो अनकैलकुलेटेड हे वाको अपनकु अपने माईन्डके फ्रेममें जो भी कॅलकुलेशन होय वो करनो चईये. टाईम अनकैलकुलेटेड हे. पर अपन वाको कैलेन्डरमें कॅलकुलेशन करें हैं के नहीं करें हैं? संख्या नम्बर्स् जो हें वो इनफाईनाइट हें. पर अपने दम तक नम्बरको गिने हें के नहीं गिने

हें? क्योके अपनो काम अनकैलकुलेटेड नहीं चल रह्यो हे वासु अपन या तरीकेको अहंकार करें के तत्त्व कैलकुलेट कियो जा सके हे. वो एक एक्स्ट्रीम हे. दूसरो एप्रोच ये हे के अनकैलकुलेटेड हे याकेलिये अपनकु कॅलकुलेशन नहीं करनो! महाप्रभुजीको और मोडर्न साईन्स्को जो सिद्धान्त हे के हां सब कुछ कॅलकुलेशन वर्धी नहीं हे पर अपनेसु जो कुछ भी कॅलकुलेशन कियो जा सके हे वो तो करनो ही चईये.

बोहोत सारे लोगनकु पता होयगो और नहीं होय तो आजकल तो गूगल महाराज सर्वगुरु जगत्गुरु बिराजमान हे, उनकी शरणमें जाके देखलो के जब भी सुनामी आवे हे अथवा जब भी भूकम्प आवे हे तो वामें बोहोत सारे लोग मर जायें हें और वा मुसीबतको कुछ न कुछ कॅलकुलेशन करके कुछ बच भी जाते होवें हें. अब मरनेवाले क्यों मर गये और बचनेवाले क्यों बच गये? ये बच्यो तो वो क्यों नहीं बच्यो? वो मर गयो तो ये क्यों नहीं मर्यो? वाको पाछो कॅलकुलेशन पॉसिबल नहीं हे. हम लोग नेपाल गये थे. कितनो सुंदर कृष्ण मंदिर वो सारो ढह गयो. पशुपतिनाथ अभी भी वहां बैठे भये हें. नेपालमें एक कुमारी कन्याकु देवी मानके पूजें हें, वो देवीको मंदिर जरा भी नहीं ढह्यो. कितने लोग मरमरा गये. तो अपन समझ सकें हें के जहां भी अपन कॅलकुलेशन कर रहे हें वो अपनी रिक्वायरमेन्ट हे. तत्त्वको स्वरूप होनो जरूरी नहीं हे.

आइये सिद्धेश्वरजी! हमारे अलग अलग शिविर जो भई वामें ये पार्टिसिपेट करनेवाले हें. जब भी अच्छी चर्चा करनी होय तो सिद्धेश्वरकी याद आये बिना रहे नहीं. या लिये खास इनको बुलाये कॅलकुलेशनसु. वाको कारण के अनकैलकुलेटेड प्रश्न ये खड़ो कर सके हें. व्रजभाषामें बोल रहा हूं आपको हरकत नहीं आयेगी.

तो अपन समझ सके हें के ये रूपनामविभेदेन जगत् क्रीडति यो यत: यह क्रीडतिके अन्तर्गत महाप्रभुजीने कर्मकी व्याख्या कर दी के सिस्टम जो हे रूप नामके इन्टरएक्शनकी जो सिस्टम हे वो क्रीडात्मिका

सिस्टम हे. क्रीडात्मिका सिस्टम हे वाको शुद्ध शुद्ध मतलब ये हे के वामें सारो कॅलकुलेशन पॉसिबल नहीं हो सके. क्योंके वो न तो कोई प्रभावके तहत की गई हे. न वो स्वभावके तहत की गई हे. जासुके अपन कॅलकुलेशन कर सकें.

पूरो नहीं होयगो तो नहीं होयगो तो वामें घबरानेकी क्या बात हे. जितनो होयगो उतनो तो कर देंगे ना अपन. अपनने बाईस टौपिक लिये हें. कोई चिंताकी बात नहीं हे. पर अपन यों सोचें के २२ टौपिकस्में ब्रह्मकी चर्चा हो जायगी वो तो थियोरिटिकली नॉट पॉसिबल. नहीं होयगी पर जितनी होयगी को ''**मज्जतोः रेणुकुलाचलयोः विशेषः**!'' बात तो अपनेकु समझके रखनी चईये बाई डिफॉल्ट्.

वेदने एक और इम्पौर्टेन्ट् बात कही. ''**श्रवणायापि बहुभिर्यो न लभ्यः. श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित् आश्चर्यो वक्ता कुशलो अनुशिष्टः**'' ये तो कुछ ऐसो तथ्य हे कि जो सुननो मिले ही नहीं. यदि सुनभी लें तो अपनेकु समझ पानो मुश्किल, कौनसे समझ पानेके अर्थमें? माइन्ड इट् कॅलकुलेशनके अर्थमें. सुनके अपन समझ नहीं पायेंगे. क्योंके अपन कॅलकुलेशनके अर्थमें समझ नहीं पायेंगे. नहीं समझ पायेंगे तो कोई चिंताकी बात नहीं हे. वक्ता केहनेवालो भी खुद आश्चर्य चकित होके वाको वर्णन कर रह्यो हे. सुननेवालो वाको समझ जा रह्यो हे.

उपनिषद् वाकी निंदा करे हे. ''**अविज्ञातं विजानतां विज्ञातम् अविजानताम्**'' जो ये दावा कर रह्यो हे के समझ गयो वो नहीं समझ्यो हे. जाको ये समझमें आ जाये हे के मैं नहीं समझ्यो वाको थोड़ी बोहोत समझमें आई. एगजैक्ट्ली बारीमेंसु अपन आकाशकु देख रहे हें पर आकाशकी असीमता अपनकु समझमें तो नहीं आयेगी. बारीमेंसु दीखती भई आकाशकी असीमता समझमें नहीं आयेगी. नहीं समझमें आ रही हे याकेलिये आकाश नहीं दीख रह्यो हे मिथ्या दीख रह्यो हे. ऐसो दर्शन

अपनो नहीं हे. क्योंके बारीके उपाधिमेंसु सीमित दीखतो भयो आकाश भी अपने आपमें असीम हे, असीम हे और असीम हे. या तथ्यकु अपनकु समझके चलनो चईये. याके लिये बोहोत सारे उपनिषद्ने ब्रह्मके कन्सेप्टकु समझानेकेलिये बोहोत सारे उपाय किये.

पर एक मौलिक बात जो उपनिषद् समझानो चाहे हे ब्रह्मके बारेमें वो ये हे ''**कस्तं मदामदं देवम् मदन्यो ज्ञातुमर्हति**'' कैसे तुम समझ पाओगे ब्रह्मकु के ब्रह्म क्या हे? या तरीकेकी कोई आरभटी करे. सर्वोत्तम स्तोत्र याद करो. या तरीकेकी कोई आरभटी करे तो आदमी नर्वस् हो जाये ना. उपोद्घात्में अपन केंह के अपन ऐसी चर्चा करने जा रहे हें के जो कोईके समझमें नहीं आयेगी. जस्ट् उपोदघातमें, तो जो भी पार्टिसिपेन्ट् हें उनको मोरल तो पेहले ही टूट गयो ना. क्योंके वाके बाद तुम क्या चर्चा करोगे? गप्प गोलायें मारोगे? कोई सच्ची बात करोगे के कोई कविता पाठ करोगे? हुं फट् कर दोगे? क्या करोगे, ये केहनो मुश्किल हो जाये. याकेलिये बोहोत अच्छी बात बताई के भई मैं जो बात केहनो चाह रह्यो हूं वाकु ध्यानसु समझो तुम. ब्रह्मकु अपन अपनी वाणीकी सीमा तक वर्णन कर सकें हें नहीं कर सकें ऐसी बात नहीं हे. एक छोटीसी डोंगीसु अपन दरियाकी सैर तो कर सके हें पर पार कर सकें के नहीं कर सकें? सैर तो कर सकें के नहीं? डोंगीकी भी जरूरत नहीं हे. अपने हाथ पैरनकु हिलानेके प्रयाससु भी दरियामें तैर्‍यो जा सके हे के नहीं तैर्‍यो जा सके हे? तैर्‍यो तो जा सके हे. पार पोहोंच पावेंके नहीं पोहोंच पावें? तो न यामें अतिशय निराश होनेकी जरूरत हे और न ही या मौलिक तत्त्वके बारेमें अतिशय अभिमानकी आवश्यकता हे.

या बातकु ध्यानमें रखके अपन जा बखत ब्रह्मसंगोष्ठी कर रहे हें तो वामें एक पेहलो मुद्दा ये आवे हे – ''**श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित्**''. ब्रह्मके बारेमें सुननेके बाद भी, सुन लोगे तुम पर समझमें नहीं आयेगी. क्यों समझ नहीं आयेगी? ये तो वेद केह रह्यो हे. क्योंके ये

जो ब्रह्मको कन्सेप्ट् हे वो ‘‘**तन्तु औपनिषदं पुरुषं पृच्छामि**’’. ये औपनिषद् कन्सेप्ट हे. जब अपन वाको औपनिषद् कन्सेप्ट माने वो उपनिषदैक गम्य हे. शंकराचार्यजी बोहोत अच्छी बात केह हें ‘‘**नहीदमतिगम्भीरं भावयाथात्म्यम् आगमन्तरेण उत्प्रेक्षितुमपि शक्यम्**’’. ये गम्भीर भावयाथात्म्यं हे. कैसे जातको भावयाथात्म्यं हे? यदि आगम अपनेकु नहीं बतावे तो अपनेकु ऐसी उत्प्रेक्षा (हाईपोथिसिस्) होनी भी मुश्किल हे.

मैं जो बात केहनो चाह रह्यो हूं या चर्चासंगोष्ठीमें, अपने महाप्रभुजी भ केह हें ये उपनिषदैकगम्य कन्सेप्ट हे. ‘‘**अलौकिकोहि वेदार्थोन युक्तया प्रतिपद्यते. तपसा वेदयुक्तयातु प्रसादात् परमात्मनः**’’. या कन्सेप्टकु जाने बिना वाकु समझ पानो मुश्किल हे. अक्सर या तरेहकी जा बखत संगोष्ठी होवें हें वा बखत लोगनके मनमें घबराहट पैदा हो जाये के ये प्रामाणिक हे, हाईपोथेटिकल् हे, के जस्ट कोई काल्पनिक कन्सेप्ट हे. क्योंके जब अपन वाकु शब्दकी कुछ एक सीमा होवे हे, हर शब्दकी कुछ लिमिटेशन हे के वाको अर्थ अपन कैसे समझें?

अपने यहां पुरानी सिस्टम ये हती ‘‘**शक्तिग्रहं व्याकरणोपमानात् कोशात् वाक्याद् व्यवहारतश्च वाक्यस्यशेषाद् विवृते वदन्ति सान्निध्यतः सिध्दपदस्य वृद्धाः**’’. ये सारे प्रोसीजर् हें के कोई भी शब्दकी शक्ति मने कोई भी शब्दको अर्थ अपनेकु कैसे समझमें आवे? व्याकरणसु, उपमानसु, व्यवहारसु, बड़ेनने अपनेकु बता दियो, बड़ेनने शब्दनको उच्चारण करते भये कोई तरहको व्यवहार कियो, जैसे एक पेटेन्ट् उदाहरण हे याको ‘**घटमानय**’ बड़े लोग बोलें. एकाद घड़ाकु ले आवे तो बच्चा समझ जाये के घडा लानेको मतलब ये हे. वृद्ध व्यवहारकु देखके. वाक्यशेषाद्. कोई वाक्यके शेषमें कोई बात आती होय तो वासु जुड़ जाये. दो शब्दनको आपसमें संन्निधिके कारण एकसु

दूसरे शब्दको ज्ञान हो जाये. ये सारे पैटर्न हते.

शंकराचार्यजीने दूसरी बात कही, ‘‘**रूप्याद्यभावात् नायमर्थः प्रत्यक्षस्य गोचरः लिङ्गाद्यभावाद् च न अनुमानादीनाम् आगममात्रसमधिगम्यतु अयमर्थो धर्मादिवत्**’’. वामें कोई रूप नहीं हे तो वाकु देख नहीं सकोगे. देख नहीं सकोगे मतलब क्या? याको मतलब ये हे जैस लौजिकल पौजिटिविस्ट यों केंहें हें के जा टर्मको वेरीफिकेशन् संभव नहीं होय, इम्पीरिकल वेरिफिकेशन्, वाको मीनिंग कन्स्ट्रक्टेड मीनिंग हे. डिस्क्रिप्टिव मीनिंग हे.

जैसे मैं आपको कहू् के ये पेन हे. अब आपने याको वेरीफिकेशन् कियो. तो या पेनको मतलब आपको समझमें आ गयो. मैं कहू् के ये डस्टर हे. तो ये आपने वेरीफाई कर लियो के ये डस्टर हे. तो मीनिंग तो समझमें आ गयो क्योंके याके रूपके साथ आपने ये डस्टर शब्दको वेरीफाई करके जा टर्मको मीनिंग वेरीफाई नहीं होवे वो मीनिंगलैस् हे. अर्थहीन कौनसे अर्थमें?

वो तुम्हारो मैन्टल कन्स्ट्रक्शन् हे. जब मैन्टल कन्स्ट्रक्शन् हे वा बखत कोइ गैरन्टी नहीं रेह जाये. क्योंके अत्यन्तासत्यपि अर्थेशब्दः ज्ञानं करोति हि. क्योंके अत्यन्त असद अर्थमें भी – अपने यहां शशविषाणको उदाहरण दियो जाय हे. वहां गोल्डन माउन्टन, राउन्ड स्क्वेयरको उदाहरण दियो जाय हे पाश्चात्य दर्शनमें. जो उदाहरणसु समझनो होय. वन्ध्यासुतको उदाहरण दियो जाय. अब ये तो पुरानी बात हो गई. आजकल तो वन्ध्यायें भी सुत पैदा करने लग गई हें. वो तो अब आउटडेटेड् उदाहरण हो गयो हे. शशविषाण भी कोई ऐसो उदाहरण नहीं हे आजकी तारीखमें जो के थियोरिटिकली पॉसिबल नहीं होय. क्योंके जेनेटिक जो डेवलप भई हे वामें जब चईये साइन्टिस्ट् सींगवालो खरगोश पैदा कर सकेगो, आज नहीं तो कल.

बोहोत सारी बातें जो राउन्ड स्क्वेयरकी अपन केह रहे हें, ये अत्यन्त असद् उदाहरण हे पर मैं हर बखत एक बात कहूं के पृथ्वीके सरफेसपे अपनने यदि अपनने स्क्वेयर बनायो और वाको एक्स्टेन्ड् करते गये और पृथ्वी गोल हे तो अन्तमें जाके वो स्क्वेयर कहीं न कहीं गोल हो जायेगो. वो भी अत्यन्त असद् अर्थ आजकी तारीखमें रेहनो वाकी मुश्किल हो गई हे कथा.

अब असद्को अर्थ क्या हे? वो अपन अलग फुरसतसु सोचेंगे. पर अत्यन्तासत्यपि अर्थेशब्द ज्ञानं करोति. अत्यन्त असद् अर्थको भी शब्दसु ज्ञान हो सके हे. तो ब्रह्म कोई या तरीकेको अत्यन्त असद् अर्थ तो नहीं हे? आदमीकु निर्णय कैसे होय? क्योंके जब अपन वाको वेरीफिकेशन नहीं कर पा रहे हें; जब अपन वाको कोई इनफरेन्स् कर नहीं पा रहे हें; अपन छेल्ली शरण ले हें श्रुतिकी. श्रुतिकी शरण क्या? इन्ट्यूशन केह दो वाकु. इन्टिट्यूटिवली अपनकु वो समझमें आ रह्यो हे.

बात सत्य हे. बोहोत सारी बाते अपन अपने आत्मप्रत्ययसु समझ सकें इन्टिट्यूटिवली अपनकु समझमें आवें. क्योंके पेहली बार जा बखत ऐप्पल गिर्‍यो तो पेहले तो इन्ट्युशन ही भयो होयगो न्युटनको फिर वाने इनफरेन्स्के रूपमें वाकु ट्रान्सफॉर्म कियो होयगो या सबलीमेट कियो होयगो के लॉ ऑफ ग्रेवीटेशन काम कर रह्यो हे, वेट काम नहीं कर रह्‍यो हे. या तरीकेके कार्य–कारणके सहजात्यसु यदि कोई अपन अनुमान करें.

नैयायिकमत :

जैसे प्रसिद्ध नैयायिकनने कियो के घड़ाको कुम्भार बना रह्यो हे तो जगतको बनानेवालो भी कोई होनो चईये. जब तकलीफ सामने आई के बरसातके बाद घास जो उग रही हे वो तो कोई माली नहीं उगा रह्यो हे.

नैयायिक तो बड़े चतुर होवें ना, उनने कही के एक काम करो.

मण्डूकतोलन न्याय. मेंढकको तोलनो. तो जो बाट होवे ना वामें मेंढक उछलके जाके बैठ जाये. उनने कही के ऐसे ऐसे जो भी इन्स्टेन्स् हें उनकु पक्षमें रख दो. वाकु पक्षमें रख दियो. क्षित्यंकुरादिकं कर्तुजन्यं कार्यत्वात् घटवत्. जहां अपनेकु कोई कर्ता नहीं दीख रह्यो हे वो जितनेभी इन्स्टेन्स् हें वाकु पक्षमें रख दो मण्डूकके तोलकी तरेह के वा बाजू वो तोलनेमें प्रोब्लम क्रियेट नहीं करें. फिर कल्पना करो घटवत् कुम्भारने जैसे घड़ा बनायो ऐसे बनायो.

जैन – बौद्ध मत :

जैननने, बौद्धनने याकी बोहोत मजाक उड़ाई या अनुमानकी. इन्सिडेन्ट्ली एक बात बताऊं के या ईश्वरानुमान्की, जैन बौद्धनने ही मजाक उड़ाई हे ऐसो ही नहीं पर महाप्रभुजीने और अपने वेदान्तने भी खूब उड़ाई हे मजाक.

शांकरमत :

ईवन शंकराचार्यजीने भी मजाक उड़ाई हे ‘‘ **के यूयं बलिवर्दाः** ’’ अरे ऐसे कैसे तुम बैल हो. तार्किको तुम अनुमान कर रहे हो. क्यों अनुमान कर रहे हो? क्योंके शंकराचार्यजीने वहां बोहोत मजेदार तर्क दियो हे तुमकु ईश्वर हे ये तो वेदसु पता चल्यो. पाटच्चरलुण्ठिते वैष्मनि यात्रिक जागरणवृत्तान्तम् अनुसरति. जो कन्सेप्ट हे तुमकु डिराइव भयो हे स्क्रिप्चर्स सु वाको लौजिकल जस्टिफिकेशन तुम खोज रहे हो. ये गलत औडर हो रह्यो हे. ऐसे शंकराचार्यजी तर्क देवें हें. जरासी गाली देवें हें के तुम सब बैल हो. ये ‘‘**यूयं तार्किकाः बलीवर्दाः अपुच्छश्रृंगा**’’ सींग पूछ बिनाके तार्किको. कैसे अनुमान कर रहे हो.

वाल्लभमत :

अपने यहां भी खण्डन कियो हे. तो अपन समझ सकें हें के

अनुमानसु निश्चय होनो तो मुश्किल हे. जा टर्मको मीनिंग प्रत्यक्षसु वेरीफाईबल नहीं हे, जो लौजिकली जस्टिफाईबल नहीं हे, इन्ट्यिुशनको अपन सहारा लें तो श्रुति प्रत्यक्षगोचर हे. इन्ट्यिुशन जाकु हो रह्यो हे वाकु हो रह्यो हे. जब दूसरेको कन्वे करनो हे, जैसे परार्थानुमान, ऐसे इन्ट्यिुशनको जा बखत तुम वर्बलाइज् कर रहे हो, वा बखत सुननेवालेकु कैसे पता चलेगो के तुमको इन्ट्यिुशन भयो के नहीं भयो?

फिर तो शब्दकी ही बात आ गई ना? अब यदि तुम कोई शब्द घढ़ रहे हो, कोई टर्म घढ़ रहे हो, कोई टर्म यदि तुमने घड़ी, तो घढ़ते ही ये प्रोब्लम आ जायगी के कन्स्ट्रक्टेड मीनिंग हे के नहीं? अब यदि वो मीनिंग ही कन्स्ट्रक्टेड हे मेन्टली कन्स्ट्रक्शन हे, डिस्क्रिप्टिव टर्म हे, वेरीफाईबल टर्म नहीं हे, तो ‘‘**श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित् आश्चर्यो वक्ता कुशलोऽनुशिष्टः**’’.

आजकी तारीख में दुनियां भरके धर्मके झगड़ा, ध्यानसु समझो, मोजेस्को इन्ट्यिुशन हतो. वो केंह हें के साक्षात् प्रत्यक्ष हतो. बोल्यो तो वो सुनाई दियो. क्राईस्टको प्रत्यक्ष हतो भगवानको? वाकु यहूदीलोग डिनाई करें. क्राईस्ट केह रह्यो हे के मैं भगवानको पुत्र हूं. मुसलमान डिनाई करें. **लम यलिद व लम यूलद व लम यकुल्लह कुम वनहद**. कोई बेटा हे ही नहीं. तुम कैसे बेटा होनेको दावा कर रहे हो? जिनकु इन्ट्यिुशन हो रह्यो हे, सुननेवालेकु वो बात कन्वे नहीं हो रही हे. अपन केह रहे हें वेदसु हे. पर पूरी वेस्टर्न इण्डोलौजी अपने वेदकु शुरुआतमें गडरियानके गीत मानती थी. अभी भी कुछ कुछ मानती रेह हे. नये नये रिसर्च होते रेंह हें. निश्चय कैसे होवे के या नामको कोई तत्त्व वस्तुतः हे के नहीं हे?

ये एक जेन्युइन डिफीकल्टी हे **श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित्**. ब्रह्मके नामपे अपन क्या करें? एकाद मूर्ति घड़ें हें. रामकी, कृष्णकी,

शिवकी, देवीकी, दुर्गाकी, गणपतिकी, वाकु पूजें. वहां वेरीफिकेशन पॉसिबल हे. पाछे वेरीफिकेशन पॉसिबल हे. बच्चाकु दस बखत नहीं झुकतो होय तो माथा झुकाके नमस्कार भी करवा सकें हें. पर जैसे ही बच्चा बड़ो होवे हे तो वाकु शंका तो हो ही जाये के नहीं हो जाये के ये ब्रह्म हे के मूर्ति हे ब्रह्मकी? जब ये शंका हो रही हे तो फिर ब्रह्म समझमें नहीं आ रह्यो हे पर ब्रह्मके नामकी कोई मूर्तियें समझमें आ रही हें. ब्रह्मतो समझमें नहीं आ रह्यो हे. ये एक वास्तविक डिफिकल्टी हे श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित्.

ब्रह्मवाद :

सो अपनेकु ब्रह्मचर्चा करनी हे. ये जो वचन हें ''**श्रवणायापि बहुभिर्यो न लभ्यः श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित्**''. या बारेमें एक बोहोत ही मौलिक प्रश्न ये उठ्यो हे के क्या ब्रह्मजिज्ञासाकी विधिको ये अर्थवाद हे क्या स्वार्थमें याको प्रामाण्य हे? क्योंके ''**यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति. यत्प्रयन्ति अभिसंविशन्ति तद् विजिज्ञासस्व् तद् ब्रह्म**''. जहांसु ये सब भूत पैदा हो रहे हें, जहां ये स्थित हें, जहां ये लय होनेवाले हें, वाकी तुम जिज्ञासा करो वो ब्रह्म हे. ठीक हे. प्राईमाफॅसी अपनेकु ऐसो लगे के उपनिषद् कोई परार्थानुमान कर रह्यो हे. परार्थानुमान कर रह्यो हे. वो ही '**क्षित्यंकुरादिकं कर्तृजन्यम्**' वो बोहोत नैरो फ्रेममें आतो ये थोड़ो वाईडर फ्रेममें भयो अनुमान. पर हे कोई जातको परार्थानुमान. पर जितने वेदान्ती, आद्य वेदान्ती अपने बादरायण महर्षि. बादरायणसु लें वहांसु लेके नीचे महाप्रभुजी तकके सब वेदान्ती या बातपे एकदम युनेनिमस्ली एग्री हो रहे हें के ये अनुमान नहीं हे. जन्माद्यस्य यत: के बाद बादरायण क्या केह रहे हें शास्त्रयोनित्वात्. अनुमान नहीं हे.

शंकराचार्यजी बोहोत सुंदर केंह हें ''**किं पुन इह लिलक्षयिषितं**

वेदान्तवाक्यानि ही सूत्रैः उदाहृत्य विचार्यन्ते वेदान्तवाक्य–कुसुमग्रन्थनर्थत्वात् सूत्राणाम्''. ये सूत्र जो हें वो तो एक डोरा हे जामें वेदान्तके वाक्यके फूल पिरोके एक माला बनाई जा रही हे. ये अनुमानके लिये प्रवृत्त नहीं भये हें. अनुमान तो हे नहीं. पर यहां विधि विधान कियो हे. विधान कियो हे कौनसे जातको विधान?

ध्यानसु समझो जैसे बच्चाको अपन माथा पकड़ के अपने आराध्य देवके आगे झुका दें. दस पांच पन्द्रह बार झुका दियो जाय तो बच्चाको समझमें आ जाये के यहां माथा झुकानो. वो एस् पर हेबिट् माथा झुकाने लग जाये, ऐसे शास्त्र अपनेकु जोर जबरीसु केहतो होय ''**विजिज्ञासस्व तद् विजिज्ञासस्व तद् ब्रह्म**'' तो अपनेकु लगे अच्छा कर्तव्य हे अपनो विजिज्ञासा करनी. वा जिज्ञासा रूपी कर्तव्यको ये अर्थवाद हे. मने प्ररोचनार्थ. यों केंह ना के लड्डू खाले. मजा आयेगी. मैया कब बाढ़ेगी ये चोटी. दूध पीवत मोहे इतेक बेर भई अजहू है ये छोटी. सूरदासजी केंह हें ना के दूध पीयेगो तो तेरे बाल बड़े हो जायेंगे. बेहकानेकेलिये जैसे कोई अर्थवाद बता दें.

ऐसे बेहकानेकेलिये बतायो गयो अर्थवाद हे के याको स्वार्थमें प्रामाण्य हे? कायको? ''**श्रवणायापि बहुभिर्यो न लभ्यः श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित्**''. ये जिज्ञास्य ब्रह्मकी जिज्ञासाविधिको स्तावक अर्थवाद् हे के स्वार्थमें याको प्रामाण्य हे? ये भी एक बोहोत जिज्ञास्य विषय हे. अपनने या बखत या टौपिकक़ु नहीं लियो हे. अब कैसे कैसे विषय छूट रहे हें वो मैंने आपको बता दियों के या तरीकेके विषय छूट सकें हें. ब्रह्म इतनो छोटो विषय नहीं हे के अपन वाकु सारेको सारो कवर कर सकें. पर एक बात निश्चित हे, के जा बखत अपन कोई वेरीफिकेशन करनेको प्रोग्राम भी घड़ें श्रुतिमें भी ऐसे इम्पीरिकल वेरीफिकेशन, लोजिकिल जस्टिफिकेशन जैसे या वचनमें दिये हें वेदान्तीने कोई भी उनकु अनुमान नहीं माने हे ये केहके यालिये निरास कर दियो.

पर दूसरे जैसे नैयायिक हें, मीमांसक हें, और जो वेदान्ती नहीं हें, भारतके ऐसे दर्शन उनने यहां अनुमान भी मान्यो हे. श्रुतिरप्याह: ऐसे केहके.

अब सवाल वामें ये होवे हे के वेदान्तकी दृष्टिसु जा बखत अपन ये बात केह रहे हें के ब्रह्मकु अपन इम्पीरिकली वेरीफाई नहीं कर सकें हें, वा बखत एक प्रोब्लम और खड़ी होवे हे. यदि अपन कहीं भी वेरीफिकेशन करवे जायें जैसे "**न्यग्रोधफलम् आहर**". उपनिषदने इम्पीरिकली वेरीफाई करनेको उदाहरण दियो. याकु चाखके देख. एक लवण=नमक पानी भरके आ. वो सब जगहसु नमकीन हे. "**असन्नेव स भवति असद् ब्रह्मेति वेद चेद् अस्ति ब्रह्मेति चेद् वेद सन्तमेनंततो विदु:**". सोर्ट ऑफ देकार्तियन आई थिन्क् देयर फॉर आई एम. जो ब्रह्मको असद् केह रह्यो हे वो ब्रह्मको असद् नहीं केह रह्यो हे पर वो खुदकी सत्ताको डिनाई कर रह्यो हे. "**अस्ति ब्रह्मेति चेद वेद सन्तमेनंततो विदुरिति**". जो ब्रह्मकी सत्ताको स्वीकार करे वो ब्रह्मपे कोई उपकार नहीं कर रह्यो हे. वो खुदकी सत्ता स्वीकार रह्यो हे. बात क्या केहनो चाह रह्यो हे वेद? ध्यानसु समझो. सोर्ट ऑफ डेकार्तियन फ्रेम हे. तुम्हारी सत्ता वा सत्ताको पार्ट हे. जब तुम होलको डिनाई कर रहे हो तो पार्ट कैन नौट एगजिस्ट्. यदि तुम होलको स्वीकार कर रहे हो तो पार्टकी एगजिस्टेन्स् हे. पर फिलोसोफिकली ये प्रोब्लमेटिक इश्यु हे. इज् देयर होल? क्योंके जो बहुत्ववादी हें, जो एकत्ववादी नहीं हें.

जैन अपने यहां भये, चार्वाक अपने यहां भये, जो बहुत्ववादी हें जो एकत्ववादको मान ही नहीं रहे हें तो वो होल कायको मानेंगे? संघातवादको और प्रतीतिसमुत्पन्नवादको जाकु बुद्धने प्रोपोज् कियो वापे मूलदृष्टिमें प्रोब्लम क्या हे? जा एकत्वको तुम स्वीकार रहे हो वो हमकु स्वीकार्य नहीं हे. बाकी हर वस्तु हे. "**यत्सत् तत्क्षणिकम्**". क्षणिक सब कुछ हे. पर उन क्षणिक सत्‌को पाछो कुछ होल हे वो तुम्हारी

भ्रमणा हे. तो अपन समझ सकें हें के अपन लोजिकली जस्टिफाई करने जायें तो भी ब्रह्मके कन्सेप्टमें बोहोत प्रोब्लम हे.

मैं ये बात आपकु निराश करनेके लिये नहीं केह रह्यो हूं. मैंने पेहलेसु ही आपको बता दी जाके लिये बारीको उदाहरण दियो. **‘‘सूर व्हेके काहे घिघियात हे, कछु भगवद्‌लीला गा’’**. लीलागानके लिये बता रह्यो हूं. सबके चेहरा मोकु उदास होते दीख रहे हें. रेस्ट् एश्योर्ड ब्रह्मसंगोष्ठीमें निराश करनेकेलिये ये प्रवचन नहीं हे. पर ब्रह्मसंगोष्ठीके लीलात्मक गान करनेकेलिये ये मेरो प्रवचन हे. या बातकु मत भूलियो. पर वाकी लीलात्मकतामें कोई तरहकी अनप्रेडिक्टिबिलिटी हे. और जो अनप्रेडिक्टिबिलिटी हे वापे आपको ध्यान नहीं गयो तो हमेशा अपनो जो माइन्डसेट कुछ न कुछ प्रोपोजीशनल प्रेडिक्शनके अर्थ करतो रेह. वाके कारण फिर अपनो माइन्ड करप्ट हो जातो होवे हे. वा तत्त्वकु उपनिषद् जा तरहसु समझानो चाह रह्यो हे, वा तरेहसु समझनेको प्रयास नहीं करके अपने अपने कोई पैरामीटरपे अपन समज ले.

जैसे मोकु बराबर अच्छी तरहसु याद हे के एक बखत कोई प्रोफेसरने ही मोसु कही हती के महाराज तुम्हारो कृष्ण जो हे वो क्या हे? मैनें कही के आपको क्या लगे हे? वो आप बता दो. वाने कही के कृष्ण कोई मुगलकालमें जा तरहसु ऐयाश मुगल शहंशाह हते वा तरीके की तुमने एक भगवानकी कल्पना करली हे. तो हर बखत अपनेकु अपने पैरामीटरसु नापनेकी हरचीजकु इच्छा होवे हे. अपन भी केह सकें हें के वहां अत्याचारी राजा हते या लिये उनने अत्याचारी ईश्वरकी कल्पना करी. कहीं प्रेमी भक्त हते तो उनने भगवानकी प्रीतमके रूपमें लव इस गॉड की कल्पना करली. तो जा बखत अपन लव इस गॉड केह रहे हें वो लव कौनसो? ये बौलीवुडको लव? वो लव नहीं. कौनसो लव? वो लव अपनेको पता नहीं है. क्योंके अपन जो लव जान रहे हें वो बौलीवुडको लव जान रहे हें के एक हीरोईनके पीछे एक हीरो दौड़ रह्यो

है. वो लव स्टोरी हे. इज् दैट लव गॉड? आदमी जब भी सोचेगो तो वाके पास उपलब्ध फ्रेम हे. वाही माईन्डसेटमें सोचेगो ना?

जैसे अभी भी रीसेन्टली नासा (NASA) ने एक ग्रह खोज्यो. ग्रह खोजके इश्यु हाईप कियो के अब एक ऐसो ग्रह मिल गयो हे जहां जीवनकी संभावना हे अपनी पृथ्वीकी तरेह. मैंने तुरत वापे एक कमैन्ट सबनकु व्हाट्स्अपमें दियो. याको मतलब ये हे के अपन जीवनकी संभावना एक ही मान रहे हें जो पृथ्वीकी हे. अपन आकाशमें इतने बड़े टेलिस्कोप लेके और वो स्पेसक्राफ्ट जो ऊपर घूम रह्यो हे, हबल टेलिस्कोप (Hubble Space Telescope), वो भी खोज क्या रहे हें, पृथ्वी जैसो वातावरण कहां हे, वहां प्राणकी सम्भावना हे. वाको मतलब के प्राणको अपनने एक ही फॉरमूला सोच्यो के जहां पृथ्वीको वातावरण हे हाईड्रोजन और कार्बन और ओक्सीजनको, वो ही सम्भावना हे.

पर कार्लसेगान (Carl Sagan) केह रह्यो हे के ऐसे दस फॉरमूला हो सके हें. अमोनिया और माईथिनको जासु जीवनकी सम्भावना हो सके के एक चीजको छोड़े और एक चीजको ले. अपनने क्यों ऐसे सीमित मान्यो? पर अपन जब खोज रहे हें इतने बड़े साइन्टिफिक उपकरणनके साथ, वामें खोज क्या रहे हें? कूपमण्डूक न्यायेन - जो अपनकु अवेलेवल हे वा पैरामीटरपे अपन खोज रहे हें वा पैरामीटरपे खोजनेकेलिये अपनकु तैयारी ही नहीं हे के दूसरी भी कोई सम्भावनायें हो सकें हें.

कार्लसेगान खुद केह रह्यो हे के जुपिटर भले गैसियस् हे तो गैसियस् जो होयगो भले मैटर नहीं हे जुपिटरकी, गुरुकी, तो वहां कुछ वा तरीकेके प्राणी हो सके हें के जो प्राणी यहां पृथ्वीपे आके - जिनने भी अवतार फिल्म देखी होयगी उनने पण्डोराको देख्यो होयगो के पण्डोराको आदमी पृथ्वीपे मर जाये और पृथ्वीको आदमी पण्डोरापे तीन

मिनटसु ज्यादा जीवे नहीं. तो कोई जीवनकी सम्भावना एक ही हे क्या? **‘‘यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति. यत्प्रयन्ति अभिसंविशन्ति तद् विजिज्ञासस्व् तद् ब्रह्म’’**.

अपन अपने हर बखत कैसे सोचें? हर बखत अपन ऐसे सोचें मुहम्मद पेंगंबर के साथ अल्लाह अरबीमें बोल्यो थो. वाको रोमन नहीं आती होयगी, संस्कृत नहीं आती होयगी. भगवान व्रजभाषामें बोले तो अपन सोचें के भगवानकु पर्शियन नहीं आती होयगी. क्यों? हमारे व्रजबानी ही वेद. हमारे दादाजीकी प्रोब्लम ये हती. मेरे पिताकी. वो ठाकुरजीको ब्रजभाषाके कीर्तन सुनाके एक पर्शियन गज़ल तो सुनाते ही. मोकु भी बचपनमें चिंता होती के पर्शियन सुनावें अपने ठाकुरजी तो व्रजके ठाकुर हें. उनकु पर्शियन गज़ल कायको सुनावें दरवाजापे खड़े होके. उनको समझ कैसे आती होयगी? दादाजीको नियम हतो. कीर्तन करनेके बाद एक गज़ल बालकृष्णलालको जरूर सुनाते. मोकु भी ये समस्या हती के कैसे समझते होंयगे ठाकुरजी के क्या गा रहे हें दीक्षितजी महाराज? क्योंके हर बखत अपनी समस्या ये ही हे के जो मेरी भाषा नहीं समझ रह्यो हे वो म्लेच्छ हे. जो मेरी भाषा नहीं समझ रह्यो हे वो बारबेरियन हे. सारे जर्मनीकु रोमन लोग बारबेरियन समझते हते. सारे असंस्कृतभाषीनकु अपनने म्लेच्छ समझ्यो. एक बात ध्यानसों समझो के ये बात सच हे के जहां तक अपनो इश्यु हे वहां तक ये बात सच हे. ब्रह्मके इश्युपे ये सारे पैरामीटर कैन्सल हो रहे हें.

वो कैन्सल हो रहे हें वाकेलिये अपनेकु मूलमें एक बात समझनी पड़ेगी के जा बखत अपन वेरीफिकेशन् करने जा रहे हें वा बखत श्रुति क्या केह रही हे **‘‘नेति नेति’’**. नही एतस्मात् तुम याकु ही ब्रह्म केह रहे हो तो श्रुति ना पाड़ेगी. ब्रह्म नास्ति. **‘‘न भूमिः न तोयं न तेजो न वायुः न खं न इन्द्रियं वा न तेषांसमूहः अनेकानिकत्वात् सुषुप्त्येकंसिद्धः’’**. सुषुप्तिमें कुछ सिद्ध नहीं हो रह्यो हे. सब कछु

असिद्ध हो रह्यो हे. माईन्ड इट्. सुषुप्तिमें कुछ भी सिद्ध नहीं हो रह्यो हे अज्ञानके सिवाय. शंकराचार्यजी केहनो क्या चाह रहे हें अज्ञानैकसिद्ध ज्ञान हे. **सत्यम् ज्ञानम् अनन्तं सुषुप्त्येकंसिद्धस् तदेको अवशिष्टः शिवोहं शिवोहम्.** तो या तरीकेकी क्योंके अपनकु हर बात ज्ञानसु समझमें आ रही हे तो अपन ये समझ रहे हें के अज्ञानसु कुछ समझमें नहीं आवे. उपनिषद् ऐसे नहीं केह हे.

उपनिषद् बोहोत सुन्दर बात केह हे – जब तुम अपने ज्ञानसे समझनो चाह रहे हो के ये ब्रह्म हे तो उपनिषद् नेति केह रह्यो हे. नही एतस्माद् इति. नेत्यन्यत् परम् अस्ति. ये ब्रह्म नहीं हे. अब अपनेकु ना पाड़ दी तो अपनेको लगे के अच्छा ये ब्रह्म नहीं हे. क्योंके श्रुतिने ना पाड़ दी ना! श्रुतिने ना पाड़ी याके लिये ब्रह्म नहीं हे. तो सीधोसो अपनेकु ऐसे लगे के ब्रह्म अवाच्य. ब्रह्म अमेय हे.

विवेक चूड़ामणिमें शंकराचार्यजी बोहोत अच्छी बात केह हें के **‘‘अस्तीति प्रत्ययो यस्तु यश्च नास्तीति प्रत्ययः बुद्धेरेव गुणौ एतौ न तु तत्त्वस्य वस्तुनः’’** हे ये सोचनो और नहीं हे ये सोचनो ये तत्त्वको या वस्तुको गुण नहीं हे पर ये तुम्हारी बुद्धिकी खुराफात हे. अब तो ब्रह्मभी सदसद् अनिर्वचनीय हो गयो.

अब निराश मत होओ. मैं ब्रह्मसंगोष्ठीमें निराश नहीं कर रह्यो हूं लेकिन बार बार ये केह रह्यो हूं के ये मैं वाको श्रुत्वात्व्येनं वेद न चैव कश्चित् – रहस्य है ये अर्थवाद नहीं हे. याको स्वार्थमें प्रामाण्य हे ये बतानो चाह रह्यो हूं. मेहरबानी करके याकु नोट करके रखो, निराश मत होओ. मैं ये बतानो चाह रह्यो हूं के याको स्वार्थमें प्रामाण्य कैसे है? आप लोगनके चेहरा देखके मोकु भी संशय हो जाये के कुछ गड़बड़ तो नहीं बोल रह्यो हूं मैं? मैं गड़बड़ नहीं बोल रह्यो हूं बात बोहोत पतेकी केह रह्यो हूं.

बौद्धमत :

दूसरी बात ये आवे के जा बखत नेति नेति केह रह्यो हे वा बखत अपनेकु अवाच्य और अमेय ब्रह्म लगे. भगवान बुद्धकु तत्त्व ही अवाच्य अमेय लग्यो. याकेलिये उनने निर्विकल्प **प्रत्यक्ष** प्रामाण्यवाद स्थापित कियो. निर्विकल्प **प्रत्यक्ष** प्रामाण्यवाद मने क्या? ये जो दीख रह्यो हे वो सच हे. याके बाद जा बखत तुम्हारी बुद्धि ये सोच रही हे के ये पेन हे, ये लिखनेको साधन हे, ये जो जो इदम्के साथ जुड़ते भये विकल्प हें वो तुम्हारी बुद्धिकी कल्पना हे. जा बखत तुम बोलने जा रहे हो वा बखत ज्ञान वा बातकु विषय करके नहीं बोलने जा रहे हो वा बखत तुम्हारो ज्ञान तुम्हारे मनमें वाकी जो कल्पनायें घुसी हें तुम्हारे संस्कारसु, तुम्हारी स्मृतिसु, तुम्हारे सुखदु:खके हेतुनसु वो सारी अविद्या काम कर रहे हे. वो तत्त्वको अनुभूति काम नहीं कर रही हे. याके लिये शब्दके बारेमें भगवान बुद्धने अपोहवादको बतायो.

अतदव्यावर्तनसु शब्द तत्त्व को निरूपण कर सके हे. शून्यके मतलब कई हें. पर वाको एक मतलब ये भी हे के **''अस्ति इति ब्रुवतो ब्रूमो नास्ति सर्वं विचारत: नास्ति इति ब्रुवतो ब्रूमो अस्ति सर्वम् अविचारित:. यथा यथा समारोपा जायन्ते तत्वयोगिन: तथा तथा समारोपा हन्यन्ते तत्त्ववादिना.''** तुम हे केह रहे हो तो मैं कहूंगो के नहीं हे. थोड़ो विचार करो तो तुमको लगेगो के नहीं हे. नहीं हे केह रहे हो तो मैं कहूंगो के विचार नहीं करो तो हे तो सही. ये होनो और नहीं होनो, ये सब अपनी बुद्धिकी फितूर हे. वस्तुको गुण नहीं हे.

याकु शंकराचार्यजीने भी कैरी फॉरवर्ड करके **''अस्तीति प्रत्ययो यस्तु यश्च नास्तीति प्रत्ययः बुद्धेरेव गुणौ एतो न तु तत्त्वस्य वस्तुनः''**. ये बात कही. ये सिद्धान्त आयो के ब्रह्म अवाच्य हे. शांकरमतने भी याई लिये **'सन्मात्रग्राहीप्रत्यक्षवाद'** की स्थापना करी

के जा बखत अपनकु आंखसु दीख रह्यो हे वा बखत कुछ हे इतनो ही दीख रह्यो हे. जो क्या हे ये दीख रह्यो हे वो बुद्धिकी कल्पना हे.

या लिये ब्रह्म क्या हे ये सारो सोचनो बुद्धिकी कल्पना हे. बस ब्रह्म हे ये मानके चलो. क्योंके क्या हे जो तुमको भ्रम हो रह्यो हे जहां तुमको हो रह्यो हे वो एकान्ततया ब्रह्म हे. ये उनको सिद्धान्त अवाच्य अमेय ब्रह्मको सिद्धान्त हतो. जो बुद्धको अपोह और निर्विकल्पप्रत्यक्षप्रामाण्यवादसु अपने वेदान्तमें इनकॉर्पोरेट कियो गयो.

रामानुजमत :

याके विरुद्ध एक रिवोल्ट भयो. बोहोत मजेदार रिवोल्ट भयो. रामानुजाचार्यने कियो. के ब्रह्म वाच्य हे. ब्रह्म मेय हे. वेदान्तदेशिक बोहोत अच्छी बात केह हें. ‘‘**वाच्यत्वं वेद्यताञ्च स्वयमभिदधति ब्रह्मणो अनुश्रुवान्ता वाक्चित्तागोचरत्वश्रुतिरपि परिच्छित्त्यभावप्रयुक्ता**’’. ब्रह्म वाच्य हे. ब्रह्म वेद्य हे. अरे जो अवाच्य और अवेद्य केह रह्यो हे वाकेलिये वेदान्तदेशिक केह रहे हें वो तो परिछित्त्यभावप्रयुक्ता, ईयत्तया वाकु नहीं कह्यो जा सके हे. जो बात मैंने बारीके उदाहरणसु बताई. आकाश ज्ञेय हे के अज्ञेय हे? बारीमेंसु जितनो दीख रह्यो हे उतनो तो दीख ही रह्यो हे, वाको उतनो मान रहे हो और उतनो ही मान रहे हो तो भ्रमणा हे. ‘‘**वाच्यत्वं वेद्यताञ्च स्वयमभिदधति ब्रह्मणो अनुश्रुवान्ता, अनुश्रुवान्ता मने वेदान्ता**’’.

वेद खुद केह रह्यो हे के ब्रह्म वाच्य हे. वेद्य हे. पर वाक्चित्तागोचर भी कहे है. यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह यों श्रुति जो केह रही हे वो तो वामें परिच्छेद नहीं हे. याई लिये व्यासजीने भी ‘‘**प्रकृतैतावत्त्वं प्रतिषेधति ततो ब्रवीति च भूयः नहि एतस्माद् नेत्यन्यत् परम अस्ति**’’. नेतिको मतलब वेदने खुदने व्याख्यान कियो. ‘‘**न हि एतस्माद् इति**’’ एक इन्स्टेन्स्में यदि तुम ब्रह्म बताओगे तो ना

पाड़नो पड़ेगो के ये ब्रह्म नहीं हे. नेत्यन्यत् कुछ और भी हे. कुछ और भी हे. कुछ और भी हे. जितनो तुमने एक एक इन्स्टेन्स् बतायो ब्रह्मको उन सबकु नेगेट करनेके बाद कुछ और भी हे, कुछ और भी हे. यासु पहेली वेदान्तकी स्कूल ऐसी भई के निषेधशेषो जायताद शेषः वाकु निषेधसु ही बोल्यो जा सके हे. विधानसु बोल्यो नहीं जा सके हे.

दूसरी स्कूल ऐसी भई के नहीं नहीं. विधानसु बोल्यो जा सके हे पर कितनो हे ये नहीं बोल्यो जा सके हे. क्या हे, ये बोल्यो जा सके हे, क्या हे ये जान्यो जा सके हे, पर कितनो हे और कैसो हे, ये जान्यो और बोल्यो नहीं जा सके हे.

ये दो वेदान्तकी ब्रह्मके बारेमें बेसिक स्कूल हें. अपन यों समझ सके हें संगोष्ठीकी लाईटमें. क्योंके अपनेको बोलनो हे और समझनो हे या लिये, ये बात मैं बता रह्यो हूं.

वाल्लभमत :

महाप्रभुजीने एक बात और बोहोत मीठी कही हें के जहां तक अपने माईन्डसेटको सवाल हे, देखो ध्यानसों समझो, वेदके बिना **''अलौकिको हि वेदार्थोन युक्त्या प्रतिपद्यते. तस्माद् उपनिषद्एव प्रमाणं तन्तु औपनिषदं पुरुषं पृच्छामि''** या न्यायसु. ये सीमा अपनी हे के ब्रह्मकी हे? ब्रह्मकु यदि कोईके सामने रिवील होनो होय तो अपन ब्रह्मकु ये शोकॉज् नोटिस नहीं दे सकें बिना उपनिषद्के तुम कैसे रिवील हो गये महाराज? गेट लोस्ट्, गैट आउट. उपनिषद् तो बोला ही नहीं. बात समझमें आई?

''नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन'' उपनिषद्के प्रवचनसु आत्मा समझमें नहीं आयेगी. न मेधया – अपनी इन्टिट्यूटिव ज्ञानसु भी समझमें नहीं आयेगी. बोहोत कुछ अपन ब्रह्मसंगोष्ठीमें सुन लेंगे तो भी समझमें नहीं आयेगी; तो समझमें कैसे

आयेगो - ''**यमेवैष वृणुते तेन लभ्यः**''. वो जाके सामने अपने आपको रिवील करनो चाहे तो वो याके बिना भी रिवील हो सके हे. ''**तस्यैष आत्मा विवृणुते तनुं स्वाम्**''. वाके सामने वो अपने आपकु रिवील करे हे. रिवील कर सके हे ''**तन्तु औपनिषदं पुरुषं पृच्छामि**''- ये अपने साईडको व्यु हे. आकाशको देखनो हे यहां हॉलमें बैठे भये तो बारीमेंसु झांकनो पड़ेगो. ये आकाशको लिमिटेशन हे के अपनो लिमिटेशन हे? आकाशको देखनो हे या हॉलमें बैठे भये तो बारीमें झांके बिना अपनेकु आकाश दिखाई नहीं देगो. ये अपनो लिमिटेशन हे. ऐसे उपनिषद्‌सु ही वाकु जान्यो जा सके हे, ये अपनो लिमिटेशन हे, ब्रह्मको लिमिटेशन नहीं हे.

ब्रह्ममें वा तरीकेकी अनलिमिटेडनेस हे के ''**यमेवैष वृणुते तेन लभ्यः**''. या लिये एक बात मैं आपसु शेयर करनो चाहूं हूं जो के आज तो समय नहीं रह्यो, पर ग्रेजुअली दो तीन दिनमें या टॉपिकको शेयर करेंगे और वो बात ये हे -

ब्रह्मके दो स्वरूप आ रहे हें. अपने सूत्रकारके हिसाबसु ''**प्रकृतैतावत्त्वं प्रतिषेधति ततो ब्रवीति च भूयः**'' - कोई भी एक पर्टिकुलर इन्स्टेन्स्में ब्रह्मकु देखने जानेपे ब्रह्मको बोध अपोहनसु होयगो नेति नेति के अपोहनसु और अमेय हो जायेगो. जो महाप्रभुजीने पोलिसी बताई हे. या रामानुजाचार्यजीने पोलिसी बताई हे के अवाच्यत्व परिच्छिन्नतया वाच्यं होता है. तो अभिधेय भी हे और मेय भी हे ब्रह्म. अब ये दोनों कौन्ट्रोडिक्टरी स्टेटमेन्ट् हें. रामानुजाचार्यजी शंकराचार्यजीकु डिनाई करेंगे और शंकराचार्यजी रामानुजाचार्यजीको डिनाई करेंगे. महाप्रभुजी क्या कहेंगे विरुद्धधर्माश्रयके कारण दोनों सम्भव हें. अमेय भी हे और मेय भी हे वाच्य भी हे और अपोह्य भी हे. दोनों तरेहको ब्रह्म हे. **विरुद्धधर्माश्रयत्वात्.**

विरुद्धधर्माश्रयत्वात् क्यों हे, विरुद्धधर्म वामें क्यों हे? क्योंके ये धर्मनकी विरुद्धता अपनो माइन्डसेट सोचनेको तरीका हे, वाकी लिमिटेशन हे, के ये चीजें कौन्ट्राडिक्टरी हें. एक हे तो तीन नहीं हे, तीन हें तो एक नहीं रह्यो. और उपनिषद् क्या केह रह्यो हे **''तदेतत् त्रयं सद् एकमयम् आत्मा. अयमात्मा एकःसन् एतत् त्रयम्''**. तीन बराबर एक और एक बराबर तीन. अब ये मेथेमेटिकली जस्ट् ब्लन्डर हे. ग्रेटेस्ट् ब्लन्डर. गडरियाको गीत हो सके हे. मैक्स्मुलर कहे हे के वेद हे जैसे. तो उन गडरियानने ब्लन्डर कियो होयगो. आर्षदृष्टि हो सके हे अपने हिसाबसु. फिर उनको ये तथ्य वा बखत पता चल्यो के एक बराबर तीन होवे हे. कोई इक्वेशन उनके पास ऐसो हे आईन्स्टीनके जैसो के ईएमसीको इक्वेशन उनको समझमें आ रह्यो हे के तीन बराबर एक हे और एक बराबर तीन हे.

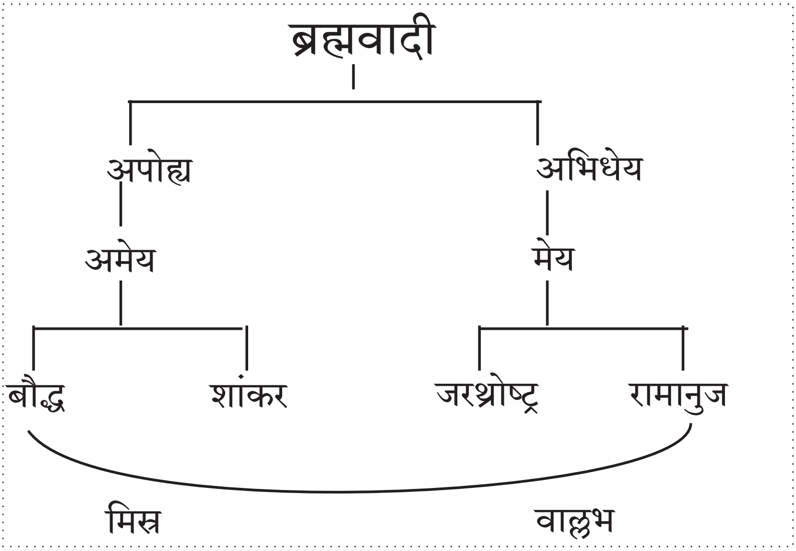

वाकेलिये औपनिषद् ब्रह्म हो सके अनौपनिषद् ब्रह्म भी हो सके है. मैं ये मानूं हूं के बुद्धधर्म अनौपनिषद् मत होने के बाबजूद भी

ब्रह्मवादी दर्शन हे. क्योंके जैसे उनने अपोहविधिसु ब्रह्मको वर्णन कियो हे. अपोहविधिसु जो शून्यको वर्णन कियो हे, वा शून्यपे ध्यान दो. क्या बात आ रही हे? ‘‘**अपर:प्रत्ययं शान्तं प्रपञ्चै:अप्रपञ्चितम् अविकल्पम् अनानार्थम् एतत् तत्त्वस्य लक्षणम्. अपर:प्रत्ययम् स्वप्रकाश**’’ केह रहे हें. शान्तम् ब्रह्मको अपने यहां उपनिषदने भी कह्यो हे. प्रपञ्चैरप्रपञ्चितम् – महाप्रभुजीभी ये बात केह रहे हें. ‘‘**ब्रह्मवादे निरुक्तिस्तु न वक्तव्यैव कुत्रचित् वस्तुतो ब्रह्म सर्वं हि व्यवहारस्तु लोकत:**’’. ब्रह्मवादमें तुम डिफाइन करनेकी कोशिश ही मत करो कोई चीज. क्योंके सब्जैक्ट और प्रेडिकेट् दोनों ब्रह्म हें. जा बखत सब्जैक्ट भी ब्रह्म हे और प्रेडिकेट भी ब्रह्म हे तो, ब्रह्म ब्रह्म हे, वाकु केहनेसु तुमको क्या इन्फॉरमेशन प्राप्त भई? यदि सब्जैक्टसु कन्वे हो रही हे तो प्रेडिकेटकी जरूरत नहीं हे और यदि प्रेडिकेट एडीशनल आ रह्यो हे तो रिडन्टन आ रह्यो हे. ब्रह्म ब्रह्म हे. आयो ख्यालमें?

वालिये केह रहे हें, महाप्रभुजी भी बात केह रहे हें **अपर:प्रत्ययं शान्तं प्रपञ्चैरप्रपञ्चितम् अविकल्पम्** – विकल्पभी वामें नहीं हे. भागवत खुद केह हे के विकल्प बुद्धि जो हे वो मिथ्या हे. भागवत तो अपने यहां परमप्रमाण हे. विकल्प सारे मिथ्या हें. ‘‘**अनानार्थम् – एकमेवाअद्वितीय ब्रह्म. नेह नानास्ति किञ्चिन्**’’. तो बौद्धमत अपनी वेदविरोधी होनेकी पूरी सामर्थ्यके बाद अपोह्यब्रह्मवाद हे. अभिधेयब्रह्मवाद नहीं हे. या बातको मैं आपको बोहोत इलस्ट्रेशनसु समझानो चाहूंगो के कैसे कैसे बुद्धागम अपन देखें दिग्धनिकाय देखें मज्झिमनिकाय देखें – वहां कैसे कैसे ब्रह्मको वर्णन आयो हे, अपोहनकी विधिसु तो अपनेको आश्चर्य होवे के यमैवेष वृणुते तेन लभ्य:. उनकुभी ब्रह्मकी अनुभूति तो भई हे. अपन ना नहीं पाड़ सकें के ब्रह्मकी अनुभूति उनकु नहीं हे. अपोह्यब्रह्मवादकी अनुभूति उनको भई हे. अभिधेयब्रह्मवादको वो इन्कार कर रहे हें.

शांकरमत :

वाकी दूसरी ब्रांच अपने यहां शांकर भी हें. वो मैंने आपको बतायो के निर्विकल्पप्रत्यक्ष प्रामाण्यवाद और सन्मात्रप्रत्यक्ष प्रामाण्यवाद और निर्विशय ब्रह्मवाद. जैसे उनके यहां अपोहन हे ऐसे इनके यहां भी अवाच्य ब्रह्मकु मान्यो गयो हे. तो उनको ब्रह्मभी वा तरीकेको हे जा तरीकेको बौद्धको शून्य हे.

दुसरी बाजु ज़रथुष्ट्र और रामानुज हें जो या बातको इन्कार कर रहे हें के नहीं नहीं नहीं अभिधेय हे, मेय हे. अभिधेय भी हे ब्रह्म और मेय भी हे ब्रह्म. ज़रथुष्ट्र भी ऐसे ही केह रहे हें. मैं खास आपको दिखानो चाहू ब्रह्मवादके अन्तर्गतके ज़रथुष्ट्र कैसे ब्रह्मवादी हे?

ज़रथुष्ट्रमत :

अपने ब्रह्मकी कोई एक्टिविटी ऐसी नहीं हे के जो ज़रथुष्ट्रने ज़ेन्दावस्थामें कही गयी नहीं होय. अवेस्तामें या यज्न्में कही नहीं होय, वर्बेटम् मिले हे अपनेकु ऐसेके ऐसे. इनको अभिधेय ब्रह्म प्रकट भयो हे, मेय ब्रह्म प्रकट भयो हे. यहां विरुद्धधर्माश्रय होनेके कारण, ये विरुद्धधर्म फिलोसोफी ऑफ फिलोसोफी. द फिलोसोफी ऑफ फिलोसोफी महाप्रभुजीकी क्या हे? **‘‘सर्ववादानवसरं नानावादानुरोधि तद्’’** ब्रह्म कैसो हे? सर्ववादको अनवसर हे और नानावादनको अनुरोधी हे. हर वादके हिसाबसु वाको कुछ रूप हे. नानावादानुरोधी और सर्ववादसु अनवसर भी हे. या तरीकेको विरुद्धधर्माश्रय ब्रह्म सर्ववादानवसर भी हे और नानावादानुरोधी भी हे. वो सर्ववादानवसर और नानावादानुरोधी जो विरोधी विरुद्धधर्माश्रयी ब्रह्म हे वो मिस्रको एक ब्रह्मवाद हे. वो मैं आपके साथ शेयर करनो चाहू. आज तो समय नहीं हे. एक अपने महाप्रभुजीको – एक ब्रह्मवादको कितनो स्कोप हे?

आज अपन इन्ट्रोडक्शनको यहां रखेंगे. ये एक स्कीम हे जामें

अपन कुछ ब्रह्मसंगोष्ठी करेंगे. अपने महाप्रभुजीके हिसाबसु भी देखेंगे. यमैवेष वृणुते तेन लभ्य: – ब्रह्मने उन लोगनको कैसे वरण कियो और उनको कैसे इन्स्टिट्युशन भयो हे ब्रह्मको वो भी अपन देखेंगे. मिस्त्रवालेनको. उपनिषदके, ब्राह्मणके, आरण्यकके, मिस्त्रके पैसेज आप देखोगे ना, पिरामिडके ऊपर लिखे भये जो लेख हें, उनके कब्रगाहपे कफनपे लिखे भये जो लेख हें, वो उपनिषदके पैसेजके साथ एकदम पैरेलल जाते भये पैसेजेस् हैं. अपन देखें तो अपनेको आश्चर्य हो जाये के इतनो पैरेलेलिज्म् आ कैसे रह्यो हे. कौनसी बात अपनी हे जो उनने नहीं कही हे. उनकी कौनसी बात ऐसी हे जो अपनने नहीं कही हे. ये बात सच हे के अपने यहां उपनिषैद्कगम्य हे ब्रह्म. तन्तु औपनिषदं ब्रह्म पृच्छामि. ये समस्या अपनी हे, माइन्ड इट्, पर ब्रह्मकी नहीं हे. ‘‘**नायमात्मा प्रवचेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन यमेवैष वृणुते तेन लभ्य: तस्यैषात्मा विवृणुते तनुंस्वाम्**’’. तो वा आत्माने अपनो कैसे कैसे विवरण कियो हे वो अपन थोड़ो थोड़ो करके देखेंगे रोज. और अधिक चर्चा नहीं करके मैं यहां विराम लऊं हूं.

* * *

द्वितीय दिवसीय उपक्रम

ब्रह्मवादके उपक्रममें कल अपनने ब्रह्मवादके जो डिफरेन्ट् फॉरमेट्स् हें – अपोह्यब्रह्मको ब्रह्मवाद, अभिधेय ब्रह्मको ब्रह्मवाद. अपोह्यब्रह्म अमेयब्रह्म ब्रह्मवादमें, बौद्ध और शांकरको और अमेयब्रह्म – मेय मतलब जान्यो जा सके ऐसो, प्रमाणको जो विषय बन सकतो होय. वैसे पुष्टिमार्गकी बोहोत सारी वोकाबुलरी – जा वोकोबुलरीकु अपन करेन्सीकी तरेह वापरे हें, ये देखे बिना के कौनसे सन्‌की करेन्सी हे, वो चालू हे के बन्द हो गई? हाथमें आ गई करके वापरनो शुरु करें. वा तरीकेको एक शब्द हे. प्राय: अपन सब वा शब्दसु अवेयर होंगे "**लोकवेदातीत**". अब लोकातीतको मतलब प्रत्यक्षागम्य. वेदातीतको मतलब वेदागम्य. "**अथातो ब्रह्मजिज्ञासा शास्त्रयोनित्वात्**" वा ब्रह्मकु शास्त्रयोनि कह्यो हे. शास्त्रयोनिमें उपनिषद् जो हे वो ब्रह्मको प्रतिपादक हे, गीता परमात्माकी प्रतिपादक हे. भागवत जो हे वो भगवान कृष्णकी प्रतिपादक हे. "**ब्रह्मेति परमात्मेति भगवानिति शब्द्यते. त्रितये त्रितयं वाच्यं क्रमेणैव मयात्र हि**". पाछे लोकवेदातीत पुरुषोत्तमको एक अलग लफड़ा हे. जो करेन्सीकी तरेह अपन वापरते होवें और अपनेकु पता ही नहीं होवे के ये क्या हे? वो करेन्सी इश्यु कब भई वो अपनेकु समझनी चईये.

कोईतो स्वरूप वाको ऐसो हे के जो लोकातीत ही नहीं हे पर वेदातीत भी हे. वेदातीत हे वाको मतलब वेदातीत ही पुरुषोत्तम होवे ऐसो नहीं हे, वो मैंने कल रामानुजाचार्यजीकी बातसु बताई थी के "**वाच्यत्वं वेद्यताञ्च च स्वयमभिदधति ब्रह्मणो अनुश्रुवान्ता वाक्‌चित्तागोचरत्व श्रुतिरपि परिछित्त्याभावप्रयुक्ता**" – जो वेदान्तदेशिक केह रहे हें. वामें उनने एक बोहोत मजेदार बात कही हे. यदि तुम कहोगे के नहीं नहीं अवाच्य ही हे मने अपने यहांकी परिभाषामें वेदातीत ही हे तो हे के नहीं हे ये सिद्ध कहांसु करोगे? कोई भी बापा,

बापी, पूपा, पूपीनकु पूछो के लोकवेदातीत पुरुषोत्तम सिद्ध कैसे होयगो? कौनसी कथा करें के जासु लोकवेदातीत पुरुषोत्तम सिद्ध होयगो?

यदि भागवतकथा करी तो तो वो ‘‘**जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादितरतश्चार्थेष्वभिज्ञः स्वराट् तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये मुह्यन्ति यत्सूरयः. तेजोवारिमृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गोऽमृषा धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यं परं धीमहि**’’ तो वहां गायत्रीप्रतिपाद्य हो रह्यो हे. फिर तो वो वेदातीत कहां रह्यो?

भागवतप्रतिपाद्य कृष्ण वेदातीत हे या भागवत अप्रतिपाद्य कृष्ण वेदातीत होय. ये वेदातीत हे क्या? सिद्ध कहांसु करोगे? वोई प्रश्न रामानुजमतमें ये वेदान्तदेशिक भी उठा रहे हें के ‘‘**नो चेत् पूर्वापरोऽपि स्ववचन कलहात् सर्ववेदान्तबाधः तत्सिद्धिः हेतुतश्चेत प्रसजति विहति धर्मिसाध्यादिशब्दैः**’’ यदि तुम केह रहे हो के कोई हेतुसु तुम सिद्ध करोगे तो जो भी हेतुसु सिद्ध करवे जाओगे तब समस्या तुमकु क्या नड़ेगी?

कुछ पक्ष बनानो पड़ेगो कुछ साध्य बनानो पड़ेगो. जैसे ही तुमने पक्ष बनायो तो वो वाको कोई वाचक शब्द बन जायेगो. जैसे ही तुमने साध्य बनायो तो साध्यवाचक कोई पद होयगो. अब वो तुम्हारे लौकिक पदसु वाच्य हो रह्यो हे और तुम केह रहे हो के वेदपदसु वाच्य नहीं हे? किं केन् सम्बध्यते! शान्तचित्तसु विचारो, वेदान्तदेशिक केह रहे हें.

ऐसो बौम्बास्टिक स्टेटमेन्ट् तुम दे क्यों रहे हो के तुम जो अनुमान कर रहे हो; शांकरनकु यामें बोहोत ही जेन्युइन प्रोब्लम हती, उनने कही के ऑलराईट हम ऐसे करेंगे, न तो हम वाको लौकिक शब्दनसु वाको वाच्य मानेंगे, न वैदिक शब्दसु वाच्य मानेंगे, शब्दसु अवाच्य हे या अर्थमें वाच्य मानेंगे. वेदान्तदेशिक वाकी भी मजाक उड़ावें हें, ‘‘**अवाच्यं वाच्यम् इति वा वस्तुनि प्रतिपद्यते वाच्यमेव**

भवेद् वस्तु वाच्यावाच्यवचोन्वयात्?'' अवाच्य वचनसु वाच्य के अवाच्य? यदि अवाच्य वचनसु अवाच्य हे तो अवाच्य हो गयो. अवाच्य वचनसु वाच्य हे तो वाच्य तो हो ही गयो. ये केह क्या रहे हें?

ये खाली शांकरनकी समस्या नहीं हे, ये समस्या वाल्लभनकु हे. क्योंके करेन्सीकी तरेह वापर रहे हें ये लोकवेदातीत पुरुषोत्तम. लोकवेदप्रथित पुरुषोत्तम. ये लोकवेदातीत पुरुषोत्तम क्या है? ये लोकवेदप्रथित पुरुषोत्तम क्या हे? भई एक दिन शान्तिसु बैठके विचार कर लो ना! करेन्सीकी तरेह वापरें पर वापे विचार करवेकी फुरसत नहीं हे.

अमेय ब्रह्म - जो बौद्धनको सिद्धान्त हतो और शांकरनने लियो. शंकराचार्य खुद अपने आपकु वहां केह हें ''**निरस्तो ब्रह्मवादिना स्वमते दोषः**''. वो अपने आपकु ''**ब्रह्मवादी**'' केह रहे हें. अब ब्रह्मवादी हें और ब्रह्म अवाच्य हे. ब्रह्म वदति इति ब्रह्मवादी. और ब्रह्म जो हे वो ब्रह्म पदसु वाच्य नहीं हे. ऐसे लफड़ा अपने वेदान्तमें ही हें ऐसी बात नहीं है शांकर वेदान्तमें भी हें. हम ब्रह्मवादी हें पर ब्रह्म जो हे वो ब्रह्म पदसु वाच्य नहीं हे. जब ये प्रश्न उठायो गयो तब वामें एक दूसरो उनके तरफ सु ये समाधान आयो. ब्रह्ममें ब र ह म और छेल्लो न, इन सबनकु ड्रौप कर दो. ये ड्रौप करनेके बाद जो बच रह्यो हे कहां बच रह्यो हे वो ब्रह्म हे. वाकु वो लोग अखण्डार्थवाद केंह. अपनकु वाल्लभ वेदान्तकी दृष्टिसु ऐसो अखण्डार्थवाद सुनते ही सबकु मुस्कराहट आई. महाप्रभुजी भी खुद अखण्डाद्वैत केह रहे हें. अखण्डाद्वैतमें जो हे विधिविधान नहीं हो सके. सखण्डाद्वैतमें विधिविधान हो सके हे. या बातसु अपनेको समझमें आवे के ब्रह्मवादको फॉरमेट एक नहीं हे.

वो जो मैंने चार फॉरमेट बताये हें अमेय भी हे, मेय भी हे. उन दोंनोनके कैम्प अलग अलग बंट रहे हें. अमेय ब्रह्मके और मेय ब्रह्मके. अमेयवादी ब्रह्मके और मेयवादी ब्रह्मके कैम्प. अमेयब्रह्मवादीमें शांकर तो

खैर उत्तराधिकारी हें, पर बौद्ध जो हें वो पायोनियर हें. वो जो पायोनियर हें अमेयब्रह्मवादके; क्योंके अपनेकु सबसु ज्यादा बात जो खुचे हे, बौद्धनकु ब्रह्मवादी सुनते ही, वो सिद्धेश्वरजीकु भी कल खुची हती ना, अपन सबनकु खुचे क्योंके अपनने तोपें तान रखी हें ना बुद्धके सामने. वास्तवमें बुद्धने अपने सामने जो तोप तानी हे वो अपनी आर्मीमेंसु चुराई भई तोप हे. अपनी आर्मीमेंसु चुराई भई तोप अपने सामने तानी हे. वा तोपको पजेशन् अपने आपको वापिस ले लेनो चईये. फिर तो अपनेपे तनेगी ही नहीं. दावा करनो चईये के भई ये तोप हमारी हे. हमपे तुम क्या तान रहे हो? ये तो हमारी तोप हे. याकी टेक्नीकल नो हाउ हमकु पता हे. तुमकु शायद उतनी टेक्नीकल नो हाउ नहीं पता हे. तुमने तान तो दी हे हमारे सामने. कैसे तानी हे अमेय ब्रह्मवादकी तोप अपने सामने वाकी अपनी एक लीलात्मिका ब्युटी हे. वो मैं आपके साथ शेयर करनो चाह रह्यो हूं.

जैसे जब अपन अमेय अवाच्य स्वरूप केह रहे हें, वाके साथ साथ एक बात और केह रहे हें, ‘‘**स आत्मानम् द्वेधाऽपातयत्**’’. बोहोत बखत ब्रह्मके रसात्मकताकी ऐसी बंसी बजे वनघनमें. ‘‘**स आत्मानं द्वेधाऽपातयत् पतिश्चपत्नी चाभवताम्**’’. वाको लद्‌पद अपन शृंगाररसात्माके अर्थमें प्रयोग मान ले हें. नहीं लियो जा सके हे ऐसी बात नहीं हे, क्योंके वो तो शब्दतः कह्यो जा रह्यो हे. तो लियो ही जा सके हे. पर उतने ही अर्थमें वाको लेनो नहीं चईये क्योंके वाकु श्रुति खुद केहगी नेति नेति. वो जो अपन नेति देखें ना, नेति जा बखत श्रुति याको ना पाड़ेगी, ‘‘**न हि एतस्माद् इति नेत्यन्यत् अन्यत् परम् अस्ति**’’.

तो और क्या क्या वाके द्वेधापातन्‌के स्वरूप हो सकें हें. वो कल अपनने वाकी काफी चर्चा करी. ‘‘**सोऽकामयत्. बहु स्यां प्रजायेयेति. सतपोऽतप्यत. स तपस्तप्त्वा इदं् सर्वमसृजत यदिदं किंच. तत्सृष्ट्वा**

तदेवानुप्राविशत्. तदनुप्रविश्य सच्च त्यच्चाभवत्. निरुक्तं चानिरुक्तं च. निलयनं चानिलयनं च. विज्ञानं चाविज्ञानं च. सत्यं चानृतं च सत्यमभवत्. यदिदं किंच. तत्सत्यमित्याचक्षते. तदप्येष श्लोको भवति''. ये सब पतिपत्नीके जो एनोलौजी हे वाके डेमोन्स्ट्रेशनमें कही गई बातें हें. मिसइन्टरप्रेट मोकु मत करियो पत्नी सब अनिरुक्त हें पति सब निरुक्त हें. पत्नी सब निलयन हें और पति सब अनिलयन हें. ऐसी बात नहीं हे. पर वाकी ऐनोलौजीको समझानेकेलिये कहे गये ये सारे डिफरेन्ट् पैरामीटर्स् हें. और इनमें कहींमें भी ब्रह्मकु अपन जा बखत कन्फाईन करनो चाहेंगे तो वाकेलिये श्रुति ''**नेति नेति**'' केह रही हे. ब्रह्मकु कोईभी एकमें कन्फाईन मत करो. ''**नेत्यन्यत् परमस्ति**''.

वा नेत्यन्यत् परमस्तिकी अपन जब बात कर रहे वा बखत वाच्य भी हे, अवाच्य भी हे, क्योंके निरुक्तं चानिरुक्तं च हो रह्यो हे. बोहोत सारे आचार्य या झगड़ामें उलझ गये. अपने महाप्रभुजीकी एक ब्युटी देखो. महाप्रभुजी केह रहे हें या बातकु के ब्रह्मने जा बखत द्वेधापातन कियो तो वचन और वाच्यके अर्थमें भी एक द्वेधापातन भयो हे. क्योंके वागात्मा भी वो खुद भयो हे. क्योंके सारी सृष्टिको जो व्याकरण हे ''**सः भूरिति व्याहरत् भुवम्असृजत स भुवम् इति व्याहरत भुवम् असृजत् स सुवरिति व्याहरत् सुवमसृजत्**'' सारी सृष्टिको वागात्मक उच्चारण हे. मनुस्मृतिने तो याकु ऐम्फेटिकली कह्यो हे. प्रस्थानरत्नाकर भी यापे बोहोत भारपूर्वक केह रह्यो हे.

सारी सृष्टिको जो व्याकरण हे वो वागात्मक व्याकरण हे. जैसे नामरूपकर्मात्मना व्याकरण हे, ऐसे वाण्यात्मक व्याकरण हे. क्योंके ब्रह्मकु करनेकी जरूरत नहीं रेह हे, बोलनेकी जरूरत होवे हे. वाकु पुराने जमानामें ये बतायो गयो के ''**ऋषिणाम् पुनराद्यानाम् वाचम् अर्थो अनुधावति और अर्थम् वाग् अनुधावति. वाचम् अर्थो अनुधावति**''. उनकी वाणी निकले तो वा तरेहसु अर्थ पैदा हो जाये. वाणीसु अर्थ पैदा

भयो हे. अर्थसु वाणी पैदा नहीं भई हे. आजकी अपनी जो सेटअप हे वामें अर्थसु वाणी पैदा हो रही हे. अर्थसु वाणी पैदा होनेके एकदम ग्रौस उदाहरण मोकु देनो होय तो **'ओनोमोटोपोइया'(Onomatopoeia)**

अपन समझ सकें हें कुत्ता भाउ भाउ करतो होय तो बच्चा कुत्ताकु भाउ भाउ कहेगो. बकरी जो हे मैं मैं करती होय तो अपन बकरीकु मिमियाती भई केह हें. शेर गुर्रातो होय तो गुर्रानो वो ओनोमोटोपोइया हे. तो अर्थसु यहां वाणी पैदा हो रही हे. मोटरको घुर्र केह हें. मोटरसाईकलकु जैसे फटफटी केह हें फटफट आवाज करनेके कारण. कौआकु कॉव कॉव केह रहे हें. मैंढककु अपन दरदुर केह रहे हें. क्योंके वो ड्रांउ ड्रांउ करे हें. हिन्दीमें टर्रटर्र केह हें. तो ये सारे जो हें औनोमोटोपोइयाजो हें वो अर्थसु वाणी पैदा हो रही हे.

लिङ्गविस्टिक (Linguistic) के एन्गलसु ये बोहोत डिबेटेबल इश्यु रह्यो हे के सबसे पेहले ओनोमोटोपोइयाको वाणी पैदा भई के नही. क्योंके अभी भी बोहोत सारे जानवरनकु, पशुपक्षीनकु, औनोमोटोपोईयाकी बोहोत ज्यादा इन्क्लिेशन्स् स्ट्रोंग होवे हे. जा वस्तुसु, जा विषयसु, जा तरीकेकी ध्वनि पैदा हो रही हे, वो ध्वनिकु वाको वाचक माननो. मैं अक्सर मजाकमें एक बात केहतो रहूं के पोपटकु मूंगफली देनेके पेहले अपन **'पोपट'** बोलें. अपन समझें के अपन वाको **'पोपट'** बुला रहे हें. पर पोपटकी समझ ये हे के ये सब पोपट हें. पोपटकु जब मूंगफली चईती होय तो वो **'पोपट पोपट'** करे. मूंगफली कहां हे पोपट? क्योंके अपन मूंगफली देनेके पेहले **'पोपट'** वासु बुलावें. वो खुदकु पोपट नहीं समझे, अहंब्रह्मास्मिकी तरेह. वो अपनेको पोपट समझे के ये जो प्राणी हे, वो मूंगफली देनेके पेहले **'पोपट पोपट'** कर रह्यो हे, **'मिट्ठु मिट्ठु'** कर रह्यो हे तो जब मूंगफली चईती होय तो पोपट मिट्ठु करो तो मूंगफली आयेगी. वो अपनेकु पोपट मिट्ठु समझ रह्यो हे. औनोमोटोपोईया.

अभी यूट्यूबमें बोहोत अच्छी क्लिप् सबकु दिखाई थी, ‘‘**आई लव यू**’’. कुत्ता रोवे हे. वो आई लव यू कुत्ताको बोलनो विस्कुट खिलाके सिखा दियो. तो जब भी ‘‘**आई लव यू**’’ बोलो तो एक बखत जीभ निकालके दिखा दे. भई बिस्कुट तो लाओ ‘‘**आई लव यू**’’ केह रह्यो हूं तो. तो वाकेलिये आई लव यू को मतलब न तो आईको मतलब कुत्ता हे, न लव को मतलब स्नेह हे, न यूको मतलब तुम हे. वाको मतलब ये हे के बिस्कुट लाओ. वाकी अन्डरस्टेन्डिंग औनोमोटोपोईयाकी तरेह हे. क्योंके तुम बिस्कुट खवाओ वाके पहले आई लव यू आई लव यू करो तो कुत्ता बिचारो कब तक नहीं करेगो? तो वो प्रयास करके आई लव यू बोले हे. वाको मतलब ? मोको लग्यो के या समझके आई लव यू बोलतो होयगो? समझके बोले के बिना समझके बोले? फिर मैंने ध्यानसु वा क्लिपकु देख्यो तब पता चल्यो के जब आई लव यू बोले तो एक बखत जीभ फिरा दे. वाकु तो बिस्कुट चईये यदि वासु आई लव यू बुलवा रहे हो तो! याको कन्डिशनिंग रिफ्लेक्ट केहवे हें पावलोवकी.

सारो ओनोमोटोपोईयाको जो शब्द हे वचन हे वो प्राईमरी हे, मने सबह्युमन् स्पिशीसमें भी. वा तरेहुस लिङ्गविस्टिक डेवलप् भई हे. अमरीकामें तो ऐसी बर्डस् हें जो मोटर गुजर जाये तो ओनोमोटोपोईयासु वाको साउन्ड रिप्रोड्यूस करदे. ट्रेन गुजरे तो ट्रेनको साउन्ड रिप्रोड्यूस् करदे. कौआ बोले तो वो कौआको साउन्ड रिप्रोड्यूस् करदे. हमारो पोपट कुछ बिल्लीको साउन्ड् रिप्रोड्यूस् करतो थो म्याऊं म्याऊं करतो थो. मैंने कही के मूरख हे कहीं सचमुचमें म्याऊं आ गई तो खा जायेगी? लिङ्गविस्टिकमें ये बोहोत प्रोब्लमेटिक इश्यु रह्यो भयो हे. क्योंके फिलोसोफी ओनोमोटोपईयाको इतनो प्राधान्य नहीं दे हे.

अपने यहांभी रसशास्त्रने ओनोमोटोपोईयाको प्राधान्य दियो हे. जैसे महाप्रभुजीने तृतीयस्कन्धकी सुबोधिनीमें वराह भगवानने घर्रघर्र

कियो. वहां महाप्रभुजीने बोहोत फनी अर्थ बतायो हे. वराह भगवान घर्रघर्र क्यों बोले? क्योंके उनको मनुष्यकेलिये घर बनानो थो. वालिये ओनोमोटोपोईया बराबर भगवानने प्रकट कियो. अब ये मजाकको एक्स्प्लेनेशन हे के सीरियस हे ये तो पता नहीं के वा बखत महाप्रभुजीको क्या मूड हतो? घर्रघर्रमें महाप्रभुजी ऐसी मजाकिया बात कर रहे हें. अब घर बनानेके लिये पृथ्वी तो प्रकट करनी हे मनुष्यके लिये! कुछ शब्द संकेतसु जो ओनोमोटापोईयाके नहीं हें जैसे ब्रह्म शब्द कभी अपनेकु कोई साउन्ड ऐसो दुनियांमें सुनाई नहीं दे हे के जो **‘ब्रह्म ब्रह्म’** करतो होय. भ्रमतो भ्रमरामें सुनाई देतो. **‘ब्रह्म ब्रह्म’** साउन्ड होनो तो ओनोमोटापोईया नहीं हो सके हे. करके वेरीफिकेशन संभव नहीं हे. याकेलिये रसैल और लोजिस्टिक फिलोसोफीवाले क्या कहेंगे? ये मेन्टल कन्स्ट्रक्शन् हे, मीनिंग, क्योंके इम्पीरिकल वेरिफिकेशन होनो याको संभव नहीं हे.

वोही बात बुद्ध भगवान्ने बोहोत पेहले कही हती. जिन शब्दनकु तुम वापर रहे हो, उन शब्दनकी अर्थशक्ति तुम कहांसु ग्रहण कर रहे हो? कहां तुमने ये समझ्यो के या शब्दको ये अर्थ हे? जब तुम समझ नहीं पा रहे हो तो तुमने अपने मनमें कोई कल्पना खड़ी करी हे और वा कल्पनाको ही तुम बोल रहे हो. वाकु नहीं बोल रहे हो. एट दि सेम टाईम् तत्त्वको नहीं बोल रहे हो. तत्त्वको बोलने जाओगे तो वामें तत्त्वको चित्रण नहीं आ रह्यो हे, तुम्हारे माईन्डकी इमेजको चित्रण आ रह्यो हे और तुम्हारे माईन्डमें कोई इमेज रिटेन क्यों हो रही हे? वो तुम्हारे इन्टरेस्ट्के अनुसार. इन्टरेस्ट् क्यों पैदा भयो हे? तुम्हारे सुखदु:खके अनुसार. सुखदु:ख तुमको क्यों हे? तुम्हारे अज्ञानके अनुसार. याकेलिये सर्वमूल अज्ञान हे. अपन समझें के सर्वमूल ज्ञान हे शब्दको बोलनेमें पर बुद्ध भगवानको औपोजिट स्टेन्ड हे के सारी बात जो तुम केह रहे हो वाके मूलमें अज्ञानही बोल रहे हो ज्ञानकु बोल्यो नहीं जा सके. क्योंके भगवान बुद्धके वहां एक बोहोत अच्छी बात बताई गई हे के जा दिन

भगवानकु बोधि प्राप्त भई वा दिन भगवान कुछ बोले नहीं.

कुमारिल भट्टने वाकी मजाक उड़ाई. और सबने सुन्यो. कुमारिल भट्ट केह रहें हें के भगवानबुद्ध बोले नहीं और सबने सुन्यो ऐसो अशब्दज्ञान सबको पैदा भयो तो भूत बोल्यो, प्रेत बोल्यो, पिशाच बोल्यो? अब कौन बोल्यो वाको निर्णय हमको नहीं हो रह्यो हे याके लिये बौद्धमतको प्रामाण्य नहीं हे.

फिलोसोफीके झगड़ा कितने गम्भीर और कितने मजाकके लेवलपे भी चले जायें हें, ये अपन देख सकें हें. भूत, प्रेत, पिशाच बोल्यो वो बोधिवृक्षके नीचे, वो कौन बोल्यो वो निश्चय कैसे करनो? क्योंके बुद्ध भगवानतो बोले नहीं. "**अवचनेनैव प्रोवाच:**" अवचनसु उनने बोल्यो. शंकराचार्यजीने भी वो उदाहरण प्रस्तुत कियो हे. बाष्कलिने जाके तीन बखत पूछ्यो के महाराज ब्रह्मको ज्ञान दो, ब्रह्मको ज्ञान दो, ब्रह्मको ज्ञान दो? तीन बखत वो बोले नहीं और चौथी बखत उनकु गुस्सा आ गयो. के तीन बखत बोल्यो पर तू समझ्यो नहीं तो मैं क्या करूं? आप कहां बोले? तो बोले बोलने लायक हे नहीं. बोलेंगे तो कुछ लफड़ा होयगो. या तरीकेको अवाच्य ब्रह्म शांकरनने लियो हे. वो तो बुद्धसु लियो हे. हर सूरतमें अपन वो देख सकें हें.

बौद्धमत :

बुद्धने अपनो नहीं लियो हे पर बुद्धने उपनिषदसु ये बात ली हे. वो मैं एक आपकु चमत्कारिक ढंगसु बतानो चाह रह्यो हूं. बुद्ध कैसे केह रहे हें? मज्झिमनिकाय लानेकी बोहोत इच्छा हती पर धांधलमें मज्झिमनिकाय ला नहीं सक्यो. मैं खाली दिग्ध निकाय लायो हूं. ये एक धिग्ध निकायमें सूत्र हे, उनके यहां सूत्रको मतलब अपने सूत्र नहीं हें अल्पाक्षरम् नहीं हे. उनके यहां सूत्रको मतलब अनल्पाक्षरम्. वा तरीकेके उनके यहां सूत्र हें. उनके यहांके सूत्र अपने यहांके सूत्रनसु बिल्कुल

ओपोजिट् हें तो दिग्ध निकाय सूत्रमें एक ब्रह्मजालसूत्र हे. जा सूत्रको नाम ब्रह्मजाल हे. वा ब्रह्मजालसूत्रमें भगवान् बुद्धने सिग्निफिकेन्ट बात बताई हे. वा बखत कितने मत हते, बयासी मत हते फिलोसोफीके.

अपन अपनी क्षुद्रतामें षड्दर्शनकी गणना करें, पर बुद्ध भगवान वा बखत बयासी मत गिना रहे हें के प्रिवेलिङ मत बयासी हें. वो बयासी मतनको ब्रह्मजालसूत्रमें उनने मिथ्यादृष्टि कही हे. ये मिथ्यादृष्टिको जो संकलन कियो वाको ब्रह्मजालसूत्र क्यों केह रहे हें? ये एक महान चमत्कार हे. वो भी मैं आपको बताऊंगो के क्यों केह रहे हें? वामें अपनी उपनिषदनकी दृष्टिकु वो गिना रहे हें मिथ्यादृष्टि कैसे हे? वो मूलभाषा तो बोहोत ही मीठी हे. अतिशय मीठी हे पर वो तो अपनेकु समझमें नहीं आयेगी. ‘‘**होती खोसो भिख्खा समयो यन् कदा ---**’’. अपनेकु कुछ समझमें नहीं आयेगो. वाकेलिये वाको हिन्दी अनुवाद मैं लेके आयो हूं खासकरके. सुनने लायक हे. भिक्षुओं बोहोत काल बीतने पर - अपनी ब्रह्मसंगोष्ठीमें ये पेपर हे - एक समय ऐसा आता हे, के जब कभी कदाचित इस लोकका प्रलय हो जाता हे. अपने यहां तीन पेपर हें या विषयपे. हंसुभाईको हे, जयेन्द्रभाईको हे, असितको भी हे. ये तीन पेपर याको डील करनेकेलिये लिये हें.

वोई भगवान बुद्ध केह रहे हें. लोकके प्रलीन हो जाने पर, देखो ध्यानसु सुनियो, ‘‘**अभास्वरब्रह्मलोक तम तम:परस्यां देवतायाम् लीयते**’’ सुबालोपनिषद् याद करो. व्यक्त अव्यक्तमें लीन होवे हे, अव्यक्त जो हे वो तममें लीन होवे हे और तम ‘‘**तम: परस्यां देवतायाम् लीयते**’’ जाकु अपने यहां योगनिद्रा, योगसमाधि और गूढ़ तम:‘‘**नासदासीन नो सदासीत तमासीत तमसा: गूढ़मग्रे**’’ वो जो तम कह्यो हे वाको वो तम नहीं केहके अन्तर कितनो कर रहे हें अभास्वरब्रह्मलोक - मने जामें भास्वरता नहीं हे - कुछ भी दिखलाई

नहीं दे रह्यो हे. कुछ भी अनुभवमें नहीं आ रह्यो हे.

वाल्लभमत :

महाप्रभुजी वाकु कैसे केह रहे हें? **''ब्रह्मवादे निरूप्तिस्तु ना वक्तव्यैव कुत्रचित् वस्तुतो ब्रह्म सर्वं हि व्यवहारस्तु लोकतः''** वो अभास्वरब्रह्मलोकके निवासि देवताकी स्थिति बनी रेहती हे. देवता वहां बने रेहवें हें. अपने यहां भी ये बात कही गई हे. के वा बखत सारे देवतायें, सारे जीव, सारे प्राणी, सारी शक्तियें ब्रह्ममें रेहवें हें पर distinguishable नहीं रहे हें. क्योंके सब तमोलीन हो जा रही हें. अव्यक्ताव्यक्त सर्व प्रभोवन्तो अभास्वर ब्रह्मकी रात्रि जो हे ब्रह्मलोक हे वामें सब देवताऐं वहां रेह हें. पर indistinguishable होवे हें. जो बात महाप्रभुजी भी केह रहे हें. महाप्रभुजी अपनी नहीं केह रहे हें, महाप्रभुजी वेद, पुराण, गीतादिके आधार पर केह रहे हें. तो वो अभास्वरलोकमें देवताओंकी स्थिति बनी रेहती हे.

वे वहां मनोमय समाधिजन्यप्रीतिसे मुदित रहे हें. उनकी कोई इन्द्रिय और अर्थ तो नहीं हें पर उनके मन बचे रेह जायें. स मनश्चक्रे स ईक्षांचक्रे – आयो ना ख्यालमें. मनश्चक्रे ईक्षान्चक्रे – तो मनोमय समाधिमें लीन रेहते हें. मुदित रेहनेवाले प्रभावान् अंतरिक्षमें ही इधर उधर विचरण करते हें. मनोरम वस्त्र एवं भूषणोंसे युक्त रेहते हुये चिरकालतक अपनी स्थिति बनाये रेहते हें. जो ब्रह्माजीको सर्गके पेहले नारायणने अपने स्वरूपमें दिखाई हे. सृष्टिके पेहले तमकालीनमें. वहां ये ही सब वर्णन हे भागवतमें. जाके देखलो. अच्छे अच्छे वस्त्र धारण किये भये, कोई भी ऐसो नहीं हे के जो विष्णुरूप नहीं होय. सेवक भी विष्णुरूप हें, सेव्यभी विष्णुरूप हें, सेवोपकरण भी सब विष्णुरूप हें.

ब्रह्मवादके संदर्भमें बौद्धमत / वाल्लभमत :

बिल्कुल वोही बात यहां आ रही हे. भिक्षुओं धीरे धीरे एक

समय ऐसा भी आता हे जब इस लोकका विवर्त होता हे. **'विवर्त'**को मतलब शंकराचार्यजीको विवर्तको नहीं हो. बौद्धनके यहां विवर्तको मतलब उत्पाद हे. विशेषेण वर्तते इति विवर्त. विवर्त शांकर मतमें यहांसु आयो हे पर अर्थ बदलके आयो हे. विवर्तको मतलब वहां भ्रम हो गयो हे. यहांके विवर्तको मतलब भ्रम नहीं होके उत्पत्ति हे.

इस पुनरुत्पादके आरम्भमें एक शून्यब्रह्मविमान प्रादुर्भाव होता हे. एक ब्रह्मविमान प्रकट होवे. ब्रह्म कहांसु आ रह्यो हे? वो ब्रह्म कैसो हे? शून्य ब्रह्म हे. तब कोई देवता अपने आयुक्षय या पुण्यक्षयके कारण उस उपयुक्त अभास्वरकायसु च्युत होकर ब्रह्मविमानमें उत्पन्न हो जावे हें. ब्रह्मविमान जाकु अपने यहां ब्रह्माण्ड कह्यो गयो हे. तममें जो सारो लीन हतो, वामें अचानक एक ब्रह्माण्ड उत्पन्न भयो. वा ब्रह्माण्डमें पुरुषने **''तत्सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत्''**- अनुप्रवेश करके वो ब्रह्माण्डमें जैसे अण्डामेंसु मुर्गीको बच्चा फूटके निकले हे, ऐसे वा अण्डामेंसु नारायण फूटके निकल्यो और सारी सृष्टिको धारण कियो और विसर्गके लेवलपे अपन अपनी भागवतकथामें वो सारी बात देख गये हें. विसर्गके लेवलपे वो कैसे ब्रह्माण्डसु फूटके निकले हे. जो आजकी लेटेस्ट बिगबैन्ग थियोरीके पैरेलल चलती बात हे.

वो एक बिग बैन्ग भयो हे. जाकु साइन्टिस्ट् लोग एब्सोल्यूट सिन्युलिरिटी कहेंवे हें. वो जो एब्सोल्यूट सिन्युलिरिटी वाको प्रोपर शब्द हे वा एब्सोल्यूट सिन्युलिरिटीमेंसु अचानक मल्टीप्लिसिटीको एक्स्प्लोजन् भयो हे. एकोहं बहुस्याम् वालो. बिगबैन्गको चित्रभी देखोगे तो एब्सोल्यूट सिन्युलिरिटीसु मल्टीप्लिसिटीको एक्स्प्लोजन कैसे भयो वो वहां दिखायो गयो हे.

वोई बात भगवानबुद्ध भी केह रहे हें. वा ब्रह्माण्डकु अण्डा नहीं केहके विमान केह रहे हें. विमान क्यों केह रहे हें ध्यानसु समझो. अभी तक वो माप्यो नहीं जा सकतो थो, याकु माप्यो जा सके हे, करके

भागवत वाकु सर्ग केह हे. सर्गके बाद जो विसर्ग हे वो ये हे. वो जो विसर्ग भयो हे, वा ब्रह्मविमानमें उत्पन्न होवे हे. यहां भी वो अपनी मनोमय समाधिजन्य प्रीतिसे मुदित रेहनेवाली स्थिति बनाये रहे हें, ब्रह्मविमानमें भी. ये अपन जाकु ब्रह्माजी समझ रहे हें ना, के वा ब्रह्माण्डमेंसु एक ब्रह्माजी पैदा भये. नारायणकी नाभिकमलमेंसु. वाके पैरेलल जाती बात हे. परन्तु यहां वहां बोहोत समय तक एकाकी रेहते रेहते उद्विग्न हो जावे हे. ‘‘**स एकाकी न रमते स द्वितीयम् ऐच्छत्**’’. एकाकी रेहते उद्विग्न हो जावे हे तब वाकु भय लगे हे. देखो बृहदारण्यक उपनिषद् केह हें के बुद्ध भगवान ‘‘**द्वितीयात् भयं भवति. स विभयाञ्चकार्. कस्मान्नु बिभेमि. यदा मदन्यद् नास्ति**’’. तो उनकु अपनी एकाकितामें भय लग्यो. उद्वेग भयो. अरमण भयो. जैसे ही अरमण भयो, उद्विग्न होवे हे वाकु भय होने लगे हे के मेरे वा ब्रह्मविमानमें कोई दूसरो प्राणी आधिपत्य न कर बैठे.

उपनिषद्ने या बातको खुलासा नहीं कियो हे के भय कायको भयो? पर वहां ये खुलासा कियो के कस्मान्नु बिभेमि द्वितीयाद् भयं भवति. यदा मदन्यद नास्ति कस्मान्नु बिभेमि. मैं कौनसु डरूं जब मेरे अलावा कोई हे ही नहीं!

वा भयको और थोड़ो एक्स्प्लेन करके भगवान बुद्ध केह रहे हें के भई अभी तो मैं यहां अकेलो हू पर कोई दूसरो यहां आके अपनो आधिपत्य न कर ले. यदि कर ले तो मेरो क्या होयगो? जब उनकु ये भय लग्यो तब अविद्या काम कर गई केह रहे हें. वो अविद्या अपने यहां ब्रह्माजीमें भी काम करी हे. वो अविद्या जब काम करी, तभी कुछ दूसरे प्राणी देवता भी अभास्वरलोकसे च्युत होकर इस ब्रह्मविमानमें वा देवताके साथ आकर रेहवे लगें. वे यहां भी वा तरेह मनोमय अन्तरिक्षमें भ्रमण करते भये मनोरम वस्त्र एवं आभूषणोंसु अलंकृत रहतेभये चिरकालतक निवास करे हें.

भिक्षुओं वा ब्रह्मविमानमें जो प्राणी सर्वप्रथम आयो वाकु कभी विचार भयो हे कि मैं ब्रह्मा हूं. मैं महाब्रह्मा हूं. मैं सर्वजेता हूं. मैं अभिभू हूं.

अन्तर कितनो पड़्यो हे? उपनिषद् या ठिकाने अभिभू नहीं केहके आभू शब्द केह रह्यो हे. आभू सबसु पेहले पैदा भयो. आसमन्तात् भवति आभू. ब्रह्माण्डविग्रह नारायण – वो वाकु आभू केह हे. ये वाकु अभिभू केह रहे हें. कोई भी अपराजित, सर्वदृष्टा, स्वयंवशवर्ती स्वतन्त्र, ईश्वर, सबको कर्ता निर्माता, दूसरेनकु वशमें रखवेवालो, ये सायकोलोजी ब्रह्माजीकी अपने यहां भी बताई गई हे. मैंने ही वर्तमान तथा भविष्यमें होनेवाले प्राणीयोंकी सृष्टिकी हे. वो कैसे? वो ऐसे के मेरे मनमें ऐसा संकल्प हुआ के मेरी तरेहसु दूसरे जीवभी यहां आयें. ‘‘**स नैव रेमे स द्वितीयम् ऐच्छत्**’’. जब वाने या तरीकेको कियो संकल्प – संकल्पपूर्विका सृष्टि अपने यहां भी सत्यसंकल्प और सर्वभवनसामर्थ्य ये दोही फेक्टर माने हें. यहांभी वो संकल्पकी बात आ रही हे.

संकल्पपूर्विकासृष्टिमें संकल्प भयो के दूसरे भी मेरे जैसे आयें तो मेरे वा मन:प्रणिधान मने संकल्पसु कौन्सन्ट्रेशन को यह प्रभाव भयो के ये प्राणियें आ गये. जो प्राणी बादमें उत्पन्न भये, उनके मनमें भी कभी यह विचार उठ्यो के सर्वप्रथमतो ब्रह्मा, महाब्रह्मा पेहले देव हें, हमतो बादमें आये हें यहां, तो शायद हमारे कर्ता ये ही होंयगे! पर न ये उनके कर्ता हें और न वो इनके कार्य हें. सब प्रतीत्यसमुत्पादसु ब्रह्मविमानमें पैदा भये हें.

अब देखो अपनी तोप अपनेपे ही तानी जा रही हे. अभिन्ननिमित्तोपादानकी विधिसु पैदा नहीं होके प्रतीत्यसमुत्पादके ढंगसु पैदा भये हें अभास्वरलोकमेंसु. मल्टीप्लिसिटीको सिद्धान्त लाके के पेदा कर रहे हें के देवतानकी जो मल्टीप्लिसिटी हे, वो मने ‘‘**एतस्मादेवात्मन: सर्वे प्राणा सर्वेलोका: सर्वे देवे: सर्वाणि वेदानि व्युच्चरन्ति**’’. वा तरेहसु व्युच्चरण वहां बतायो हे, यहां वो पतन बतायो

हे. व्युच्चरण यों हे ग्राफिकली अपवर्ड और पतन डाउनवर्ड हे. पर तोप अपनी अपनेपे तानी जा रही हे. क्योंके शून्यकु अवाच्य सिद्ध करनो हे. अवाच्यता यहांसु आ रही हे. पर ब्रह्म तो स्वीकार्य हे ही. वाकु शून्यब्रह्म भी केह रहे हें. ब्रह्मविमान भी केह रहे हें. ब्रह्मके तीन लेवल हें. स्वरूपकोटि, कारणकोटि और कार्यकोटि. वामेंसु ये सारो विस्तार पैदा भयो हे.

तो अपन देख सकें हें के अमेयब्रह्मवाद, अपोह्यब्रह्मवाद को बुद्धने कैसे तरेहसु उपनिषद्के बाद प्रोजेक्शन कियो हे. वो बात ठीक हे के उनकु अपने मतके अनुकूल बनानेकेलिये कियो हे पर वो थियोरी ब्रह्मवादकी स्वीकार्य तो हे. अन्तर पड़्यो हे तो कितनोसो पड़्यो हे जहां अपन कार्यकारणभावके रिलेशनमें, तादात्म्य और अभिन्ननिमित्तोपादानता मान रहे हें, वहां वो प्रतीत्यसमुत्पाद मान रहे हें. क्योंके बुद्धभगवानको सिद्धान्त ये हे के जो प्रतीत्यसमुत्पत्तिकु जाने हे वो बुद्धकु जाने हे. जो बुद्धकु जाने हे वो प्रतीत्यसमुत्पत्तिकु जाने हे. प्रतीत्यसमुत्पत्तिकु जाने हे वो शून्यकु जाने हे. शून्यकु जाने हे वो बुद्धकु जाने हे.

इक्वेशन कैसे हो रह्यो हे –

प्रतीत्यसमुत्पत्ति = शून्य = बुद्ध = प्रतीत्यसमुत्पत्ति.

तादात्म्य आयो के नहीं? यो नहीं आयो तो द्राविड़प्राणायामसु आयो हे. प्रतीत्यसमुत्पत्ति मने हर चीज मल्टीपल चीजको एक्सीडेन्ट्ली एकत्रित हो जानो. मल्टीपल फिनोमिनाको अचानक एकत्रित होके ऐसो झांसा देनो. जैसे कैलिडोस्कोपमें एक डिजाईन मल्टीपल फेक्टर्ससु डिजाईनको झांसा बन जाये हे. वास्तवमें वो डिजाईन हे नहीं पर वाके मल्टीपल फेक्टर्स हें. कांचकी चूड़ीनके टुकड़ा हें. पीछे एक मिल्की कांच हे. या बाजू तीन मिरर हें. वापे देखनेको व्युफाइन्डर हे. ऐस मल्टीपल फेक्टर्स मिलके एक डिजाईनको झांसा जैसो पैदा करे हें वाकु प्रतीत्यसमुत्पाद कह्यो जाय. ऐसे ही ये मल्टीपल फेक्टर्ससु एक

प्रतीत्यउत्पत्तिसमुत्पाद हे और ‘‘**प्रतीत्यसमुत्पादं यो वेत्ति सो बुद्धानं वेत्ति यो बुद्धानं वेत्ति सो शून्यं वेत्ति**’’. ऐसे भगवान्‌बुद्धको केहनो हे. सो तादात्म्यवाद वैसे कैन्सल कर दियो हे.

प्रतीत्यसमुत्पादवादके प्रोपेगेशन्‌में और पाछो प्रतीत्यसमुत्पाद = बुद्ध हे. बुद्ध = शून्य हे. एक तरहसु पाछो वो तादात्म्यवादकी ही तो बात करे हें. के तीनों तीन होते भये भी ‘‘**एतत् त्रयं सत् एकमयमात्मा अयमात्मा एकसन् एतत् त्रयम्**’’. बात तो पाछी वोई ही आई के ‘‘**जिस जगहसे ले चला था राहवर हम वहीं आये हें घूमके. आ गया सीमा जाने क्या ताकमें रखदी सुराही चूमके**’’. ये कोई ख्यालको नशा हे जो चढ़ गयो हे जामें तुम सुराहीको में कह रहे हो पर ख्यालको नशा भी उतनो ही नशीलो हे जितनो सुराहीको नशीलो हे. उनको ख्याल आ गयो हे अभिन्ननिमित्तोपादान और अविकृतपरिणाम वो सच्चो नहीं हे. क्योंके अभिन्ननिमित्तोपादान और अविकृतपरिणाम के कारण कोई चीज नित्यता सिद्ध हो जायेगी. नित्यता सिद्ध हो जायेगी तो हर वस्तु क्षणभंगुर हे ये नहीं होयगी. अब क्षणभंगुरता लानी हे, वेदकु अपोज् करनेकेलिये, वाकेलिये तोप कौनसी चईये पाछी वेदकी ही सृष्टि प्रक्रिया. अवैदिकी सृष्टि प्रक्रिया नहीं बताई हे बुद्धने. यहां जाके वो पूरी बात केह रहे हें. भिक्षुओं जो प्राणी सर्वप्रथम उत्पन्न हुआ वो अपेक्षाकृत दीर्घायु, अधिक सुंदर एवं अधिक शक्तिसम्पन्न था. जो प्राणी बादमें उत्पन्न हुये, उनकी अपेक्षा अल्पायु, कम सुंदर और अल्पशक्ति सम्पन्न थे. उन्होंने मान लियो के तू देव हें और हम भक्त हें.

अपनेकु लगे के अपने देवतानको मजाक उड़ानेकेलिये ये बात कही गई हे. अपनो उपनिषद् केह हे के ‘‘**तदेतद् देवानां न प्रियं यदेतन् मनुष्या विद्युः मनुष्या ही देवपशवः**’’ मनुष्य जो हें वो देवतानके पशु हें. याकेलिये ब्रह्मज्ञान होवे वो देवतान्‌कु पसन्द नहीं आवे. वही बात उपनिषदभी केह रहे हें. ये देवतायें क्योंके कमजोर हते तो इनने वा

ब्रह्माकु प्रजापति मान लियो. अब अपनी तो चल नहीं रही हे तो जाको डण्डा चल रह्यो हे; जिसकी लाठी उसकी भैंस. पर हते सब प्रतीत्यसमुत्पन्न. कोई कोईमेंसु पैदा नहीं भयो हे. एक अमेयब्रह्मवाद, अपोह्यब्रह्मवाद याको बुद्ध भगवानने कितनी खूबसूरतीसु प्रतिपादन कियो हे. ये अपन देख सकें हें.

वाके बाद सारे उपनिषदनकी जो जो सृष्टि उत्पन्नकी प्रक्रियायें हें – मने सृष्टि प्रक्रिया, महाप्रभुजी केह रहे हें,

अनेकधा बताई हें उपनिषदनमें. वो अनेक सृष्टिकी अनेक क्रियानकु उपनिषदनसु आरण्यकसु बुद्धभगवानने अपने यहां या भाषामें अनुवाद करके बताई हें. वामें केह हें खिड्डोपदेशिका नाम देवा. मने क्रीडा करवेवाले देवता. ये क्रीडापूर्विका सृष्टि हे. तो खिड्डोपदेशिकाभी जो हें वो अपन समझें के बुद्ध मजाक उड़ानेकेलिये केह रहे हें. नहीं नहीं, अपने यहां कह्यो गयो हे. ‘‘**स भाण इति व्याहरत्**’’ जो वाकु खाने गयो बड़ो स्वरूप जो पैदा भयो, तो बड़ेने कही के या छोटेको खा जाओ. महामत्स्यन्यायसु. वो एक एस्ट्रोनोमिकल सिद्धान्त हे के जो भी बड़ी गैलेक्सी हे वो छोटी गैलेक्सीको खा जाये, जासु ब्लैकहोल पैदा होवे है. बड़ो छोटेको खाने गयो तो वाने भाण कियो, उपनिषदमें ऐसे आवे. वो देवा हें के अरे भई खा मत जा. बड़ेने कही के खा नहीं जाऊं तो क्या करूं? वाने कही के भई एक काम कर के तू और मैं एक हें ऐसे समझ ले तो तेरेको खानेको और मेरेको खवानेको दर्द नहीं होयगो. – अन्नं ब्रह्मेति व्याजानात् अन्नाद् इत्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते. अब अपन अन्नके बारेमें सोचें के अन्नं ब्रह्मेति व्याजानात्. तो अपन ये दालभातढोकलागांठिया अन्नम् समझें अन्नं ब्रह्मेति व्याजानात्. वहां ये दालभातढोकलाकु अन्नमिति व्याजानात् नहीं कियो हे. वहां या सिद्धान्तकु बतायो हे के जा बखत सृष्टि पैदा भई हे तो वामें कोई चीज खाद्य पैदा भई हे, कोई खादक पैदा भई हे. जैसे अपन समझेके जो बड़ी

गैलेक्सी हे, बड़ो जो हे वो छोटेको खा जातो होवे हे. वासु कोई चीज खवानीवाली पैदा हो रही हे. वाकेलिये वो केह हें के सो “**अहमन्नमहमन्नमहमन्नम्. अहमन्नादो३ऽहमन्नादो३ऽहमन्नादः. सुवर्ण ज्योतिः. इत्युपनिषत्**”. तुमको जा दिन ये अनुभव होयगो के अन्नभी तुम हो और अन्नादभी तुम हो तो गोल्डन लाईट तुम्हारे दिमागमें पैदा हो जायेगी.

अपनो तैत्तिरीयोपनिषद् केह रह्यो हे. “**अहंश्लोककृदहं श्लोककृदहं श्लोककृत् अहमस्मि प्रथमजा ऋता३स्य पूर्वं देवेभ्योऽमृतस्य ना३भायि यो मा ददाति स इदेव मा३ वाः अहमन्नमन्नमदन्तमा३ऽद्मि. अहं विश्वं भुवनमभ्यभवा३म् सुवर्ण ज्योतिः य एवं वेद इत्युपनिषत्**” मैं अन्न हूं और अन्नम् अदन्तम् माम् अदभि. वो खेद करनेवाले देवता जो हें वो सृष्टि बने हें. अपन समझ रहे हें के अपनी मजाक उड़ा रहे हें पर नहीं नहीं अपनने ये बात पेहले कही हे. और वाको गोल्डन ट्रुथ करके कही हे. इननेतो पीछेसु कही. उपनिषदने बात कही हे और जर्मनीमें और यहां इनसबनकु मूलमें अपनेसु द्वेष होवे हे, द्वेष होवे हे करके ये रिसर्च ऐसी करवा रहे हें के उपनिषद बोहोत सारे बादमें पैदा कर दिये बुद्धकी कॉपी करनेकेलिये. पेहले बुद्ध केह गये. उपनिषद् बादमें ब्राह्मणनने खुराफातमें बुद्धके दर्शनकी कॉपी करनेकेलिये रचे. ये भी बुद्धके दर्शनकी कॉपी करनेकेलिये रचे. अरे भई अक्कल तो वापरो भगवानकी दी भई, अन्न खानेवालेकी अक्कल. यदि ऐसो हे तो बुद्ध याकु ब्रह्मजालसूत्र क्यों केह रहे हें? जा बखत आनन्दने उनसु पूछी के महाराज ये जो आपने उपदेश दियो हे तो या उपदेशको नाम क्या हे? कुछ नाम तो बताओ?

आनन्द उनको प्रधान शिष्य जैसे अपने महाप्रभुजीको दामोदरदास. तो वाकु बुद्ध भगवानने एक बड़ी मजेदार बात बताई. अच्च्छरईम भन्ते अभुत्तमम् को नाम अयम् धम्मो पर्याय. अरे गजबकी

बात कही हे भगवान आपने. अभुत्त अद्भुतम् भगवानबुद्धने बड़ी शान्ति कही. इमम् धम्म पर्याय - ये मेरे धर्मके उपदेशको अत्थजालम् अर्थजाल समझ जा. एक अर्थको जाला बुन्यो हे मैंने. अवाच्य अर्थको. जो बोल्यो नहीं जा सके. धम्मजालम् - धर्मजाल याको समझले. बम्मजालम् - ब्रह्मजाल समझले. दिठ्ठजालम् - खोटी खोटी दृष्टिनको जाल हे. खोटी दृष्टिको जाल हे तो बुद्धकी दृष्टि तो नहीं हे ना ये? बुद्ध जब वाकु ये बात केह रहे हें के मेरे जमानामें प्रिवेलिङ्ग ओपिनियन ये हें. तो बात क्या हो गई के उपनिषद् पेहले हें के ये पेहले हें? करो ना रिसर्च!

पेराफ्रेसिङ्ग करो उपनिषदकी और बुद्धके इन वचननकी. पता चल जायेगो के ये सारे पेसेजेस् - ऐसे एक नहीं हें - ये तो मैंने चोखाके दानाकी तरह दो चार दाने बतायें हें; ऐसे सारे पेसेजेस् अलग अलग उपनिषदनसु लिये भये हें. उन लिये भये उपनिषदन्में - सृष्टिकी प्रक्रिया महाप्रभुजीने भी रेकोगनाईज करी हे ''**सृष्टेः उक्ता अनेकधा**'' और ''**यथा कथञ्चित माहात्म्यं तस्य सर्वत्र वर्ण्यते**''. ''**कदाचित् पुरुषद्वारा कदाचित् पुनरन्यथा, कदाचित् सर्वात्मैवभवति इह जनार्दनः. महेन्द्रजालवत् सर्वम् कदाचिन् मायया असृजत् . तदा ज्ञानादयः सर्वेवार्तामात्रं न वस्तुतः**''. ऐसे सृष्टिके अनेकधा प्रकार क्यों बताये हें? महाप्रभुजी स्पष्ट वामें एक कारण केह हें यथा कथञ्चित माहात्म्यम् तस्य सर्वत्र वर्ण्यते. अन्तर कितनो हे अपने ब्रह्मवादमें और इनके ब्रह्मवादमें यथा कथञ्चित माहात्म्यं तस्य सर्वत्र खण्डयते. अन्तर इतनो ही हे पर ब्रह्मवाद इन्कार कियो हे ये तो अपन केह नहीं सकें. ब्रह्मवाद उनने स्वीकार कियो हे.

अपनेकु एक शंका ये हो सके के ये ओपीनियनकी गिनती उनने मिथ्या दृष्टिमें करी हे तो ये ओपीनियन शायद बुद्धकी नहीं भी हो सके हे! ये ही मेरी गलती हो गई. मैं मज्झिम्निकाय नहीं लायो. ये

दिग्‌निकाय हे. याके पेहले एक मज्झिमनिकाय और हे. वामें हमारे गोत्रको एक ब्राह्मण भारद्वाज गोत्रको ब्राह्मण जो बोहोत पंडित हतो अपने जमानाको. वाको सबनने खूब चाबी भरी के तुम बुद्धसु जाके शास्त्रार्थ करो. क्योंके बुद्ध ब्राह्मणनको खण्डन कर रह्यो हे. अचानक वा बिचारेकु जोश आ गयो. जोश आ गयो तो शास्त्रार्थ करवे पोहोंच गयो बुद्धसु. बुद्धकु वाने चैलेन्ज् दी भरी सभामें. ये तुम क्या बात कर रहे हो? तुम केह रहे हो के ब्रह्माने जगत् नहीं बनायो तो क्या तुमने बनायो? भगवान रजनीश तो चतुर हते. भगवान रजनीशको भी ये बात पूछी गई हती क्रौस मैदानमें. भगवान रजनीशने बोहोत अच्छी बात केह दी. पूछनेवालेकु कही के यहां आओ पासमें. आदमी पासमें गयो तो भगवान रजनीशने कही हां मैंने बनायो. पर दूसरेकु मत कहियो नहीं तो ना पाड़ दूंगो. तेरेको ये ब्रह्मके ज्ञानको उपदेश दे रह्यो हूं. કેમ કે અધિકારી પાંખે વાણી નહીં કોને ઉચ્ચાર. भगवान रजनीश ज्यादा बुद्धसु या बारेमें वन स्टेप एहेड हते. भगवान बुद्ध थोड़े वन स्टेप बिहाइन्ड हें.

भगवान बुद्धने कही अरे भई तू कायकु चिंता करे. तोकु सत्यकी चिंता हो रही हे ना? मैं अपने तपसामर्थ्यसु तोकु ब्रह्मलोक भेज रह्यो हूं. मज्झिमनिकायकी वार्ता हे हों. भगवानबुद्धने वा भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मणकु ब्रह्मलोक भिजवा दियो. वहां ब्रह्माजी वाकु मिले. ब्रह्माजीने जैसे अपने यहां पुराणनमें आवे हे के संध्या वगैरह करके पूछ्यो के भई कैसे आये? वाने कही के मैंने बुद्ध भगवानसु ये सवाल कियो के ब्रह्माने जगत नहीं बनायो तो कौनने बनायो? भगवानने कही के भई कौनने बनायो ये मैं क्या बताऊं. तू ब्रह्माजीको ही जाके पूछ आ ना? या लिये आपके पास आयो हूं. ब्रह्माजीने बोहोत फेन्टास्टिक उपदेश वाकु दियो. दूसरे कोई औरके द्वारा रिक्मन्डेशन होतो तो मैं सच्चो रहस्य तोकु नहीं बतातो परन्तु तेरी रिक्मन्डेशन बुद्धकी हे तो मोकु सच्चो रहस्य बतानो पड़ेगो. वो सच्चो रहस्य ये हे के मैं सृष्टिके साथ पैदा भयो हूं. सृष्टिको

पैदा करनेवालो नहीं हूं. पर लोकक़ु ये रहस्य बताऊंगो तो वो मोको प्रजापति नहीं मानेंगे. या डरके मारे लोग डरते रेहवें हें याकेलिये मैं केहतो फिरूं के मैं प्रजापति हूं. तुम मेरी प्रजा हो. अब बुद्धने रिक्मन्ड कियो यालिये तोकु ये रहस्य बता रह्यो हूं.

अब ये बुद्ध द्वारा अपने तपोबलसु भेजे गये ब्राह्मणके द्वारा कह्यो गयो कथन हे. अब ये सिद्धान्त हे के नहीं तो? यदि ये सिद्धान्त खोटो हे तो बुद्धकी तपसामर्थ्य खोटी हे. मतलब क्या भयो के यातो बुद्धने वाको मैसमैराईज् कियो हे या हिप्नोटाईज् कियो हे. यदि बुद्ध केह रहे हें के अपने तपसामर्थ्यसु मैं तोकु ब्रह्मलोक भिजवा रह्यो हूं मतलब ब्रह्मलोक बुद्धको मान्य हे. वा ब्रह्मलोकमें पोहोंच्यो भये भारद्वाज ब्राह्मणकु ब्रह्माजी जब ये उपदेश केह रहे हें के मैं सृष्टिकेसाथ पैदा भयो हूं. सृष्टिको कर्ता नहीं हूं. तो अपनेकु लगे के बुद्ध भगवान्ने जैसे कि राहुल सान्कृत्यायनने ये बात कही हे राधाकृष्णननके खण्डनमें.

सर्वपल्ली राधाकृष्णननने कही के बुद्ध भगवान नयो धर्म फैलानो नहीं चाहते थे. बुद्धभगवान् वैदिक धर्मको ही फैलानो चाहते थे. पर ब्राह्मणनके विरोधी हते. ये बात सच हे राधाकृष्णननकी. एक ब्रह्मणवग्ग भी आवे हे उनको जो अभिधम्म हे वामे. ब्रह्मवग्ग भी आवे हे. वामें उन्होंने ये बात क्लीयर करी हे के मैं अच्छो ब्राह्मण कौनकु मानूं हूं. तो अच्छो ब्राह्मण मनुस्मृतिमें सामान्य दसधर्म कहे गये हें वो जामें सामान्य दस धर्म होंय वाको अच्छो ब्राह्मण मानूं. जातसु अपने आपकु ऊंचो दावा करनेवाले ब्राह्मणकु मैं अच्छो ब्राह्मण नहीं मानूं हूं. दस सामान्य धर्म मनुने अपने यहां बोहोत पेहलेसु बता रखे हें.

मनुने क्या बताये हें. वो तो वेदने बताये हें मनुसु भी पेहले. वाकी श्रुतियें बिल्कुल स्पष्ट अवेलेबल हें. तो ब्रह्मवग्गमें या तरेहसु आयो हे. वा ब्रह्मवग्गमें जब ब्राह्मणविरोधी हतेके नहीं हते ये जो इश्यु राहुल सांकृत्यायन और सर्वपल्ली राधाकृष्णननके बीचको झगड़ा हे वामें

सर्वपल्ली यों केंह हें के ब्राह्मण विरोधी हते. क्योंके ब्राह्मणलोग मूर्ख पैदा हो गये थे. वो वेदविरोधी या एस् सच् ब्राह्मण विरोधीभी नहीं थे क्योंके जो आईडियल ब्राह्मण हे वो ऑलमोस्ट् वोई ब्राह्मण हे जाकु अपन आईडियल केह रहे हें और जाकु वो आईडियल केह रहे हें.

बुद्धको भी वो आईडियल याई अर्थमें केह रहे हें के मैं वो सारे आईडियलको जो दस सामान्य धर्म हें उनको पालनेवालो होनेके कारण बुद्ध हूं. तो अपन समझ सकें के प्रोब्लम कहां हे, कहां झगड़ा हे. डिस्प्युट कहां हे? कॉमन एग्रीमेन्ट् कहां हे? यामें ध्यान देनेकी जो बात हे, वो मूल बात ये हे के ये जो बुद्धकी शरणमें जानेसु तत्त्वकु पारमार्थिक रहस्य प्रकट हो रह्यो हे, ये मज्झिम्निकायको स्वीकरण या बातको क्लीयरकट् इन्डिकेशन हे, के बुद्धकु भी सृष्टि प्रक्रिया तो ये ही स्वीकार्य हे जरासे मोडिफिकेशनके साथ के अभिन्ननिमित्तोपादान कारण नहीं हे. क्योंके ‘‘**स आत्मानम् स्वयं अकुरुत**’’. ये जो बात हे वहां उनको थोड़ोसो डिफरेन्ट ओपिनियन् हे क्योंके वो आत्मवादी नहीं हें, वो कर्तृवादी नहीं हें, वो क्रियावादी हें, तो क्रिया अपने आपमें सफिशियेन्ट् हे. और वो क्रियात्मक ब्रह्म – क्रियाको मतलब ही प्रतीत्यसमुत्पाद हे. ये बात ध्यानसु समझियो.

जा संदर्भमें मैंने आपकु बतायो के डेकार्ते आके महाप्रभुजीकु यों केहतो के **‘कॉजितो एर्गो सुम’(Cogito ergo sum)** और महाप्रभुजीकु भिड़ा दियो जाय उनके साथ तो महाप्रभुजी कहेंगे के भई ये तो क्रिया हे. याके कारण आत्मा कैसे सिद्ध होयगी? महाप्रभुजी भी वोई आर्ग्युमेन्ट् देंगे. ये **‘कॉजीतो एर्गो सुम’** तो एक अन्तःकरणकी प्रक्रिया हे, वासु आत्मा सिद्ध नहीं हो सके. क्योंके आत्मा तो कौनसी दृष्टिसु सिद्ध होयगी? योगदृष्टिसु वाको दर्शन हो सकेगो या जो दृष्टि हरिको देखनेकेलिये सक्षम हे वो देख सकेगी. जो भगवानको देख सके हे वो ही आत्माको दर्शन कर सके हे. योगसु आत्मदर्शन हो सके हे. बाकी

अन्यथा ये **‘‘कोजीतो एर्गो सुम – आई थिन्क् देयरफोर आई एम’**.

जैसे शंकराचार्यजी केह हें के **‘‘सर्वोपि लोको अहमस्मि इतिप्रत्येति न कोपि नाहमस्मि इतिब्रूयात्’’**– सब लोग ये ही तो केह रहे हें के मैं हूं. कोई यों केह के मैं नहीं हूं? डेकार्तेसु पेहले शंकराचार्यजीने कही हे. **‘‘सर्वोपि लोको अहमस्मि इति प्रत्येति न कोपि नाहमस्मि इति ब्रूयात्’’** याके लिये आत्मा तो हे ही. शंकराचार्यजीकु भी महाप्रभुजी ये ही बात पाछी केंहगे के अहमस्मि इति प्रत्येति यामें अहं अहंकार जो हे वो जड़ हे. अस्मि जो हे वो क्रिया हे. प्रत्येति वो बौद्धिक व्यापार हे यामें आत्मा कहां हे बताओ? आत्मा अहमस्मि इति न प्रत्येति आत्मानुदर्शन नहीं हे. नैयायिकनकु ये भ्रान्ति हो गई के मैं हूं केहनेसु आत्मा हे. अपने यहां भी ऐसे फितूर चलते थे.

मगनलाल शास्त्रीजी केहते थे હું છું એમ આપણે ક્યાં કહીએ? છાતી પર હાથ ઠોકીને તેથી છાતીમાં આત્મા છે. પેટ ઉપર હાથ મુકીને કોઈ કહે છે કે હું છું? તેથી પેટમાં આત્મા નથી. व्यतिरेको गन्धवत्. मगनलाल शास्त्री भी ऐसे केहते. તમે શું કહો છો કૌણ છો? કૌણ છો તમે? હું છું . छातीपे हाथ रखके હું છું. आत्मा या तरेहसु अनुभूत नहीं हो सके. क्योंके अब तो ओपन हार्ट सर्जरी हो रही हे. आदमीके हार्टके ठिकानेसु सुअरको हार्ट बिठाके भी वाको जीवित रख्यो जा सके हे. प्लास्टिकको हार्ट बिठाकेभी जीवित रख्यो जा सके हे. तो वा स्थितिमें इन ओपन हार्ट सर्जरीसु या सुअरके हार्ट या प्लास्टिकके हार्ट बिठानेसु वा आत्माके लिये कोई चैम्बर नहीं बनायो जा सके हे. क्योंके पम्पिङ्ग इन् और पम्पिङ्ग आउटको ही सेन्टर हे वहां. इन सेन्टरनके अलावा वहां कोई और सेन्टर नहीं हे. एक वैक्युम जरूर हे. वो स्थान आत्माके रेहनेको स्थान खूबसूरत हो सके हे यदि रेहनो होय तो मोस्ट् वैलकम् चार पम्पके चैम्बरके बीचमें.

ठीक हे वहां आत्मा हो भी सके हे और नहीं भी हो सके हे.

क्योंके हृदय प्रादेश मात्रम् – अपने यहां भी कह्यो गयो हे. पर सवाल ये हे के यासु अनुभव नहीं हो सके हे आत्माको. वो तो ब्रह्मको जो देख सके हे, वो ही आत्माको देख सके हे. इन सारी तुक्काबाजीनसु आत्मानुभव या आत्मसिद्धि नहीं हो सके हे. ये बात अपनेकु समझनी चईये. और कैसे बुद्ध जो ब्रह्मवादी हें, ये अपनने देख्यो.

संक्षेपमें अपन कल जरथोष्ट्र देखेंगे. परसों अपन मिस्र देखेंगे. कमसुकम अपनेको ये पिक्चर साफ होनो चईये के अपनके सामने बुद्धने जो तोप तानी हे वाकेलिये उनको अपन ये केह सकें के भई ये तोपतो हमारी हे. याकी सारी तकनीकी दृष्टि जो हे चलानेकी वाकु हमसु सीखलो अच्छी तरेहसु वो हम तुमको बता देंगे. क्योंके ये सारे वचन बुद्ध जो अपनी भाषामें ट्रांसलेट करके केह रहे हें उनकी पेराफ्रेसिङ्ग अपने उपनिषदनसु ही भई हे, ये अपन देख सकें.

गो. परेश : आत्मा सुषुप्ति साक्षी हे. मैं सो रह्यो थो. ये जो अनुभव हे मैं गाढ़ निद्रामें सो रह्यो थो. ये अनुभव और शब्दसु वाच्य आत्मबोध आत्मज्ञान यहां होवे हे? जैसे कही के मैं हूं यासु आत्मबोध नही हो रह्यो हे और सुषुप्तिसाक्षी आत्माको अपन मानें हें?

गो.श्या.म. : ये उपनिषद और शंकराचार्यजी दोनोंने कह्यो हे. याकी खूबसूरतीपे ध्यान दे. वो खूबसूरती ऐसी हे **''अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते ततो भूयः इव तमो य उ विद्यायाम् रताः''**. उपनिषद् अपनो क्या केह रह्यो हे? वो सब दुष्टें अन्धन्तम् नरकमें जायेंगे के जो अविद्याकी उपासना कर रहे हें. पर जो विद्याकी उपासना कर रहे हें वो वासु भी घोर अन्धन्तम् नरकमें जायेंगे. अविद्याकी उपासना करनेवालेनसु विद्याके उपासक घोर अन्धन्तम् नरकमें जायेंगे. उपनिषद् केह रह्यो हे, श्यामबाबा नहीं हों. **''ततो भूय इव ते तमो य उ**

विद्यायाम् रता: यस्तु विद्याम् अविद्याम् च यस्तद् वेदोभयं सह अविद्ययया मृत्युं तीर्त्वा विद्यया अमृतमश्नुते''. एक गोल्डन ट्रुथ उपनिषद् बता रह्यो हे. मृत्युकु तुम विद्यासु नहीं तैर पाओगे. मृत्युको तैरनेकेलिये तुमको अविद्या चईये. अमृत पानेकेलिये तुमको विद्या चईये. याकेलिये ब्रह्मकु कभी तुम केवल अविद्यासु या अविद्यासु जाननो चाहोगे तो ''**नेति नेति**'' मैं करूं. वो ब्रह्म नहीं मिलेगो पर वो अन्ध:तम नरक मिलेगी. आयो ना ख्यालमें. ''**अन्धं तम: प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते ततो भूय: इव तमो य उ विद्यायाम् रता:**''. अब बोहोत सारे भाष्यकार, बोहोतसारे व्याख्याकार घबरा गये हें विद्यावादी – एकदम जुलाब देनेलायक बात हे हों. मने परगोलेक्स् नहीं पर वो गांधीजी लगाते थे ना, ये वा तरीकेको जुलाब दियो जा रह्यो हे. वा तरीकेको पेट साफ करनेको ये उपदेश हे. पर वामें एक खास मीठी बात जो कही जा रही हे वो रिमार्केबल बात हे.

यदि तुमकु अमृत प्राप्ति करनी हे, विद्याके नामपे अपने यहां महाप्रभुजी वैराग्यं सांख्य योगश्च तपो भक्ति च केशवे. पञ्चपर्वेति विद्येयम् यया विद्वान हरिं विशेत् आज्ञा कर रहे हें. क्या वैराग्य अहंकारके बिना हो सके हे? संभव ही नहीं हे. क्यों? वैराग्यकेलिये पेहले तुमकु अहंकार और मेरे अलावा चीजनमें हेयताको भान होनो चईये. अहमास्पदसु व्यतिरिक्त जितनो हे वो हेय हे. अहं ही उपादेय हे. याको नाम वैराग्य. तो अहंकारके बिना वैराग्य होयगो नहीं. ''**सांख्य आत्मानात्म्विवेक**'' है. आत्मा अलग हे अनात्मा अलग हे. अब ये विवेक करोगे कायसु? बुद्धिके बिना विवेक हो जायेगो? बुद्धिके बिना आत्मा अनात्मा विवेक तो हो नहीं सकेगो. जैसे ही बुद्धि आई, वैसे ही पीछेसु अविद्या आ गई. क्योंके पञ्चपर्वा अविद्या क्या हे? अन्त:करणाध्यास, प्राणाध्यास, देहाध्यास, इन्द्रियाध्यास और स्वरूपविस्मृति. तो अन्त:करणाध्यासके

अन्तर्गत बुद्धि आ गई. सांख्यकेलिये तुमको बुद्धि चईयेगी. तप – तप कहांसु करोगे? देहके बिना तप होयगो? देहाध्यासके बिना तप कैसे होयगो? देहाध्यासके बिना तप नहीं होयगो. खूबसूरती देखो वाकी. यदि तुमको देहको नहीं हे अध्यास तो तप करोगे कायको? देहाध्यासके लिये पाछे तुमको अविद्याकी शरणमें जानो पड़ेगो. ''**वैराग्यं सांख्य योगश्च तपो भक्तिश्च केशवे**''. भक्तिकेलिये तो अहंकार और ममता दोनों चईये. क्योंके '**दासोऽहं**' और '**श्रीकृष्ण:शरणंमम**'. श्रीकृष्ण:शरणंमम में ममता आ जायेगी. दासोऽहंमें अहंकार आयेगो. तो अहंता ममता तो पाछे तुम्हारे गले चिपक गई भक्तिके नामपे.

तो कोई भी विद्या अपनो रोल अदा कर नहीं पा रही हे अविद्याके बिना. ''**विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह. अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्यया अमृतम अश्नुते**''. अविद्या तुमको वहां तक पोहोंचा सके हे. कहां तक? के जहां पहोचवें तक तुम विद्याके पास जा पाओ. फिर विद्या तुमको, अविद्याने तुमको विद्या तक पोहोंचायो तो तुम विद्यासु ब्रह्मतक पोहोंच सकोगे. चाहे तो वैराग्यवालो ब्रह्म होय, चाहे तो सांख्यवालो ब्रह्म होय, चाहे तपवालो ब्रह्म होय, चाहे भक्तिवालो ब्रह्म होय, इन सबनको आखो जो रोल हे, अविद्या और विद्याको वो एकदूसरेके साथ डायवोर्स रोल नहीं हे पर एक दूसरेके साथ कड़ीकी तरेह शृंखला बनतो भयो एक रोल हे. मोकु बस नीरजकी एक कविता याद आ जा रही हे. प्रेमका पंथ हो ना सूना कभी मैं जहांपे थकूं तुम वहांसे चलो. जहां अविद्या थक जाये वहां विद्या आ जाये. जहां विद्या थक जाये वहां अविद्या आ जाये. दोनोंनके कोलोबोरेशनमें जो भी कुछ हो रह्यो हे सो हो रह्यो हे.

या तरहसु कोलोबोरेशनमें काम हो रह्यो हे करके महाप्रभुजी केह रहे हें विद्याविद्ये हरेः शक्ति. ये तो हरिकी शक्ति हे. तुम व्यर्थमें कायेकु खोटो अहंकार करो के मेरी विद्या हे. खोटो दैन्य क्यों के मेरी अविद्या हे और खोटो अहंकार क्यों के मेरी विद्या हे. ये दैन्य भी खोटो हे अविद्यावान होनेको और अहंकार भी खोटो हे विद्यावान होनेको. ये तो भगवानकी शक्ति हे जो के तुम्हारे साथ या तरेहसु खेल रही हे.

ये एक फॉरमेट महाप्रभुजीने अपनेको ब्रह्मवादके संदर्भमें दियो हे. वो उपनिषदसु आयो भयो संदर्भ हे. वाकी सच्ची असर अपनेकु पता कैसे चले? महाप्रभुजीके दर्शनसु पता नहीं चले. शांकरमतसु पता चले. ‘‘**अहं ब्रह्मास्मि**’’ आकारावृत्ति शांकरमतमें मिथ्या हे. मायिक हे. ब्राह्मिकी नहीं हे. जब तुमुल युद्ध भयो हे वेदान्तदेशिकको इन लोगनके साथ वहां उनने ये ही प्रश्न बोहोत तर्क करके पूछ्यो हे के तुम केह रहे हो के ब्रह्म केवलाद्वैत हे, एकदम निर्विशेषाद्वैत हे, तो एक अहं ब्रह्मास्मिइत्याकारावृत्ति और ब्रह्म हे के नहीं हे मुक्तिके बाद? अब ऐसी जगह वाने चूंटियां भरीके उनकु जबरदस्ती कबूल करनो पड़्यो के नहीं अहं ब्रह्मास्मिका इत्याकार वृत्ति मायिक हे. पाछी वोही बात हो गई ‘‘**अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा. अहं ब्रह्मास्मिका इत्याकारिकया अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते**’’.

धर्मेन्द्रसिंह झाला : विद्यया अमृतम् क्या हुइ?

गो.श्या.म. : वो शंकराचार्यजी बुद्ध मतसु उधार ले रहे हें ना. बोल्यो नहीं जा सके. बोलने जाओगे तो गड़बड़ हो जायेगी. नहीं बोलो तो समझ जाओगे. यालिये शंकराचार्यने बुद्ध मतही की तरेह

नागार्जुनकी तरेह कही हे **''न शून्यं नचाशून्यम् अद्वैतकत्वाद्. कथम् सर्ववेदान्तसिद्धिम् ब्रवीमि. न चैकं ततोऽन्ययद् द्वितीयं कुतः स्यात्''**. वेदान्तकी सिद्धिको मैं बोल कैसे सकूं हूं? क्योंके वो एक नहीं हे (न चैकम्) जब एक नहीं हे तो दो कहांसु होयगो? न चैकम् ततोन्यत् द्वितीयं कुतस्यात्? न वा केवलत्वम् = वो केवल भी नहीं हे और न चाकेवलत्वम् और न अकेवल भी नहीं हे. शून्य होयगो? तो केंह हें न शून्यम्. तो केंह हें के अशून्य होयगो? न चाशून्यम् - अशून्यभी नहीं हे. अरे तो हे क्या भई? तो बोले है क्या बताऊं कैसे? है क्या बताने जाऊंगो तो घोटाला हो जायेगो. अमेय अवाच्य अपोह्यब्रह्म वहां हे. वो बुद्धको जो मत हे वो या तरेहसु शांकरमतमें गोदमें लियो भयो मत हे. क्योंके बुद्धके मतने अननैसेसरी उपनिषदकी तोप उपनिषदपे तानी. शंकराचार्यजीने कही के अरे भई तेरेकु गोद ले लऊं न मैं. फिर तो कोई लफड़ा नहीं होयगो ना?

हमारे जातिके भट्टवर्गमेंसु कोई एक हते. उनकु गाली गलौचकी बोहोत आदत हती. एक सेठके यहां वो नौकरी करते थे. एक दिन सेठको बेटा सुन गयो. वो बोल्यो के एक तो हमारे यहां नौकरी करो और पाछे गालीभी हमकु दो? अरे नहीं नहीं सेठ आपकु गाली थोड़ेही दऊं तुमतो मेरे बेटा हो. वो और गाली दे दी. वाने कही याके सामने तो चुप रेहनेमें ही फायदा हे. सेठने कही अब ज्यादा चर्चा छेड़नेमें फायदा नहीं हे. सेठ तुमकु थोड़ेही गाली दऊं तुम तो मेरे बेटा हो. गालीपे उतरे आदमी तो कोई कोई लेवलपे गाली दे सके. ऐसे शंकराचार्यजीने बुद्धकु कही के नहीं नहीं तुमकु गाली नहीं दे रह्यो हूं, तुम तो मेरे बेटा हो. बात पत गई.

बुद्धभगवानके सब रो रहे हें के हमारो मत चुरा लियो हे. अपन रो रहे हें के उनने अपनो मत चुरा लियो. दरअसल कोईने कोईको मत चुरायो नहीं हे. ब्रह्म लटका करे ब्रह्म पासे. ब्रह्मको लटका हे ब्रह्मके सामने, कोईने कोईको मत चुरायो नहीं हे. ब्रह्म सबकु अलग अलग ढंगसु कोईकु अपनी अपोह्यताको स्फुरण करा रह्यो हे कोईकु अपनी अभिधेयताको स्फुरण करा रह्यो हे. संक्षेपमें याको ये स्वरूप हे. क्योंके ये अपोह्यवाद थोड़ो माथा दूखे सो ये हिस्ट्री नहीं हे लेकिन ये हिस्ट्री ऑफ फिलोसोफी हे.

* * *

तृतीय दिवसीय उपक्रम

ज़रथुष्ट्र :

गो.श्या.म. : ब्रह्मवादके अश्रौत रूपनके अपन चिंतन कर रहे थे. वाके अन्तर्गत अपनने सबसु पेहले अश्रौत ब्रह्मवाद, मने अपोह्यब्रह्मवादको स्वरूप बौद्धदर्शनमें देख्यो दिग्धनिकायके आधारपे. वा क्रममें आज ज़रथुष्ट आ रह्यो हे. वो अपोह्यब्रह्मवादी नहीं हे अभिधेय ब्रह्मवादी हे. और ज़रथुष्ट्रके जो वचन हें वो श्रौत हें के अश्रौत हें ये केह पानो बोहोत मुश्किल हे. क्योंके ऋग्वेदके इतनी सन्निकट भाषा हे वो अवेस्ताकी, के यदि थोड़ेसे उच्चारणभेदसु वाको बोलो तो वो ऋग्वेद ही लगे हे और ऋग्वेदको थोड़ेसे उच्चारणभेदसु बोलो तो वो अवेस्ता लगे.

अब श्रौत हे के अश्रौत हे केह पानो जहां तक अवेस्ताको सवाल हे वामें कुछ मोह उत्पन्न होवे हे. पर जा बारेमें मोह नहीं हे कमसुकम मोकु, औरनकी बात तो मैं नहीं करूं, वो हे के ज़रथुष्ट्र एकदम दृढ़ ब्रह्मवादी हते. अब शब्द उनको ब्रह्म नहीं हे, वाको मूल कारण ये हे के ब्रह्मकु देव केहनो, ब्रह्मकु प्रजापति केहनो, ब्रह्मकु असुर केहनो, ये सारे पर्याय, आत्मा केहनो, तत्व केहनो, ‘‘**यो देवानां नामधा एक एव तमग्निं, तं वरुणं, तं सूर्यं, तं मरुत, तं विवस्वान्**’’. ये तो अपने ऋग्वेदकी आरम्भसु पौलिसी रही हे, वामें असुर भी कह्यो गयो हे परमतत्वको, नहीं कह्यो गयो हे ऐसी बात नहीं हे. वा असुरको वो ‘**अहुर**’ केह हें. ‘**अहुरा**’ केह हें. अहुरा केहनेसु अब क्या हे के ‘**देव**’ उनके यहां दानववाचक हो गयो हे, और असुर अपने यहां दानववाचक हो गयो हे.

यदि अपन थोड़ीसी भागवत दृष्टि वापरें या थोड़ी औपनिषदिक दृष्टि वापरें तो **‘‘द्वया वै प्राजापत्याः देवाश्च असुराश्च’’**. वो प्राजापत्य प्रजापतिके रूप देव और असुर दोनों हें. खाली रूपही तो नहीं होंयगे नामभी तो प्रजापतिकेही होंयगे ना. देव और असुर. नाम भी तो दो होंयगे. जब नाम भी दो हो सकें हें, तो ठीक हे जाकु गुस्सा आतो होय तो गुस्सा आवे. मैं तो खालीपीली कायको बोम्ब मारता हे, ये ही कहूंगो. गुस्सा आनेकी बात क्या हे यामें. वो देवयज्नि उनके यहां काफिरनकु जैसे कह्यो जाय, काफिर हें, कुफ्र करनेवाले, तो देवयज्नि हें. अहुरमज्दा. वो उनके यहां ब्रह्मवाचक हे. ब्रह्मकु असुर क्यों कह्यो? आज अपनेकु कोई असुर केह तो अपनेकु मिर्ची लगे लगे और लगेही. अपन रामदास केंह, श्यामदास केंह, शिवदास केंह ऐसे कोईकु रामासुर, शिवासुर केंह तो सबकु मिर्ची लग जायेगी. वो जो मिर्ची लग रहीहे वो पार्टीशन पैदा होनेके बादकी परिस्थिति हे. पार्टीशनके पेहलेकी स्थिति नहीं हे. **‘‘द्वया वै प्राजापत्याः देवाश्च असुराश्च’’**. उनमें पार्टीशन हो गयो तो मिर्ची लगनी स्वाभाविक हे.

थोड़ोसो अपनेको ये अभिधेय ब्रह्मवादकी एक जो वैरायटी ज़रथोष्ट्र और रामानुज हें, रामानुजनको तो अपन यहां डिस्कशन् नहीं करेंगे, पर टाइम टु टाइम क्योंके वेदान्तदेशिक महाप्रभुजीको भी अत्यन्त प्रिय हें, गुसांईजीकु भी अत्यन्त प्रिय हें, इन्सिडेन्टली दादाजीने मेरेकु वल्लभवेदान्तसु पेहले रामानुजके वेदान्तदेशिकके ही सब श्लोक याद करवाये थे. सो मेरो भी वेदान्तदेशिकसु दिली लगाव हे. बाकी टाइम टु टाइम वेदान्तदेशिक आते रेंह हें चर्चामें मेरे. वो दिली लगावके कारण. वो एक अलग कथा हे पर अपनी या संगोष्ठीमें अपन रामानुजको नहीं ले रहे हें पर ज़रथुष्ट्रकु ले रहे हें. थोड़ो परिचय आपको बताऊं के ज़रथुष्ट्र कैसे ब्रह्मवादी हें.

एक बात यामें ध्यानसु समझो – याको देखलो अच्छी तरेहसु. यामें ध्यानसु समझनेकी बात ये हे के ये जो चार्ट मैंने बनायो हे ये मैंने अवेस्ताके पारसी विद्वान भये हें उनने जा तरेहसु निरूपण कियो वा तरेहसु वाके आधारपे कियो हे.

अवेस्ताकी व्याख्या युरोपियन लोग कुछ और ढंगसु करें हें. खुद पारसी कुछ और ढंगसु करें हें. पूनामें जो ब्राह्मणनने मिलके अवेस्ताको बोहोत विचार कियो हे. वो पाछे कुछ तीसरे ढंगसु करें हें. पता नहीं यामेंसु सच्चो कौन हे और खोटो कौन हे, ये मैंने लियो हे जो खुद पारसी विद्वान केह रहे हें. वाने एक बोहोत अच्छो ग्रंथ लिख्यो हे. पूरे अवेस्ताकी ऋग्वेदकी भाषामें पैराफ्रेसिङ करी हे. वाको ये आग्रह हे के वा तरेहसु पैराफ्रेसिङ करके याको अर्थ करो तो अवेस्ताको सच्चो अर्थ समझमें आयेगो. क्योंके अवेस्ताके भाषाके बाद पेहलवी आई, पेहलवीके बाद फारसी आई, और वा तरेहसु बेहते बेहते बोहोत सारी जो मूल विचारधारायें हतीं वामें कुछ परिवर्तन आ गयो.

वो परिवर्तन या सीमा तक आयो के जिन देवनकु वो शुरुआतमें गाली देते हते वो देव उनके यहां आराध्य हो गये. जो उनके आराध्य हते उनको वो गाली देने लग गये. ऐसे बोहोत सारे परिवर्तन आये. क्योंके उनको अपनेपे प्रभाव पड़्यो तो अपनो उनपे प्रभाव पड़्यो. जब एक दूसरेके साथ एक दूसरेपे प्रभाव पड़े तो रोमियो जूलियटको परिवार झगड़तो रेहतो और रोमियो जूलियट एकदूसरेसु अफेयर करते हो जायें. उनके दास आपसमें तलवार भी चलावें, वहां पेहलो इन्ट्रोडक्शन् ही ऐसो हे. वाको नौकर और याको नौकरभी तलवारबाजी कर रहे हें. क्योंके वो कर्तव्य समझें मालिकके प्रति वफादारीसुं. वो तलवारें चल रही हें और रोमियो जूलियट अपने परिवारको दगा देके कहीं और भाग जा रहे हें.

तो हर धर्ममें या तरेहको रोमियो जूलियट वालो कैरेक्टर कहीं न कहीं टाईम टु टाईम प्रकट होतो ही रेह हे. अब वामें कौनसे बखत ये

रोमियो जूलियट के नाटकमें क्या क्या परिवर्तन आते के कौन झगड़ते और कौन एक दूसरेको चाहने लग गये, उनमेंसु मैं ज़रथुष्ट्रको रोमियो हूं. ये केहनेमें मोकु संकोच नहीं हे. मैं ज़रथुष्ट्रको रोमियो हूं. मोकु पसन्द आवे हे ज़रथुष्ट्र और वाको मूल कारण ये हे के अपनो भागवतधर्म हे और भागवतधर्म होनेके कारण बोहोत सारे भागवतके ऐलिमेन्ट्स् मोकु अवेस्तामें दीख रहे हें.

यदि मैं भागवतसु द्वेष करूं तो ज़रथुष्ट्रसु द्वेष करूं. भागवत महाप्रभुजी कहें हें **"वेदाः श्रीकृष्णवाक्यानि व्याससूत्राणि चैव हि. समाधिभाषा व्यासस्य प्रमाणम् तच्चतुष्टयम्. उत्तरं पूर्वसन्देहवारकं परिकीर्तितम्. अविरुद्धं तु यत्त्वस्य प्रमाणं तच्च नान्यथा. एतद्विरुद्धं यत् सर्वं न तन्मानं कथञ्चन"**. वामें भागवतविरोधी कोई बात दीख नहीं रही हे. जब भागवतविरोधी बात नहीं दीख रही हे तो मोकु ज़रथुष्ट्रको रोमियो बना रही हे भागवत. ये मेरी भागवतके प्रति कमिटमेन्ट्के कारण आती भई लाचारी हे के वो मोकु रोमियो बना रही हे. वाके कारण जब मैंने ज़रथुष्ट्रके मतकु थोड़ोसो ध्यानसु देखनो शुरु कियो; वैसे हरसाल जो प्रवचन सुनें हें वामें महाप्रभुजीके प्रत्येक नामको पैरेलल ज़रथुष्ट्रके यहां क्या हे वो मैं निरन्तर बतातो आ रह्यो हूं पिछले पच्चीस सालसु. पर ये ब्रह्मवादके एन्गलसु याकु एक बखत फिरसु अपन चैक कर लें.

ये जो मेरो ख्याल हे, वो वा पारसी विद्वानको ख्याल हे जाने ऋग्वेदकी पैराफ्रेसिङ ऋग्वेदकी जैसी भाषामें करके अवेस्ताको समझावेको आखो एक महापुरुषार्थ प्रकट कियो. यदि मिसइन्टरप्रेशन हे तो पारसीबाबाको हे. पारसीबाबा बड़े मजेदार हें वो खुदको गांडाबाबा केहते होवें. गांडा बाबाको हे के श्यामुबाबाको हे ये मोकु नहीं पता! पर ये मेरो नहीं हे, याकु तो मैं खाली एक चार्टकी तरह प्रस्तुत कर रह्यो हूं. ये खुलासा मैं पेहलेही आपको कर दऊं. क्योंके यामें कुछ एलिमेन्ट्स् ऐसे आ रहे हें ब्रह्मा विष्णु और शिव के वो एस् सच् शब्दसु अवेस्तामें

अवेलेबल नहीं हें. बोहोत सारे अपने देवतायें, विवस्वान् आदि देवतायें मौजूद हें वहां. पर ब्रह्मा, विष्णु और शिव शब्दनसु वहां मौजूद नहीं हें. फन्क्शन्की तरेह वहां मौजूद हें. वो पारसीबाबा जो केह रह्यो हे वासुं मैं भी सहमत हूं के हां, वा तरीकेके फन्क्शन् वहां बताये जा रहे हें, पर समहाउ वा तरीकेके शब्द वहां अवेस्तामें नहीं आये हें.

वो ये केह रहे हें के एक वोहमना हे. एक क्षाख्त हे. क्षाथ्रवैर्य हे. तो वा क्षाथ्रवैर्यकु ब्रह्मा केह रह्यो हे. अब आपको चिन्ता हो रही होयगी के क्षाथ्रवैर्यकी संस्कृत क्या होयगी? क्षाथ्रवीर्य ब्रह्मा क्यों माननो? ब्रह्माजीकु अपन वेदको प्रकट करनेवालो माने हें, सृष्टिको प्रकट करनेवालो माने हें. वामें अचानक क्षाथ्रवैर्य कहांसु आयो?

यदि वेदके आधारपे चैकिंग करें तो बात समझमें नहीं आयेगी. पर भागवत जा तरहसु केह रही हे और महाप्रभुजी भागवतकु जा तरहसु प्रस्तुत कर रहे हें वामें ब्राह्मण सत्त्व हे, क्षत्रिय रज हे, बाकी तम हें. तो राजस ब्रह्मा हे. रजोगुणको अधिष्ठाता ब्रह्मा हे. रजोगुणको बायप्रोडक्ट क्षत्रिय हे.

महाप्रभुजी ये बात और केह रहे हें के सारी क्रियायें रजोगुणसु पैदा होवें. यहांतलक के सच्चिदानंदब्रह्ममेंसु जा बखत धर्मको विभाजन भयो ब्रह्मके, और सत्ता और चैतन्य और आनन्त्य ये धर्म प्रकट भये, आनन्त्य मने नामरूपको आनन्त्य, मने असीमित पॉसिबिलिटी ऑफ फॉर्म, असीमित सम्भावनायें ऑफ कन्सेप्ट, असीमित पॉसिबिलिटी ऑफ फन्क्शन, ये जब प्रकट भईं वामेंसु सदंशमेंसु चिद् और आनन्दके तिरोधानके कारण, सदंश प्राईमाफेसी निष्क्रिय हो गयो थो. वाकु सक्रिय करनेकेलिये प्रक्रिया क्या अपनाई गई? चैतन्यमें रही भयी क्रियाशक्ति हती सच्चिदानंदमें थोड़ोसो ध्यानसु देखो, महाप्रभुजी क्या केहनो चाह रहे हें, के सत्में सु सत्व, चिद्मेंसु राजस, आनन्दमेंसु तमस, चिद्मेंसु रजोगुण, और आनन्दमेंसु तमो गुण प्रकट होवे हे. तो ये जो प्रकृति हे

सत्वरजस्तमोगुणात्मिका वो ब्रह्मके सच्चिदानंद कौरेस्पौन्डिंग हे. सत्त्व, रज और तम. और वामें रजोगुणको अवतार, रजोगुणको अधिष्ठाता ब्रह्मा हे. रजोगुणको बायप्रोडक्ट क्षत्रिय हे. सत्त्वगुणको बायप्रोडक्ट ब्राह्मण हे.

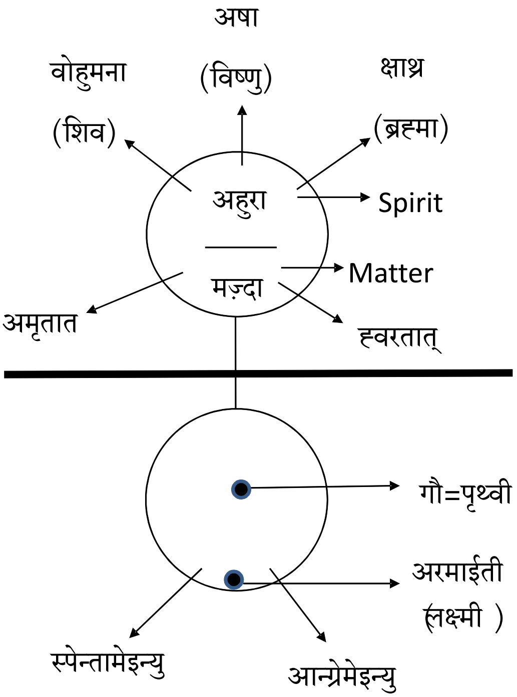
अषा
(विष्णु)
वोहुमना
(शिव)
क्षाथ्र
(ब्रह्मा)
अहुरा
Spirit
मज़्दा
Matter
अमृतात
ह्वरतात्
गौ=पृथ्वी
अरमाईती
(लक्ष्मी)
स्पेन्तामेइन्यु
आन्ग्रेमेइन्यु

अब यदि वो अवेस्ता केह रह्यो हे क्षाथ्रवैर्य तो जब अपने एन्गलसु देखें तो अपनेकु लगे के बात तो सच्ची हे. ब्रह्माही तो हे और क्या हे? सृष्टि प्रकट कर रह्यो हे क्षाथ्रवैर्य तो वो ब्रह्मा नहीं होयगो तो क्या होयगो? और वाको क्षाथ्रवैर्य नहीं केहनो तो क्या केहनो? क्योंके रजोगुणको रोल तो वहां आ रह्यो हे ना! मोकु लग्यो के पारसीबाबा बाततो सच्ची केह रह्यो हे. अपनी वाल्लभ दृष्टिसु देखें तो तो वो बात संगत लगे क्या हे के युरोपियन स्कौलर्स्कु वाल्लभ दृष्टि अवेलेबल नहीं

होनेके कारण वो केह रहे हें के मिसइन्टरप्रिटेशन हे. हो सके हे के मिसइन्टरप्रेटेशन होय. अपनी दृष्टिसु अपन देख रहे हें तो वो मोस्ट प्रोपर इन्टरप्रेटेशन् लग रह्यो हे के भई या सिच्युएशनमें क्षाथ्रवैर्य ब्रह्मा नहीं होयगो तो और क्या होयगो? मेरी बात समझमें आई? पालने विमलसत्त्ववृत्तये और उत्पादने रजोगुणोजुषे. संहरणे तमोगुणोजुषे. ये अपने यहांको कन्सेप्ट हे.

एक पैराडौक्स् यामें आ रह्यो हे. और वो पैराडौक्स् हे के शिवको वो **'वोहुमना'** केह रहे हें. **'वोहुमना'** शब्दको संस्कृताईजेशन करें तो वसुमना होवे हे. वसुमन मोकु लगतो थो के वासुदेवके तरफ जानो चईये. पर ये वा तरफ क्यों चल्यो गयो? एक विचार मनमें आयो; ये न तो पारसीबाबाने कही हे, न अपने यहां वाको वा तरेहसु कोई डिफाईन्ड् टर्मिनोलोजी प्रकट भई. क्योंके वसुमनाकी कोईको पैराफ्रेसिंग करनी होय तो वासुदेव शब्द ज्यादा अच्छो लगे. पर वोहुमनाको शिव पारसी बाबा केह रहे हें तो वोहुमना जो हे वो शिव हे. उनको केहनेको मतलब हे के जाको तुम शिव केह रहे हो वो हमारे यहां वोहुमना हे. शिव जो हे वो घोरेभ्यो अघोरेभ्यो घोरघोरतर भी हे जो एलीफेन्टामें स्वरूप बिराज्यो भयो हे. वाको एक अघोर रूप भी हे, वाको एक घोर रूप भी हे और एक घोरतर रूप भी हे. वाको घोरतर रूप हर बख्त रुद्र केहवायो हे. अघोर रूप वाको शान्त शिव केहवायो हे. तीसरो जो मुख हे,

बरसन युरोपियन लोगनकु और अपने हिन्दुस्तानी लोगनकु भी ये भ्रान्ति हती के ऐलीफेन्टाकी त्रिमूर्ति ब्रह्मा विष्णु और शिव के तीन मुख हें. वास्तवमें ऐसो नहीं हे. वो शिव पार्वती और भैरवके तीन रूप हें. भैरवको मतलब भयंकर. जो भय पैदा करतो होय वो भैरव. वो वाको रौद्ररूप हे. तो शिवके तीनों रूप हें. एक शृंगार रूप भी हे. जो भैरवको रसाभास हे. दूसरो भैरव रूप हे जो शृंगारको रसाभास हे. और बीचमें उन दोनों रूपनको बैलेन्स् करनेवालो एक शान्त रूप हे. वा शान्तरूपकु तो

वसुमना केहनो अच्छी बात हे. शान्तरूप हे तो वाको वसुमना नहीं केंहगे तो वसुमना होय बिना शान्ति आयेगी नहीं. शान्तिको मतलब ये के वसुमना. मोकु लग्यो के भले पारसी बाबा कोई हाइपोथेसिस् कर रह्यो हे, के अनुमान लगा रह्यो हे पर नोट् मच् ओब्जेक्शनेबल. वहां जितनो क्लीयरकट् सम्बन्ध दीख रह्यो हे, इतनो क्लीयरकट् सम्बन्ध नहीं दीख रह्यो पर या तरीकेको अपन एक एप्रोच लें तो वसुमना शिव हो सके हे.

अपने विष्णुकु केह रह्यो हे के हमारो ‘**अहूरा**’ हे. जा विष्णुने असुरके निकंदनकेलिये चौबीसबार अवतार लियो वो हमारो अहूरा हे. तो अपनेकु पाछो बोहोत शौकिन्ग लगे के ये विष्णुकु कैसे अहूरा बता दियो? वो तो असुरनके नाशकेलिये हर बखत अवतार ले रह्यो हे. वो एक बोहोत अच्छी बात केह हे. वो केह हे के ये तीन वाके फॅसेट हें. मने अहूरा मज्दाके कुल मिलाके चार फॅसेट हें. ध्यानसु देखो – वोहुमना, क्षाथ्रवैर्य, अमरतात और ह्वरतात. ये चार वाके पेहलु हें. सच्चिदानंदब्रह्मके तीन पेहलु हें, ऐसे अहुरमज्दाके ये चार पेहलु हें. इन चार पेहलुनमें ‘**अहुरमज्दाकु**’ कह्यो जा सके हे. देखो अभी अभिधेय ब्रह्म हे अपोह्यब्रह्म नहीं हे. यहां अभिधान आ रह्यो हे अहुरमज्दाको बोहोत क्लीयरकट टर्मिनोलोजीमें. ब्रह्मकु अमृत कहां नहीं कह्यो हे? तो एक अमृतात वाको स्वरूप हे. इम्मोर्टल वाको स्वरूप. एक ह्वरतात और एक वाको क्षाथ्रतवैर्य. एक वोहुमना और बीचमें जो अहूरा हे वो विष्णुको रूप हे. मज्दा जो हे वो वाको मैटरको रूप हे. मने वो स्पिरिट भी हे और मैटर भी हे. आयो ख्यालमें.

अब वो जड़ भी हे, जीव भी हे. यामें देखनेकी बात हे के “‘**जड़जीवोन्तरात्मेति व्यवहारस्त्रिधा मतः**’’. महाप्रभुजी केह रहे हें ब्रह्म अव्यवहार्य ब्रह्ममें जड़जीव अन्तरात्मा को विभाग नहीं हे. पर ब्रह्म जा बखत व्यवहार्‍य बन रह्यो हे, वा बखत वाके तीन प्रभेद हो रहे हें. जड़ जीवो अन्तरात्मेति व्यवहारस्त्रिधा मतः. अब थोड़े अपने वाल्लभ

वेदान्तके एन्गलसु देखो तो बोहोत स्पष्ट बात हो रही हे, के जड़जीव मज्दाको जो पेहलु हे वो मैटरवालो पेहलु हे. अहूरा जो हे वो वाको स्पिरिटवालो पेहलु हे. वो आत्मा हे. अन्तरात्मावालो पेहलु हे. और वाको क्षाश्रतवैर्य वोहुमना ब्रह्मा और शिवको रूप हे. वो स्वरत भी हे और अमृत भी हे. अब अपने ब्रह्मकी कौनसी क्वालिटी हे जो यामें अपन केह नहीं रहे हें या कही नहीं गई हे.

अपने यहांके ब्रह्मके जो भी सेलियन्ट फीचर्स् हें वो तो यहां इन्कौरपोरेट हो रहे हें. या स्थितिमें एक '**अहूरा**' शब्दकी मिर्ची लगानी, अब जाकु मिर्ची लगती होय वाकु मैं कहूं के अलबर्ट पिन्टोको गुस्सा क्यों आता हे? अरे कायको खालीपीली गुस्सा करो हो? बात तो वही कर रहे हें पर शब्द अलग वापर रहे हें. बात तो अपनेसु अलग नहीं आ रही हे. अब ब्रह्मके जैसो ही अहुरमज्दा होय तो ज़रथुष्ट्र ब्रह्मवादी भयो के नहीं?

वा ब्रह्ममेंसु देखने लायक बात हे, अपने यहां ''**सृष्टेरुक्ता अनेकधा**'' – तो कोई प्रकार ऐसो बतायो हे, जहां ''**तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाश: सम्भूत:. आकाशाद्वायु:. वायोरग्नि:. अग्नेराप:. अद्भ्य: पृथिवी. पृथ्विभ्याम् ओषधी. ओषधीभ्योऽन्नम्. अन्नात्पुरुष:. स वा एष पुरुषोऽन्नरसमय:**''. – ये क्रमिक सृष्टिको प्रकार बतायो हे. कहीं अक्रमिक सृष्टिको प्रकार भी बतायो हे. अचानक वामेंसु बिगबैन्गकी तरेह ''**तस्माद्वा एतस्मात् सर्वेप्राणा: सर्वेलोका, सर्वेवेदा सर्वेदेवा व्युच्चरन्ति**''. यथा अग्ने:क्षुद्रा विस्मुलिङ्गा व्युचरन्ति. वो बिग बैन्ग थियोरीकी तरेह एक्स्पलोजनकी थियोरी भी बताई हे. वो क्रमिक नहीं हे. साथ साथ ही पैदा भई हे. वो भी प्रकार बतायो हे. एक प्रकार ये भी बतायो गयो हे, के सब कछु ब्रह्मने प्रकट कियो, पर नामरूपनिर्धारण, नामरूपमें वाको विभाजन नहीं कियो होनेकु कारण ''**वृहत्वाद् ब्रह्मणत्वात् आत्मैव ब्रह्मेति गीयते**''. यह अपनो

पुराणनको सिद्धान्त हे. याको शंकराचार्यजीने भी मान्य कियो हे. अपने महाप्रभुजीने भी मान्य कियो हे. “**बृहत्वाद् ब्रह्मणत्वाद् आत्मैव ब्रह्मेति गीयते**”. उनके यहां आत्माको मतलब जीवात्माही ब्रह्म हे. “**जीवो ब्रह्मैव नापर:**” हे. अपने यहां आत्मा जो हे वो ब्रह्माण्डात्मा ब्रह्म आत्मा हे. क्योंके वो “**अहमात्मनां धात**”, “**य आत्मनि तिष्ठन् आत्मानम् अन्तरो यमयति यस्य आत्मा शरीरं यं आत्मा न वेद एषत् आत्मा अन्तर्याम्यामृत**”

वहां जीवात्माको तो नहीं कह्यो जा रह्यो हे. जीवात्मामें रही भई कोई आत्माकु आत्मा कह्यो जा रह्यो हे. ब्रह्मसूत्रको और महाप्रभुजीको एक एन्गल ये हे जो मूलमें मध्वाचार्यजीसु आयो भयो हे अपने यहां के सब नाम जो हें – मध्वाचार्यजी तो वा एक्स्टेन्ट् तक जानेको तैयार हें के समुद्रकी जो गर्जना हो रही हे वो भी विष्णुको नाम हे. घों घों जो समुद्र गर्जतो रेह हे वाको अर्थ भी विष्णु हे. मने ध्वनिमात्रको अर्थ विष्णु हे. वो बात अपनेकु भी मान्य हे. क्योंके “**सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीर: नामानि कृत्वाभिवदन् यदास्ते**”. ये तो वेद अपनो केह रह्यो हे सर्व नामरूप वाके धारण किये भये हें. नामरूपको विभाजन नहीं भयो थो वा बखत ब्रह्मकु प्रोब्लम हती, ऐसो बतायो जाय हे. ये बात आरण्यकमें आई हे. ब्रह्मने सबसु पेहले क्या कियो? नामरूपविभाजन करने है तो उनको प्लेसमेन्ट् कहां होनो चईये? तो वाने द्यौ और भूमिमें विभाजन कियो. “**द्यावाभूमिं जनयन् देव एक:**”. एक द्युलोक बनायो एक भूलोक बनायो. अब वो अपने वेदको पैसेज हे वाके पैरेलल यहां एक पैसेज आ रह्यो हे के अहुरमज्दामेंसु अचानक भूमि प्रकट भई. और अहुरमज्दा द्युलोकवासी हो गयो. वो तत्त्व द्युलोकमें या तरीकेको हे, और भूलोकमें वोही तत्त्व या तरीकेसु आ रह्यो हे.

तो अपने यों समझ सकें के महाप्रभुजी जा तरेहसु केह रहे हें के

ब्रह्मकी तीनकोटि हें. एक स्वरूपकोटि हे, एक कारणकोटि हे, एक कार्यकोटि हे. स्वरूपकोटि अहुरमज्दा हे जाके चार डायमेन्शन्स् हें. वोहुमना, क्षाथ्रवैर्य, स्वरता (ये स्वर्गको पिक्चर दिखा रह्यो हे) मने द्युलोक. वाको एक डिवाइडर हे. वा डिवाडरको अन्तरिक्ष केहवें हें. जो द्यु और भूमिके बीचमें खाली स्पेस् वाको अन्तरिक्ष केंह हें. वा द्युलोकमें सु एक भूलोक प्रकट भयो. वो पृथिवी हे. ''**द्यावाभूमिं जनयन् देव एक**''. या द्युलोकके लिये पाछो जब प्रश्न आयो वेदमें याज्ञवल्क्यके और गार्गीके संवादमें आवे ''**सनु कस्मिन् प्रतिष्ठितः सनु कस्मिन् प्रतिष्ठितः सनु कस्मिन् प्रतिष्ठितः**'' तो अचानक याज्ञवल्क्यकु गुस्सा आ गयो के ''**अतिप्रश्नं मा प्राक्षी मूर्धा ते व्यपतिष्यते**''

एक रेन्ज् तक प्रश्न हो सके हे. वा रेन्ज्के बाद प्रश्न नहीं हो सके.

अपने हिन्दूधर्मके खासकरके वैदिकधर्मके जानी दुश्मन् बोहोत बड़े स्कॉलर राहुलसांकृत्यन खुद ब्राह्मण हते. रामानन्दी हते. हमारे दादाजीके परम मित्र भी हते. दोनों वरली समुद्र के पालपे जाके बैठते रातको. दोनोंमें खूब झगड़ा भी होतो और दोस्ती भी हती. इन्सिडेन्टली हिन्दीमें दर्शन पढ़नेके शौकमें मेरेकु सबसे पेहले राहुलसांकृत्यन पढ़नेकी इच्छा भई. तो दादाजी बोहोत गुस्सा हो गये के राहुलसांकृत्यनको पढ़ पढ़के तेरी मति भ्रष्ट हो जायेगी. मैंने कही के मजा आवे तो वाको क्या करनो? अब मैं दादाजीसु छिपके चुपचाप पढ़तो. क्योंके दादाजीकु राहुलसांकृत्यनने एक दिन ऐसे केह दी के दीक्षितजी महाराज जब तक मोको गौमांस मिले तब तक मैं दूसरो मांस नहीं खाता हूं. तो दादाजीने कही के या दुष्टसु अब दूर रेहनो. वा दिनसु दोनोंकी दोस्ती खत्म हो गई. पता नहीं मोकु राहुलसांकृत्यन गाली दे वो पसन्द नहीं आवे पर वाकी स्कौलरशिप बोहोत मीठी हे.

वाकी एक टेक हती के हिन्दीभाषा कभी इतनी दरिद्र नहीं होनी चइये के वामें कोई विषय समा न सके. सौसु ज्यादा वाने पुस्तक लिखीं. और ये पूरे अरेबिया, ईजिप्ट्, बेंबिलोनिया, मेसोपोटेमिया या सबकी हिस्ट्रीको तो वो इतनो जानकार हतो के तीन हजार पृष्ठकी वाने हिस्ट्री लिखी हे जो उन लोगनकीं भी पता नहीं होयगी. चौबीस भाषाको ऐसो जानकार हतो के जैसे मातृभाषाकी तरेह बोले. सारे बुद्धधर्मको साहित्य मने दादाजीकी लायब्रेरीमें भी बसायो भयो बुद्ध धर्मको साहित्य लायो भयो राहुलसांकृत्यनको हे. दादाजीने वो पुस्तकें मोको दीं के बेटा इन पुस्तकनको संभालके रखियो, बोहोत कीमती पुस्तकें हें. वो तो दादाजी को गौमांसके बारेमें झगड़ा हो गयो. पर मेरेकु कोई गौमांसको प्रश्न हतो नहीं क्योंके मैंने देख्यो नहीं कभी राहुलसांकृत्यनको. अब खातो होयगो वामें क्या करें. वा प्रश्नको मेरो बोहोत झगड़ा नहीं भयो. पर वाकी स्कॉलरशिप मोकु पसन्द आवे.

वो एक बोहोत गन्दी बात केह हे मैं वाकु पसन्द करूं तो भी वो एक बोहोत गन्दी बात केह हे ये पहलो अवसर हतो के ब्राह्मणनने धाक धमकीसु अपनो मत औरतनको कबूल करवायो. दरअसल ऐसी बात नहीं हे. मिसइन्टरप्रेटेशन हे. ‘‘**अतिप्रश्नं मा प्राक्षी मूर्धा ते व्यपतिष्यते**’’. याज्ञवल्क्य केह रह्यो हे. यापे वो केह रह्यो हे. ऐसी बात नहीं हे. वो एक लौजिककी बात हे. वो लौजिक कौनसो हे वाको ध्यानसु समझो. ‘‘**व्याघातावधिराशंका तर्कः शंकावधि स्मृत:**’’. तर्क तुम कब तक कर सको हो? वदतोव्याघात नहीं होवे तब तक शंका करी जा सके और तर्क करे तो शंका होवे ही है. प्रत्यक्ष अनुभूति होय, आनुमानिक अनुभूति होय, श्रौत अनुभूति होय, शाब्दिक अनुभूति होय, वा अनुभूतिमें अपन जब तर्क कर रहे हें, तो तर्क तो क्या हे के लुढ़कतो जैसे खिलोनाकी तरेहको हे के कहीं भी लुढ़क जाये. तर्कको कोई लाग लपेट तो हे नहीं. कोई भी एक्स्टेन्ट् तक तर्क जा सके. पर तर्कको

बेसिक रोल क्या हे? "**तर्कः शंकावधि स्मृतः**". जो अनुभूति हे वाकु थोड़ो हर बखत रेडीमेड औथेन्टिसिटी मानके मत चलो.

अपनेकु भी कभी अनुभूतिको शंकासु देखनो चईये. क्यों? कब अपनेकु यथार्थ ज्ञान हो रह्यो हे, के अयथार्थ ज्ञान हो रह्यो हे, कौनसे ज्ञानमें अपने संस्कार भारी ज्यादा पड़ रहे हें, और कौनसे ज्ञानमें अपनी सब्जेक्टिव फीलिंग ज्यादा काम कर रही हे और ऑब्जेक्टिव कैरेक्टरकु डोमिनेट कर रही हें और कौनसे अनुभवमें वाको जो ऑब्जेक्टिव कैरेक्टर हे वो अपनी सब्जेक्टिव फीलिंगकु डोमिनेट करके खुद अपनी बात जोर जबरदस्तीसों मनातो होय.

जैसे एक सामान्य उदाहरण आपकु दऊं. अपन यहां शान्तिसु बैठे हें. अचानक बद्दल गरजनेकी आवाज आई. अपन सुननो नहीं चाह रहे हें. अपनी सब्जेक्टिव एक्स्पेक्टेशन ऐसी नहीं हे. पर बद्दल गरजनेकी आवाज आई और वा गरजके कारण अपनी ये सारी सब्जेक्टिव फीलिंगके अपन ब्रह्मविचार कर रहे हैं वाके बजाय तुरत अपनेकु लगे के बद्दल आ गये क्या? वाको विचार करनो ही पड़ेगो. वहां ऑब्जेक्ट् अपने सब्जेक्टिव अवेयरनेसकु डोमिनेट कर रह्यो हे वा साउन्डके कारण. धूमधड़ाका भयो नहीं बद्दलकी गरजको और वो ऑब्जेक्ट अपने सब्जेक्टिविटीके ऊपर हावी हो जाये. कई बखत अपनी सब्जेक्टिविटी, ये तो दोनोंनकी कुश्ती हे, सब्जेक्टिविटीकी और ऑब्जेक्टिविटीकी, कभी वाको हाथ भारी पड़ जाये, कभी याको हाथ भारी पड़ जाये.

मैं वाको अक्सर एक फनी उदाहरण देतो रहूं के निर्जला एकादशी करी मैंने नासिकमें. दिनभर तो निकाल लियो रातकु ऐसी प्यास लगी के मैंने कही के मर गये आजतो. जहां मैं रेहतो थो वो अगासीके बाजूवालो रूम हतो. वहां मथनी तो हती नहीं. मैंने कही के क्या करो? टंकी रखी हती वाको पानी पियो. मैं रूममेंसु बाहर निकल्यो तो वा बखत मैं आठ–नौ बरसको हतो, तो वो जो पानीके टपकनेसु काई जमी

थी वामें मोको भालू दीख्यो. अरे भई भालू यहां कहांसु आ गयो? फिर जाके रूम बन्द करके बैठ गयो. भालू आ गयो. अब वो क्या प्यासके कारण मेरी चित्तकी स्थिति विक्षिप्त हती. अब वो अकल कामही नहीं कर रही हती के काई दीख रही हे रातमें भालूके जैसी. एक्च्युअली भालू नहीं हतो. दो बखत मैंने जाके देख्यो के भालू गयो तो कमसुकम मथनी नहीं हे तो टंकीको जल तो पी लऊं. जब बाहर जाऊं तो भालू दीखे और फिर वापिस आके रूममें बैठ जाऊं. अब वो क्या हे के ऑब्जेक्टिविटीके ऊपर मेरी सब्जेक्टिविटी हावी हो गई. बात मेरी समझमें आई ना.

ये तो कुस्ती हे अपनी सब्जेक्टिविटी और अपनी ऑब्जेक्टिविटीकी. जाको भी हाथ भारी पड़ जाये. कभी पत्नीको हाथ भारी पड़ जाये कभी पतिको हाथ भारी पड़ जाये. जो दब जाये सो दब गयो जो नहीं दब्यो सो जीत गयो. ये तो कुस्तीको सिद्धान्त हे. वो ऑब्जेक्ट और सब्जेक्टके बीचको भी याई तरीकेको हे.

एक बात ध्यानसु समझो. तो वो जो भूमि हे वहां भूमि उनने नाम और रूपके विभाजन करके पैदा करी वामें नाम कभी रूपपे हावी हो जाये, रूप कभी नामपे हावी हो जाये. कल जो मैंने आपको बात बताई सारे औनोमोटोपोईया वाके जो टर्मस् हें, वो रूपको नामपे हावी होनो हे.

मोटरबाईक फटफट चल रही हे, पहली इन्स्टिंक बच्चाकु ऐसी होवे हे के मोटरबाईकु फटफटी केंह हें. कुत्ता भौंक रह्यो हे भाउ भाउ तो पेहली इन्स्टिंक अपनेको ये होवे हे के याको नाम भाउ भाउ हे. वहां ऑब्जेक्टिव जो हे वो सब्जेक्टपे भारी पड़ रह्यो हे. रूप जो हे वो नामपे भारी पड़ रह्यो हे.

पर जाको रसैल वगैरह कन्स्ट्रक्टिव टर्म केंह हें और वा कन्स्ट्रक्टिव टर्मके कारण जब अपनने एक टर्म कन्स्ट्रक्ट् करी, अपने भीतर ही कन्स्ट्रक्ट करी, और वा नामकु जब अपन रूपको सम्बोधन

करने लगें, वासु सम्बोधन करनेके बाद अपनेकु निरन्तर ऐसो लगे हे के ये रूप वो ही हे. वो जो तादात्म्य आ रह्यो हे, जो अपनने माईन्डमें कन्स्ट्रक्ट कियो हे, वा कन्स्ट्रक्टेड रूपके साथ बाह्यरूपको तादात्म्य आ रह्यो हे वो क्लीयरकट् उदाहरण हे या बातको के अपनो नाम रूपपे हावी हो गयो हे. जा तरीकेको रूप हे वा तरीकेके रूपको अपने सामने आवे नहीं दे. बात ख्यालमें आई.

हमारे विधुजीजीकु एक वैष्णव बाहर लेके गई और टेक्सीवालेने बड़े मन्दिरमें वो पांजरापोललेनके बाहर छोड़ी. वाने कही के अब अन्दर जाओ. तो वाने कही के नहीं नहीं अन्दर लेलो ना. दरवाजा तो अन्दर हे. अब टैक्सीवालेकु ये प्रोब्लमके अन्दर घुसे तो फिर बाहर निकलनो भीड़भाड़के कारण बोहोत मुश्किल. वाने कही के भई इतनो सोही तो डिस्टेन्स् हे चले जाओ. उनने कैसे चले जायें टैक्सी करी हे तो. वाने कही के सब आदमी जा रहे हें. तो वैष्णवने कही के ये कोई आदमी हें? टेक्सीवालो डर गयो. वो सीधो बगीचामें आके छोड़ गयो. जब विधुजीजी उतरने लगे तो वो बोल्यो के बेहनजी खाली एक खुलासा करदो के आदमी नहीं हो तो कौन हो आप? क्या पता कौन आके बैठ गयो? वो टैक्सीवालो बोल्यो के सब आदमी जा रहे हें तो आपकु आपत्ति क्या हे? वो साथमें वैष्णव हती वा बिचारीको भाव हतो के ये कोई आदमी थोड़ेही हें. ये तो बेटीजी हें. वाने कही के आ कोई माणस छे. वो टैक्सीवालो डर गयो के माणस नथी तो कौण छे. लई जाओ अन्दर. बगीचा तक अन्दर आके छोड़ गयो. विधुजीजी बाहर निकल रहे थे तो वाने पूछी के बेहनजी सिर्फ एक बातको खुलासा कर दो के आप आदमी नहीं हो तो हो कौन?

अब ध्यानसु देखो के रूपपे नाम भारी पड़ रह्यो हतो जब प्रश्न कर दियो, शंका कर दी के ये माणस नथी, तो आदमी घबरा जाये के ना जाने पछी कौन छे. दीख तो रह्यो आदमी पर वास्तवमें आदमी नहीं होय

तो लेनेके देने पड़ जायें ना! तो है फिर कौन?

अपन समझ सकें वा बातकु के कई बखत नाम जो हे कन्स्ट्रक्टेड नाम मने विधुबेटीजी बराबर मानव. वो अमानव जो हे वो विधुबेटीजीके रूपपे भारी होजाये. यदि अमानव हे तो याको तालमेल कैसे बैठानो. ये जो आपसमें एक दूसरेको दबानेकी प्रक्रिया हे सृष्टिमें वो प्रक्रियाके तेहत द्युलोक एक अलग भयो हे. वो प्रक्रिया सृष्टिमें भूमिपे चल रही हे. द्युलोकमें चल रही हे.

वाकेलिये वहां एक स्पेन्तामेइन्यु प्रकट होवे हे. और एक आंग्रेमेइन्यु. अब ये स्पेन्टा जो हे, ये वैसे तो संस्कृताईजेशन करो तो स्फीतिमके बोहोत पास जा रह्यो हे. उतनो पास नहीं जा रह्यो हे, के फोनेटिकली अपन यो मानें, के स्फीत जो हे वो स्पेन्ता भयो. पर मीनिंगवाईज् स्पेन्ताको मतलब स्फीत हे.

एक मन्यु हे. अब मन्यु तो संस्कृत शब्द हे. हर व्यक्ति जो संध्या करे ‘‘**मन्युरकार्षी नमोनमः. मन्युकर्ता नाहंकर्ता एष ते मन्योः मन्यवे स्वाहा**’’. एक तरेह के दो मेइन्यु हें और मन्यु शब्द पाछे मनसु पैदा भयो हे. मनको डिराइवेटिव हे मन्यु. जैसे मनु शब्द मनको डिराइवेटिव हे ऐसे मन्यु शब्द भी मनको डिराइवेटिव हे. एक स्फीत माईन्ड हे.

स्वाहा’’. एक तरेह के दो मेइन्यु हें और मन्यु शब्द पाछे मनसु पैदा भयो हे. मनको डिराइवेटिव हे मन्यु. जैसे मनु शब्द मनको डिराइवेटिव हे ऐसे मन्यु शब्द भी मनको डिराइवेटिव हे. एक स्फीत माईन्ड हे.

दूसरो आंग्रेमेइन्यु हे. वो अर्थकी तरेहसु अंग्रेजमति नहीं हे. पर उग्रमति हे. एक उग्रमति हे एक स्फीतमति हे. वो जो उग्रमति हे वो पृथिवीमें प्रकट भई हे. अपनो थोड़ोसो महाप्रभुजीके एन्गलसु देखो ‘‘**विद्याविद्ये हरेर्शक्ती माययैव विनिर्मते ते जीवस्य नान्यैस्य दुःखित्वम् चाप्यनीशिता**’’. सारो दुःख और सारी अनीशिता इन दो

मेइन्युके या विद्या अविद्याके जो आपसमें संहर्ष चल रहे हें उन संघर्षके कारण अपनेमें दु:ख और अनीशिता प्रकट हो रही हे. मोको एक शेयर याद आ गयो – अपनी नज़रोंमें गुनहगार न होते क्योंकर दिलही दुश्मन हे मुखालिफके गवाहोंकी तरह. क्योंके दिल अपनो दुश्मन हे के कभी वामें स्पेन्तामेइन्यु प्रकट हो जाये और कभी आंग्रेमेइन्यु प्रकट हो जाये. कभी विद्या प्रकट हो जाये. कभी अविद्या प्रकट हो जाये. लाचारी मनुष्यकी ऐसी हे के अविद्याकु निवृत्त करनेके लिये विद्या चईये हे. और वा विद्याकु पाछी अविद्या चईये.

वो जो मैंने कल आपको बात बताईके पञ्चपर्वा विद्यामें सु एक भी विद्या ऐसी नहीं हे के जाको पंचपर्वा अविद्यामेंको कोई स्टैन्डिंग सपोर्ट नहीं चईतो होय. ‘‘**यस्तद्वेदोभयं सह यस्तु विद्यामविद्यां च**’’. ब्रह्मकु विद्या और अविद्या दोनोंके साथ देखे. ‘‘**अन्ध:तम् प्रविश्यन्ति ये अविद्याम् उपासते. ततो भूय इव तमो य उ विद्यायां रत**’’. केवल अविद्यामें रत अन्ध:तममें जायगो पर केवल विद्यामें रत वासुभी ज्यादा घोर अन्ध:तममें जायगो. यह उपनिषद् केह रह्यो हे.

तो अपनेकु समझ कैसी होनी चईये? यस्तु विद्यामविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह अविद्यया मृत्युर्तीत्वा विद्ययामृतमश्नुते. अविद्या और विद्या दोनोंको एक रोल हे भगवानने जो सृष्टिमें पैदा कियो हे भूलोकमें वो आंग्रेमेइन्यु और स्पेन्तामेइन्युको रोल हे.

वाके साथ बीचमें एक अरमाईती भी हे. अब वो पारसीबाबा केह रह्यो हे के ये लक्ष्मी हे. अरमाईतीको संस्कृताईजेशन आर्यमति. आर्यमति जो हे वो अपनी लक्ष्मी हे. तो पारसीबाबा केह रह्यो हे के वो जो आर्यमति हे वो विष्णुकी लक्ष्मी हे. अपनेको लगे के विष्णु वहां बैठ्यो भयो हे और वाकी लक्ष्मी यहां कहांसु आ गई? ध्यानसु देखो के अपन भी केह रहे हें के लक्ष्मी तो सागरमेंसु प्रकट भई हे चन्द्रमाकी बेहन

हे. वाने सागरमेंसु प्रकट भई लक्ष्मीने और कोई देवके बजाय विष्णुके कंठमें वरमाला डाली. विष्णुको माला डाली करके वो वैकुण्ठाधिपतिकी स्वामिनी भई हे.

अब वो बेसिकली अपने या भूलोकके सागरमेंसु प्रकट भई आर्यमति हे. वो आर्यमति जामें होय वाको स्पष्ट प्रमाण क्या हे वाको ध्यानसु समझो. श्रीपतिके तिरुपति भले वहां बिराजतो होयगो दक्षिणमें, पर हर नामके साथ श्री तो लगे हे के नहीं? वो कौनसे एक्स्पैक्टेशनसु लगे हे श्री? मने कोईकु बदमाश कहोगे तो बदमाशी करनेमें वाको संकोच हट जायगो. पर कोईकु सज्जन कहोगे पेहलेसु ही तो बदमाशी करनेमें वाको थोड़ी तो लज्जा आयेगी ना! पेहलेसु ही हरेकको श्री श्रीमति सुश्री कहो तो वाको लगेगो के अब बदमाशी करनेमें अनार्यमति वापरनेमें थोड़ो संकोच तो आयेगो ना के भई केह क्या रहे हो? श्री केह रहे हो. श्रीयोगेश तो फिर भी कोई भी अश्रीको काम करनेकेलिये वाको तकलीफ होयगी. वो बात अपनेकु मज़ाककी लग रही हे पर पारसीमें अह्रीमना भी कह्यो गयो हे अंग्रेमेइन्युको.

अह्रीमना मने अश्रीरूपमन तो आंग्रेमेइन्यु जो हे पाछो अह्रीमना हे, अश्रीमन हे. अनार्यमतिको रूप हे. इन सब बातनकी जब अपन अलगसु देखें तो अपनेकु लगे के अपनेसु कौनसे अर्थमें ये बात अलग जा रही हे, सिवाय एक असुर शब्दके. सो भी मूलमें वो ऐसो नहीं हतो. अपने यहां इन्द्रकु वृत्रघ्न कह्यो गयो हे. उनके यहां वैरथ्रेग्न शब्द आयो हे. कितनो सन्निकट हे?

जो बात बतानो चाह रह्यो हूं आपको खास. ये अमृतता और स्वरतता ये ब्रह्मवादकु समझनेकी की कन्सेप्ट हे. ऊपर जो मैंने आपको बतायो. वो गल्तीसो मेरी थोड़ो ह्वरतातकेलिये स्वरतात निकल गयो. पर वास्तवमें वाको अर्थ हे सर्वता. अमृतता और सर्वता. सर्वकाम्, सर्वगंध, सर्वरूप, सर्वरस: ब्रह्मकु कह्यो हे. वो सर्वता ऐतदात्म्यम् इदम् सर्वम् स

आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो. वो सर्वताकु ह्वरतात कह्यो गयो हे. और अमृतता ''**ऐतदात्म्यम् इदम् सर्वम् स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो अमृत:**'' वहां वाकु अमृत भी कह्यो जा रह्यो हे. ''**य: सर्वेषु तिष्ठन् सर्वान् अन्तरो यमयति यं सर्वे न विदु: ऐषत आत्मा अन्तर्याम्यामृत**'' वाकी एक सर्वता हे और अमृतता भी हे.

अब ये जो पैराडौक्स् हे के सर्वतो अमृत नहीं हे सर्व तो मर्त्य हे. ये देखो ब्रह्मवादकी कुंजी हे. की कन्सेप्ट हे ब्रह्मवादकु समझवेको. सब कछु मर्त्य होते भये भी हे तो वो वाको ही रूप. कौनको? अमृतको रूप. अमृत जो हे वो सर्वमर्त्यरूप बन्यो हे. ये तो ब्रह्मवाद लप्पधप्प आ गयो. अमृत जो हे वो सर्वरूप बन्यो हे. सर्व मर्त्यरूप बन्यो हे. जाकु अपनने ''**द्वै वाव ब्रह्मणो रूपो मूर्तं चैव अमूर्तं, मर्त्यं च अमर्त्यंच स्थितंच सच्च त्यच्च**''. तो अमृत भी हे वो और मर्त्य भी हे. तो सर्वतामें वो सारी बात आ रही हें जो उपनिषद इन्क्लूड कर रहे हें . ''**सच्च त्यच्चाभवत्. निरुक्तं चानिरुक्तं च. निलयनं चानिलयनं च. विज्ञानं चाविज्ञानं च. सत्यं चानृतं च सत्यमभवत्**''. और वो सर्वता मर्त्यरूपी जो अपोजिट नेचरकी सर्वता हे वो भी बन्यो हे अमृत ही. वो भी वाको एक फॅसेट हे.

अहुरमज्दाके ये दो फॅसेट हें के वो अमृत भी हे और वो सर्वरूपमें मर्त्य भी बन रह्यो हे. याको महाप्रभुजी क्या केंहगे के तो विरुद्धधर्माश्रय हे. सर्व हे तो अमृत नहीं हो सके हे. अमृत हे तो सर्व नहीं हो सके हे. ये अपनी लौजिक अपनेकु कहेगी. महाप्रभुजी केह रहे हें के या लौजिककु एप्लीकेशन वहां नहीं हे. ''**न हि विरोध उभयं भगवति अपरिगणित गुणगणे ईश्वरे नवगाह्यमाहात्म्ये अर्वाचीनअविकल्प वितर्क विचारप्रमाणाभास कुतर्कशास्त्र कलिलान्तर करणाश्रय दुरवग्रह वादिनां विवादानावसरे**'' वो विवादके अनअवसर

अहुरमज्दामें सर्वता और अमृतता विरोधी नहीं हें. वा डिवाइडर लाईनके नीचे भूलोकमें ये अह्रीमना आंग्रेमेइन्यु स्पेन्तामेइन्यु एक दूसरेके विरोधी हें. या एन्गलसु जा बखत अपन देखें तो कमसु कम मेरो मन तो कबूल करे के ज़रथूष्ट्र श्रौत हतो के अश्रौत हतो यामें मोकु संदेह हो सके है पर ब्रह्मवादी हतो यामेंतो मोकु कोई संदेह नहीं हे. निश्चित ब्रह्मवादी हतो.

ये संक्षेपमें अपनी उपक्रमकी बात, ब्रह्मवादके जो मल्टीपल फॉर्म हें वो मैंने आपको बताई. याके बाद अब अपन पेपर लेंगे. पेहलो पेपर हे आजको, थोड़ो विस्तार ज्यादा हो गयो वाकी क्षमा चाहू् क्योंके ये थोड़ो टेक्नीकल विषय ऐसो हे के वाको प्रोपर एक्स्प्लेनेशनके साथ नहीं समझाओ तो क्योंके भाषा अपनी नहीं हे, केटेगिरीस् अपनी नहीं हें, करके कन्फ्युज़न ज्यादा बढ़ जाये.

* * *

चतुर्थ दिवसीय उपक्रम

गो. शरद् : ब्रह्मसंगोष्ठी चतुर्थदिवसके आरम्भ एवं समापनका दिन हे. मंगलाचरणसु आरम्भ करे हें.

गो.श्या.म. : आज बोहोत हर्षको विषय हे परम स्नेही और हमारे दलाईजी पूना युनिवर्सिटीके संस्कृतका विभाग हे वाके अध्यक्ष हें. हमारे शरदबाबाके सब शिविरनमें हर बखत जैनधर्मको प्रतिनिधित्व इनने कियो हे और बोहोतही अच्छेसु अच्छे पेपर अच्छीसु अच्छी चर्चामें इनको हर बख्त सक्रिय सहयोग रह्यो हे. अपनी या संगोष्ठीकी तरफसु झाला इनको स्वागत करेगो.

और जैसेके अपनने निश्चय कियो थो ब्रह्मवादके हमारी वैसे लिंग्वाफ्रैन्का (Lingua franca) ब्रजभाषा हे, पर हिन्दीमें, अंग्रेजीमें, गुजरातीमें जिसमें भी बोला जाये बोल्यो जा सके हे, भाषा कोई रुकावट नहीं हे. सो अपनने जैसे नक्की कियो थो, निर्णय कियो थो, वा क्रममें अभी तक अपनने अपोह्यब्रह्मवाद और अभिधेय ब्रह्मवादको स्वरूप देख्यो. खासकरके बौद्ध और ज़रथुष्ट्र. वा परम्परामें शांकर और रामानुज देखे. केवल ब्रह्म अपोह्य अपोहनविधिसु ही बोल्यो जा सके हे और केवल ब्रह्म अभिधानविधिसु ही बोल्यो जा सके हे, वो जो फॉरमेट् ब्रह्मवादके हते वो अपनने देखे.

जैसेके मैंने आपको बतायो के वेदान्तदेशिकने वामें एक सूझ अपनी बताई. क्योंके अन्तमें श्रुतिभी नेति नेति केह रही हे तो अपोहन तो कर रही हे. वेदान्त जो हे वो श्रुतिके वचनके व्याख्याकेलिये प्रवृत्त भयो पर शास्त्रत: कोईभी वेदान्ती अपनेकु वेदान्ती केहके अपोह्यके साथ उतनो द्वेष तो नहीं कर सके के जब श्रुति ‘‘**नेति नेति नेति नेति नेत्यन्यदस्ति**’’.

तो अपोह्यको रोल वेदान्तमें तो हे. शब्दत: अपन मान्य नहीं करें, वो तो ठीक हे बौद्धनके साथ थोड़ो झगड़ा हे वा लिये. पर फन्क्शनली तो वो अवेलेबल हे श्रुतिमें और वेदान्तमें. वाको अपन इन्कार नहीं कर सकें.

पर शांकरनने जो स्टेन्ड लियो के वासु अपोह्यही हे वो, वो अर्थ रामानुजकु मान्य नहीं हतो करके वेदान्तदेशिकने कही के "**परिच्छित्यभावप्रयुक्ता**" वो परिच्छित्यभाव सु प्रयुक्ता हे. "**स्वयम् अभिद्ध वाच्यत्वं वेदवांच स्वयमभिद्धति ब्रह्मनो अनुश्रवान्ता**" प्रतिपादिका श्रुति हे वो ब्रह्मके वाक्चित्ताऽगोचरताकी प्रतिपादिका नहीं होके ब्रह्मके परिच्छेद के अपोहनकी वाचक श्रुति हे.

वो बात अपन देख सके हें के बादरायणसूत्रमें भी "**प्रकृतैतावत्वं प्रतिषेधति ततो ब्रबीति च भूय:**". ये बात कही हे और भागवतमें भी ये बात बताई के " **मां विधत्तेऽधत्ते मां विकल्प्यापोह्यते त्वहम्**". तो अपोह शब्दसु अपने वैसे बाप मारेको वैर तो नहीं हे क्योंके अपनो भागवत सर्वपरमप्रमाण और संशयनिराकर्ता शास्त्र हे भगवान् केह रहे हें '**तो मीच आहे**' जाको तुम अपोहन कर रहे हो. तो अपन समझ सकें के या शब्दसु या शब्दकी जो प्रक्रिया हे वा प्रक्रियासु दोनोंसु अपनेको द्वेष नहीं हे.

अब अपन वाको हाईप नहीं करें वो तो बुद्धधर्मके साथ झगड़ाके कारण. उनने भी अपने साथ कियो हे तो अपनभी उनके साथ कर रहे हें. ठीक हे झगड़नो थोड़ो अच्छी बात हे. "**नैतद एवं यथाऽऽत्थ त्वं यदहं वच्मि तत्तथा एवं विवदतां हेतुः शक्तयो मे दुरत्यया:**". ये असलमें तुम्हारो अपराध नहीं हे ये मेरी शक्तिकी लीला हे. ये भगवानकी शक्तिकी लीला हे के अपन झगड़ रहे हें तो झगड़नो चईये. व्यर्थमें भगवानकी शक्तिको स्वीच ऑफ क्यों करनो! तो भगवानकी शक्तिको जो स्वीच हे

वाको ऑन रखनो. जब तक भगवान करनो चाहें तो करने दो अपन कायकु ऑफ करें! और भगवान या सब स्वीचनको ऑफ करने जायेंगे तो वाको मतलब प्रलय करनो हे. तो भगवान जा बखत या स्विचको ऑफ करें हें जब उनको प्रलय करनो होय. ये अपनो सिद्धान्त हे लीलाके अन्तर्गत. वामें अपन ये बात अच्छी तरेहसु समझ सकें हें के अपनेलिये ब्रह्म अपोह्य भी हे और अभिधेय भी हे. वो बात महाप्रभुजीने स्वीकारी हे के ''**ब्रह्मवादे निरुक्तिस्तु न वक्तव्या**''. मतलब ब्रह्म अनिर्वचनीयम्.

अब वो शंकराचार्यजीही नहीं केह रहे हें पर महाप्रभुजी भी केह रहे हें. ब्रह्मवादमें क्यों निरुक्ति संभव नहीं हे? क्योंके निरुक्ति करनेकेलिये पश्चिमी क्राईटेरिया देखें तो '**जीनस् कम् डिफरेन्सिया**' हे निरुक्तिको पैरामीटर. कोई सामान्य लक्षण बोधनपूर्वक कोई व्यावर्तक लक्षण बताओ. तो लक्षणवाक्य केहवावे. अपने यहां वाको ऐसो कह्यो गयो हे ''**असाधारणधर्मबोधकं वाक्यं लक्षणम्**''. जो अतिव्याप्ति अव्याप्ति और असंभव दोष रहितं असाधारणधर्म बोधकं वाक्यं लक्षणम्. असाधारणब्रह्मको धर्म कुछ हे ही नहीं क्योंके कोई चीज होय ब्रह्मके अलावा तो तो ब्रह्मका असाधारण धर्म होय; जितनो भी हे सर्वनामा, सर्वरूप, सर्वकर्म तो जो भी धर्म हे वो सब ब्रह्मके धर्म हें तो ब्रह्मको कोई असाधारण धर्म तो हो ही नहीं सके. तो ब्रह्मको लक्षण हो कैसे सके?

पर हो नहीं सके हे या सिद्धान्तको अपन पकड़के चलें तो प्रोब्लम क्या हो रही हे? के श्रुति खुद केह रही हे के ''**यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तद्विजिज्ञासस्व तद् ब्रह्मेति**''. श्रुति तो ये लक्षण दे रही हे. तो अपन केंह के अपनकी खोटी बुद्धि यामें मत चलाओ ब्रह्म अवाच्य भी हे, अपोह्य भी हे और वाच्य भी हे. ये वाल्लभ स्टैन्ड हे.

कल अपनने विस्तृत चर्चा करी के वाच्य भी हे और अवाच्य भी हे; अपोह्य भी हे और अभिधेय भी हे. ये कोईको विरुद्धधर्माश्रयताके ढंगसु समझमें आतो होय तो वैसे समझा देंगे. कोईको विरुद्धधर्माश्रयता केहनेपे लग रह्यो हे के तुम दार्शनिक भाषा नहीं बोल रहे हो, लौजिकल भाषा नहीं वापर रहे हो, तुम मिस्टिकल भाषा वापर रहे हो तो अपन कहेंगे ऑलराईट विरुद्ध नहीं हे भिन्न हे. कोईको भिन्नता पे भी द्वेष आतो होय तो अपन कहेंगे के सर्वरूप सर्वकर्मा हे. ''**न हि विरोध उभयं भगवति अपरिगणित गुणगणे ईश्वरे अनवगाह्यमाहात्म्ये अर्वाचीन विकल्प वितर्क विचारप्रमाणाभास कुतर्कशास्त्र कलिलान्तर करणाश्रय दुरवग्रह वादिनां विवादानावसरे**''. चलो खतम करो बात. अपने यामें व्यर्थमें संकोच नहीं करनेको. तुमको जैसे समझमें आवे वैसे तुमको हम समझाने तैयार हें. क्योंके हम वाको समझे हें लक्षणविधिसु नहीं हम वाकु समझें हें रेशनिलिस्ट जैसे हर चीजको डिफाईन् करें और समझ जायें और लक्षण नैयायिक लोग समझा दें के लक्षण समझ जाओ तो तुमको समझमें आ जायेगो. अपनो वा बारेमें दुराग्रह नहीं हे.

अपन यों भी नहीं केंह के लक्षणसु समझमें नहीं आयेगो. अपन वाको ओपन सीक्रेट रखें के लक्षणसु समझमें आतो होय तो लक्षणसु समझमें आ जाये. ''**लक्षणप्रमाणाभ्यां वस्तु सिद्धि**''. तुमको लक्षणसु समझमें आतो होय तो लक्षणसु समझ जाओ. प्रमाणसु समझमें आतो होय तो प्रमाणसु समझ जाओ. प्रमाणसु भी समझमें नहीं आतो होय, तो आन्तरिक अनुभूतिसु इन्ट्यिुशनसु अन्त:स्फुरणासु समझमें आतो होय तो अन्त:स्फुरणासु समझ जाओ.

अपनो सिद्धान्त मूलमें ये हे ''**नायमात्मा प्रवचेनन लभ्यो न लक्षणेन प्रमाणेन वा न मेधया बहुनाश्रुतेन यमैवेष वृणुते तेन लभ्य: तस्यै आत्मा विवृणुते तनुस्वाम्**''. जाके सामने वो प्रकट होनो चाहे वाकु कोइभी विधिसु समझमें आ जाये. वाकु कोई भी विधिसु समझमें

आ जाये वाकी रेन्ज् अपनने क्या सोची हे लीलात्मिका रेन्ज – ‘‘**गोप्य: कामात् भयात् कंसो द्वैषात् चेदयो नृपा:. सम्बन्धाद् वृष्णय: स्नेहाद्यूयं भक्त्या वयं विभो**’’. वो यदि रिवील होनो चाहे तो तुमको कामसु भी समझमें आयेगो. कामसु सब भ्रष्ट होवें हें.

भगवान् खुद आज्ञा करें के ‘‘**काम एष क्रोध एष रजो गुण समुद्भव:. महाशनो महापाप्मा: ध्यैनंमहि वैरिणम्**’’. तुम्हारी अक्कल तुम्हारो जीवन सबको दुश्मन काम हे. वो अपने दुश्मन हें पर भगवान यदि कोईके सामने अपने आपको प्रकट करनो चाहे तो अपने कामभावसु भी वो अपनेकु समझमें आ सके हे. अपने द्वेषभावसु भी वो अपनेकु समझमें आ सके हे. ‘‘**गोप्य: कामात् भयात् कंसो द्वैषात् चैद्यद अधीरधी:**’’. कुछ नहीं होय तो तटस्थ वृत्ति रखनी, शान्त वृत्तिसु सम्बन्धाद् वृष्णय:. सम्बन्ध जुड़ गयो तो समझमें आ गयो. और भक्तिसु भी समझमें आ सके हे. भगवानकु यदि अपने आपकु रिवील करनो हे तो ये बैरियर नहीं हें. बैरियर अपने हें. अपनने बैरियर बनाये वामें अपन कैद हो गये हें. वा बैरियरमेंसु जेलरकी तरेह हर जो कैदी हे वो जेलमें बन्द हे पर जेलर तो वा सेलमें घुस भी सके और बाहर भी आ सके. जेलरको जा बख्त कम्युनिकेट करनो होय तो जेलके सेलमें लग्यो भयो ताला वाकेलिये ताला नहीं हे. वो जो कैदी हे वाकेलिये ताला हे.

ये काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, मद, मात्सर्य, अज्ञान, बड़ी बड़ी लिस्ट बना सके हें वो सब तालायें अपनी बुद्धिकी सेलमें लगे भये ताला हें. वो जेलर जब चाहे ताला खोलके अपनेसु कम्युनिकेट करनो चाहतो होय, दोस्ती करनो चाहे, साथमें दो चार चायके प्याला भी पीनो चाहतो होय, तो जेलर कैदीके साथ पी सके हे.

अपनो आखो सेटअप या ढंगको हे. या ढंगको होनेके कारण अपन वाकु अपोह्य भी मान रहे हें और अभिधेय भी मान रहे हें. ये

वाल्लभ दृष्टिकोणको या जो तीसरी केटेगिरी हे, वा सेटअपमें अपनो श्रौत ब्रह्मवाद हे. याई तरीकेको, निश्चिततया अब अपन वाको श्रौत तो नहीं केह सकेंगे, पर मिस्रको जो भी धर्म हतो वा धर्ममें भी ब्रह्मवाद कैसे हतो वो थोड़ोसो आज अपनेको समझनो चईये.

‘‘**यमेवैष वृणुते तेनलभ्य:**’’. जाको वो समझानो चाहे हे, वाके वो उपनिषद् वामें ‘‘**तन्तु औपनिषदं पुरुषं पृच्छामि नावेदविद् मनुते तं बृहन्तम्**’’, ऐसे वेद केह हे. जो वेद नही जाने वाकु समझही नहीं आयेगो के क्या हे ब्रह्म. ये ताला कौनकी बुद्धिपे लग्यो हे, अपनी बुद्धिपे. वो ताला ब्रह्मपे नहीं लग्यो हे. तो ब्रह्म वाको ताला खोलके यदि ईजिप्शियनस्कु समझानो चाहतो होय के भई मैं ब्रह्म ऐसो हूं तो अपन वामें ओब्जेक्शन् नहीं कर सके हें के मिस्रकु ब्रह्म समझमें नहीं आयेगो.

ब्रह्मवादके संदर्भमें ईजिप्शियन् (मिस्र)मत :

मूलमें ये ब्रह्मवादकी रेन्ज समझानेकेलिये अपने ईजिप्शियन् ब्रह्मवादको थोड़ोसो रूप समझनो जरूरी हे. जासोंकि अपन ब्रह्मकेलिये ब्रह्मवादकुही ताला न बना दें. क्योंके कई बखत अक्सर ऐसो होवे के जो ताला अपनकु प्रोटेक्ट बनानेकेलिये बनायो वो ताला अपन अपने गलेमें बांधनेके बजाय प्रोटेक्टरके गलेमें बांध दें. वो ऐसी स्थिति होवे के वाको एक सामान्य चित्रण समझो के कोई आदमी डूब रह्यो होय, वाको बचानेकेलिये तैराक कूदे, तो डूबनेवालो तैराकको हाथ पैर बांधके ऐसो चिपक जाये के खुद भी डूब जाये और तैराकको भी डुबे दे. ऐसे ब्रह्मकु जाकु अपनी राजस्थानकी भाषामें यों कह्यो जाय के ‘‘**हाड़ा ले डूबी गनगौर**’’. तो हाड़ा तो बिचारो गणगौरको विसर्जन करने गयो पर गणगौरको वजन इतनो हतो के गणगौरको विसर्जन करते करते खुद हाड़ा भी विसर्जित हो गये. हाड़ा मने बूंदीके क्षत्रिय राजायें.

तो ऐसे ब्रह्मवादमें अपन ब्रह्मको कैद करदें श्रौत ब्रह्मवादमें तो

बिचारो ब्रह्मभी कन्फ्युज्ड् होयगो के भई कौनकु मैंने ब्रह्मवाद बतायो! कहीं अनधिकारीके सामने उपदेश तो नहीं हो गयो! सो ब्रह्मके हाथ अपनेकु खुले रखने पड़ेंगे. नावेदविद् मनुते तं बृहन्तम्. ये अपनी समझपे लगायो गयो ताला हे ब्रह्मकी सामर्थ्यपे लगायो भयो ताला नहीं हे. ये बात अपनेकु स्पष्ट समझनी चईये.

ये बात यदि अपनेकु स्पष्टतया समझमें आवे, तो अपनेकु महाप्रभुजीकी सुबोधिन्यादिके सारे अर्थ समझमें आयेंगे. ब्रह्म प्रमेयबलसु भी वेद्य हे. प्रमाणबलसु भी वेद्य हे. साधनबलसु भी वेद्य हे और फलबलसु भी वेद्य हे. ब्रह्म जा बखत केह रह्यो हे के ये फल मोकु याकु देनो हे तो वाकु कोई साधनकी दरकार नहीं हे. जाकु कह्यो गयो हे “**नायमात्मा प्रवचेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन. यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनुं स्वाम्**”. वो अपनो सारो विवरण करके वाके सामने रख दे. वाकु साधनबलकी दरकार नहीं हे. साधनबलकी दरकार वाको पानेकेलिये अपनेकु हे. प्रमाणबलकी दरकार वाको पानेकेलिये अपनी हे. वो अपने प्रमेयबलसु, वो अपने प्रमाण बलसु जाके सामने प्रकट होनो चाहे, वाके सामने प्रकट हो सके हे. करके ब्रह्मवादको ताला हे वो अपनेकु समझनो चईये. वन्स् फॉर ऑल वो अपनी समझ और अपनी साधनकी सामर्थ्यपे लगायो भयो ब्रह्मवत, ब्रह्मपे लग्यो ताला नहीं हे. पर मनुष्यकी बुद्धि खुराफाती हे ना, अचानक दास्तावस्की याद आ गयो, बुद्धिकी खुराफातके कारण. दास्तावस्की ने एक बोहोत अच्छी स्टोरी लिखी हे.

एक बुढ़ियाको बेटा मर गयो. वहांके बिशपने वा बेटाको संस्कार कर दियो. और बुढ़िया छाती कूट कूटके रो रही थी. इतनेमें एक भिखारी जैसो आदमी आयो. वाने पूछी के क्या प्रोब्लम हे? वाने कही के मेरो इकलौता बेटा मर गयो. कैसे मर गयो? दिखाओ कहां हे? देख्यो तो मर्यो भयो पड़्यो हतो. तो वाने वाको हाथ पकड़के खड़ो कर दियो के

अपनी मांको तकलीफ मत दे. खड़ो हो जा. बिशपको ईगो हर्ट हो गयो. अन्तिम संस्कार मैंने कर दियो, जिन्दो कैसे कर दियो. तुम मोकु शैतान लग रहे हो. कौन हो तुम? वाने कही के मैं क्राईस्ट हूं. बिशपने कही के क्राईस्ट हो तो हमने तो तुम्हारे नामपे ही वाको अन्तिम संस्कार कियो हे. अब तुमही या तरेहसु जिन्दो करोगे तो लोगनको अश्रद्धा हो जायेगी क्राईस्टपे. याकेलिये क्राईस्टको हंटर लगाओ पांच. बिचारे क्राईस्टकु ही वाके उत्तराधिकारीने पांच हंटरको हुक्म सुना दियो. ऐसे दास्तावस्कीने बोहोत मीठी स्टोरी लिखी हे.

हम भी वो ब्रह्मकु पांच हंटर कहीं लगावे. क्यों हमारे बिना दूसरेके सामने रिवील भयो. वो दास्तावस्कीकी स्टोरी अपनेकु रिपीट नहीं करनी चईये. अपन श्रौतब्रह्मवादी हें. वाको मजा लेनो चईये. ब्रह्म जाके सामने चाहे वाके सामने वो रिवील हो सके हे. वा फ्रेमवर्कमें अपनेकु ईजिप्शियन् ब्रह्मवाद्कु समझनेको प्रयास करनो चईये. ये वाकी रेशनल बेकग्राउन्ड नहीं हे पर इमोशनल बेकग्राउन्ड हे क्योंके अपन भक्तिवादी हें. वो भक्तिको इमोशन अपनो इतनो ऐडिक्शन् नहीं हो जानो चईये के ब्रह्मकु ही अपन वाके वाद के नाम पे पांच हंटर मार दें भक्तिके इमोशन के आवेशमें के चलो मारो पांच हंटर जैसे वो बिशप मरवा दे क्राईस्टकु के कैसे तुमने जिन्दो कर दियो? वहां क्राईस्टको उधम ही ये हतो के ‘‘इब्ने मरियम हुआ करे कोई मेरे दुःखकी दवा करे कोई’’. भगवानने वाकु भेज्यो ही या लिये हतो के मरेनकु जिन्दो कर दे. बिचारे क्राईस्टने जिन्दो कर दियो और वो बिशपको सहन नहीं होवे. तो अपन वा तरीकेकी बिशपगीरी नहीं करें. वाकेलिये ईजिप्शियन् ब्रह्मवाद भी अपने ब्रह्मवादके साथ समझनो थोड़ो सो जरूरी हे. वो मैं आपके साथ शेयर करनो चाह रह्यो हूं.

इनकी भाषा क्या हती मोकु पता नहीं हे. ईजिप्शियन आज वो भाषा नहीं बोल रहे हें जो पिरामिड्स्में लिखी गई हे. पर बरसन तक

इनने क्या लिख्यो वो चित्रलिपिमें लिख्यो होनेके कारण दुनियांको भी पता नहीं हतो. पर बेबीलोनियामें एक शिलालेख ऐसो मिल्यो के जामें कुछ ईजिप्टको भी लिख्यो भयो हतो और बेबीलोनियन भाषामें भी लिख्यो भयो हतो, आरमेनियन् भाषामें भी वो ही बात लिखी भई हती. वो स्क्रिप्ट पढ़ी जा सकी करके पेहली बार ईजिप्शियन स्क्रिप्ट चित्रलिपि पढ़ी जा सकी. वाके बाद बोहोत सारे स्कौलर्सने बोहोत सारो प्रयत्न कियो और प्राय: आज वो स्थिति हे के पिरामिडकी या उनके कफनपे लिखे भये जो उनके सिद्धान्त हें वो प्राय: पढ़ लिये गये हें जितने भी मिले हें उतने. अभी भी कोई और नये प्रकट हो जायें कुछ वो नहीं पढ़े गये होंयगे पर बोहोत सारे पढ़े गये हें. उन स्कॉलर्समें कई लोगनने बोहोत पुरुषार्थ कियो. कई तरेहसु उनको पढ़्यो हे.

पर एक स्कॉलर् हे आर.टी. रण्डलक्लार्क वाने मिथ एण्ड सिम्बौल इन् एनशियेन्ट् ईजिप्ट नामकी एक किताब लिखी हे सो मेरो सारो निरूपण यापे आधारित हे. व्यक्तिगत कोई मेरी या विषयपे जानकारी नहीं हे. या बातको खुलासा मैं पेहले ही कर दऊं. बोहोत अच्छी किताब हे. पढ़नेमें मोकु इतनो आनन्द आयो तो मोको भयो के ब्रह्मवादके बखत याको शेयर करनो नितान्त जरूरी हे. सो कुछ वो इन्गिलिशमें ट्रांस्लेटेड् वाकी बतानेके पेहले इनकी थोड़ी मॅटाफिजिकल केटेगिरी क्या हे वो बताऊंगो.

इनको ख्याल ये हे के शुरुआतमें एक ओशन, वो अपने यहां वेदमें भी कह्यो गयो हे, और वो ओशन पानीको नहीं हे, पर कैरेक्टर वाको ओशनको हे. अपने यहां भी ये कह्यो गयो हे के ‘‘**आपस्तदाग्रे समवर्तताधि**’’. पेहले आप हतो. समुद्र हतो. अपने यहां उपनिषद्में यहां तक कह्यो गयो हे, श्रुतिमें आरण्यकमें, वा ओशनमें अचानक एक कछुआ प्रकट भयो. अब अपन अपनो कछुआ सोचें ये जरूरी नहीं हे. क्योंके मैंने आपको कल याईलिये बता दियो के अपनो वेद एक तरेहकी

भाषा नहीं बोले हे. लक्षणात्मिका भाषा बोले हे. परमात्मिकी भाषा बोले हे. पोयटिकल भाषा बोले हे. सब तरेहकी भाषा बोले हे. क्योंके वेदकी प्रोब्लम ये हे के आपको समझानो.

वेदकी प्रोब्लम ये नहीं हे के वाकु कैसे निरूपण करनो. वोतो वेद कहे हे वाको निरूपण इदमित्थं तया हो नहीं सके हे. नेति नेति. आपकु कैसे समझानो; जा तरेहसु आपको समझमें आ सके वा तरेहसु समझाये. तो समुद्रमें कछुआ ही तो आयेगो और क्या आयेगो? कोइ बकरा थोड़े ही आयेगो समुद्रमें. तो वा ओशनमें एक कछुआ प्रकट भयो. अपने यहां वाको नारायण कह्यो जाय. आपो नारा इति प्रोक्ता. नारा जाको अयन हे वो नारायण हे. अपनने ब्रह्माण्डमूर्ति नारायण कह्यो. वो नारायणमें नरको मतलब जो हे जो नारासु उदभूत होय वो नर. ‘‘**नराणाम् अयनं नारायण नारा अयनं यस्य**’’ – ऐसे दोनों वाकी व्युत्पत्ति हो सके हे. तो बहुव्रीहि भी हो सके वहां. तत्पुरुषभी हो सके. वो जो नारा कछुआकी तरेह प्रकट भयो वो नारायण हे. इनके यहां जस्ट् पॉसिबल हे क्योंके उनके यहां जो नदी हे नाईल, वाके किनारे बसी भई हे लोगनके. और क्यों नहीं इनको समुद्र मिल्यो या समस्याको चिंतन करनेसु यहां कोई फायदा नहीं हे.

अपनेकु क्यों समुद्र दीख्यो? वैस्टर्न स्कॉलर्स् केंह हें के भई ये सब ऊपरसु आर्यन्स् लोग यहां आये. ऊपर तो कहीं समुद्र हतो नहीं तो उनको समुद्र क्यों दीख्यो ऋषि आर्ष दृष्टा हें वा लिये दीख्यो, वो विचारो वामदेव हल्ला मचावे अमरीकामें के सौ खलासी चलावे इतनी बडी नाव चल सकें इतने बड़ी समुद्रको वेदके ऋषीनकु ज्ञान हे. तो आर्य ऊपरसु आये तो सौ खलासी चलावे इतनी बडी नाव वाले समुद्र हते कहां, ये तो बताओ? अपन केंह के वो आर.एस.एस. को माउथपीस हे. ‘‘**को अद्धा वेद क इव प्रोवाचत कुत आजाता कुत इयं विसृष्टि योस्याध्यक्ष परमे व्योमन सो अंग वेद यदि वा न वेद**’’ जवाहरलाल

युनिवर्सिटीमें वाको प्रवचन होवे नहीं दे. और वो सब जगह जगह जा जाके केह के भई तुम सुनो तो सही, समझो तो सही, के सौ खलासी चलावें नाव चलती थी, इतनी बड़ी के सौ खलासी जा नावको चलावें, इतनी बड़ी नाव आर्ययनको मिली कहां वहां? तो ये लोग कहीं न कहीं समुद्रके किनारे बसनेवाले होंयगे. अब ये तो इतिहासके गर्भमें छुपी भई बात हे पर हकीकत क्या हती? ऐसे ये भी इतिहासके गर्भमें छुपी भई बात हे के ईजिप्शियन लोगनकु समुद्र क्यों नहीं दीख्यो? कुछ तो कारण होयगो.

वो केंह के वो पानीकी नदीमेंसु अचानक एक बत्तख प्रकट भयो. अब कछुआ प्रकट भयो के बत्तख प्रकट भई, या बातको अपन झगड़ा करेंगे तो कछुआवाद या बत्तखवाद आयेगो, ब्रह्मवाद नहीं आयेगो. अब कछुआ होय के बत्तख होय, जो भी होय, पानीमेंसु कुछ प्रकट भयो या अर्थमें आप वाको देखोगे तो उनके यहां भी वोई मेथड् हे विवरणकी जो अपने यहां मेथड् हे. पर केहनेको जो थ्रस्ट् हे कोई तरहको केओस हतो वा केओसमेंसु कॉसमॉस करनेवालो कोई फिनोमिना प्रकट भयो. बात समझमें आई ना!

वो कछुआ भी जो हे वो क्रियेटर हे. और वो बत्तखभी जो हे उनके यहां बोहोत सारी पिरामिड्की दीवारें हें, उनपे बत्तखके बोहोत अच्छे अच्छे चित्र अंकित हें. जैसे अपने यहां नारायणके चित्र होवें. अपनने तो अपने यहां कच्छपावतार भी मान लियो के वो सारे मेरूको अपनेपे टिकाके बैठ्यो भयो हे. अपनकु तो कोई ज़ेनोको डर ही नहीं लगे के मनुष्यने भगवानकी मूर्ति बनाई या लिये भगवान मनुष्याकार भयो. अपनने तो मनुष्य होते भये भी भगवानकु मीनाकार भी बनायो हे. कच्छपाकार भी बनायो हे. वामनाकार भी बनायो हे. हंसाकार भी बनायो हे. अपन तो सर्वाकार वाकु मान रहें हें. सर्वनामा, सर्वरूप. तो अपनेको ये प्रोब्लम नहीं हे. उन वैस्टर्न स्कौलर्सकी ये बोहोत बड़ी

समस्या हे. कछुआ बत्तख होनेमें समझो के बत्तखावतार भयो तो अपने बापको क्या गयो? अरे जब कच्छपावतार हो सके भगवानको तो बत्तखावतार क्यों नहीं हो सके भगवानको? मयूरावतार हो सके हे, हंसावतार हो सके हे, हंसमें और बत्तखमें कितनो फर्क हे? थोड़ीसी टांग लम्बी हे तो हंस हे और टांग थोड़ी छोटी हे तो बत्तख हे. बाकी तो वो एकही वेरायटीके प्राणी हे दोनों.

मैं मजाकमें बात नहीं कर रह्यो हूं. मैं बात वो कर रह्यो हूं के अपनी ब्रह्मको जो ताला मारनेकी आदत हे वा ताला खोलनेकी बात कर रह्यो हूं. अपनेकु वो ताला खोलनेको हे के जा तालामें अपनने ब्रह्मकु कैद कर रख्यो हे. भागवत खुद केह हे के **''गोपानां स्वजन:''** वो हंस रहे थे यालिये स्वजन हें. तो अपन यदि भगवानको अपनो स्वजन मानते होंय तो हंस्यो जा सके हे. दोस्तनमें हंसी मजाक नहीं भई तो कौनमें होयगी? अपनो भगवान स्वजन हे. गोपानां स्वजन: अपन हंस सकें, बोहोत गम्भीर बात नहीं हे. ज्यादा नहीं हंसनो.

वो बत्तख उनके यहां बोहोत प्रोमिनेन्ट् हे. अब मोकु निश्चित नहीं पता हे के वाको ईजिप्शियन नाम क्या हतो? वाके लिये डायक्रिटिकल मार्क दिये नहीं हें रेण्डलने और वाको नाम आतुम हे. अब यदि या बत्तखको नाम **'आतुम'** हे तो अपनी आत्माके कितनो सन्निकट हे. उपनिषद केह रह्यो हे के **''आत्मैवेदम् अग्र आसीत''**. वो बत्तखको नाम यदि आतुम हे आत्मा हे मतलब सारे सृष्टिकी आत्मा वो बत्तख हे. वाको नाम आतुम हे. डायक्रिटिकल मार्क नहीं दिये हें और अंग्रेजीके लफड़ा ऐसे हें, के आतुमको उच्चारण एटम् भी हो सके हे, अतुम भी हो सके हे, आतुम भी हो सके हे. अब डायक्रिटिकल मार्क नहीं दिये होनेके कारण वाको उच्चारण कुछ भी हो सके हे और इंग्लिश भी उच्चारण करें वाके लिये यह निश्चित नहीं हो सके हे के ईजिप्शियन् उच्चारण वाको क्या हतो. पर जो भी उच्चारण होयगो एटीयुएम्. अब वो अतुम हे,

आतुम हे, ऐटुम हे, आटुम हे; जो भी होय कुछ भी वाके वेरियेशन होंय अपनी आत्माके तो बोहोत सन्निकट हे. इतनो तो अपन देख सकें. जो औपनिषदिक कन्सैप्ट हे. आत्मैवेदम् अग्र आसीत. मेरी बात ख्यालमें आई ना! और वो Atum was creator. So he proceeded to playing with self. आत्मरति. आत्माराम, आत्मरति, आत्मक्रीड, ‘‘**सनु कस्मिन् प्रतिष्ठित: स्वे महिम्नि प्रतिष्ठित:**’’. तो ये पिरामिडके विधानपे लिख्यो भयो लेख हे, पिरामिडके ६२७वें शिलालेखमें ये लिख्यो हे Atum was creator. So he proceeded to playing with self in Haliopolice. Haliopolice को मतलब पुर होवे हे उनके यहां. हेलियो अपने यहां केंह के ‘‘**तेसुरा हेलयो हेलयो इति वदन्त पराब भूवुः तस्मान् नाप बभाषित वै**’’. अपन यों समझ रहे हें के हेस्यो हेस्योको वो हेलयो हेलयो कर रहे हें. और वो पेहलीबार प्रकट भयो हे, हेलियोपोलिसमें. अब हेस्योपोलिस कहो के हरिपुर कहो कहीं न कहीं कुछ तो रिजेम्ब्लेन्स् आ रह्यो हे. हेलियोपोलिसमें वो प्रकट भयो. अपन यदि अपने ढंगसु वाको समझनो चाहें तो हरिपुरमें प्रकट भयो क्यों नहीं केह सकें? अपने यहां भी कह्यो हे ‘‘**पुरश्चक्रे द्विपद: पुरश्चक्रे चतुस्पद: पुरः स पक्षी भूत्वा पुर: पुरुषमाविशद्** ’’. अब वो हेलियोपोलिसमें प्रकट भयो.

सारे विवरणके जो फॅक्टर्स् हें वो अपने उपनिषद्के क्रियेशनके जो फॅक्टर्स हें उनसु कैसे टेली हो रहे हें. कैसे पैराफ्रेसिंग कर रहे हें, सो अपनेकु लगे. मैंने ये सारो जो टैक्स्ट् पढ्यो तो मेरे माईन्डमें निरन्तर उपनिषदकी पैराफ्रेसिंग आती रही के या वचनकु कौनसे उपनिषदके वचनसु टैली करनो. मेरे मनमें ये आती रही के इन शिलालेखनके कोई लेख ऐसे नहीं हें के जाकी पैराफ्रेसिंग अपन उपनिषदके वचनसु कर न सकें. ये याकी ब्युटी हे. या तरेहकी पैराफ्रेसिंग हो सकती होय तो इनको ब्रह्मवादी क्यों नहीं माननो? ये मेरो विचार हे. उनके यहां ब्रह्म शब्द नहीं

हे, उनके यहां बत्तख हे तो अपने बापको क्या गयो? अपन जब केंह रहे हें के ‘‘**सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः नामानि कृत्वा अभिवदन् यदास्ते**’’. ब्रह्मको जब अपने यहां या तरेहको वर्णन पुरुषसूक्तमें कियो गयो हे, तो सर्वाणि रूपाणिमें बत्तखरूपाणि कृत्वा वदन् यदास्ते, यामें अपनो क्या गयो? अपनी क्रियेटरशिप प्रूव करनी हे के ब्रह्मकी क्रियेटरशिप प्रूव करनी हे? या बातकु ध्यानसु समझो. कोई हेलियोपोलिसमें प्रकट भई वो बत्तख और वो खुदके साथ खेल रही थी इनिशियली. जो अपने यहां भी कह्यो हे ‘‘**स आत्मानम् द्वेधाऽपातयत्. स वै नैव रेमे. स द्वितीय ऐच्छत्. स आत्मानम् द्वेधाऽपातयत्. पतिश्च पत्नी चाभवताम्**’’. और वा तरेहसु वाने आत्मरमणको विस्तार नामरूप सृष्टिके रूपमें कियो.

अब वो सेल्फ क्रियेटर खुदके साथ खेलनो चाहतो थो and proceeded to shoo and teafnooth. अब ये शू क्या बला हे? ये देख्यो ध्यानसु. शू माने द्यु टैफनूथ माने पृथिवी. ‘‘**द्यावापृथिवी जनयन देव एकः**’’. वाने क्रियेटरशिपमें सबसु पेहले क्या स्टेप लियो? एक शू बनायो और टैफनूथ माने पृथिवी बनाई. भूमि बनाई. और ईजिप्टोलौजिस्टके विद्वान या बातकु केंह हें के के टैफ जो उपसर्ग हे या नाम हे वाकु थोड़ी देर भूल जायें तो टैफनूथमें नूथ शब्द जो हे वो पाछो द्युको वाचक हे. अब ये भी पाछो द्युको वाचक हे तो अपन अच्छी तरेहसु समझ सकें हें उपनिषद्की दृष्टिसु देखें तो के द्यावापृथिवी जनयन देव एकः. पर भूमि जो हे ‘‘**तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः. आकाशाद्वायुः. वायोरग्निः. अग्नेरापः. अद्भ्य पृथिवी**’’. तो अन्तरिक्षमें सु द्युमें सु भू बनी हे. ये अपन केह रहे हें. भूमेंसु द्यु नहीं बनी हे.

यदि अपनको ग्राफिकली समझनो हे, तो स्पष्ट अपनेको समझनो पड़ेगो के पहले वाने एक स्पेस् क्रियेट कियो. वा स्पेस्में वाने

खेलनेकेलिये एक ग्राउन्ड क्रियेट की. वो ग्राउन्डकी तरेह वाने भू बनाई. तो द्युमेंसु भू बनी. ऐसे वहां शूमेंसु नूथ बनी. वो टैफ क्या हे वापे उनने काफी डिस्कशन् करी हे और काफी चर्चा वाने करी हे. पर पृथिवीकु वहां टैफनूथ कह्यो जाय. याके बोहोत सुन्दर चित्र मिलें हें. वो चित्रें क्या हें? एक सर्कल बनावें, मैं बताऊंगो यामें, और वा सर्कलमें टैफनूथकु और द्युकु एक सर्पने घेरके रख्यो हे शेषनागकी तरेह. जो अपने यहां केंह के शेषनागके ऊपर ये द्यु और भूको आखो ब्रह्माण्ड जो हे, वो सर्पवत् स्थित हे. तो वाको वो टैफ और नूथके एक सांपसु यों घेरा डालें. एक सांपको सर्कल बनावें और वो सांप इतनो खूबसूरत हे के जहां वाको मुंह हे वहां वाकी पूंछ हे. मतलब वो टाईमको जो कन्सेप्ट हे, **''भवान् एक शिष्यते शेष संज्ञा''** जहां वो खतम हो रह्यो हे वहांसु पाछो वो शुरु हो रह्यो हे. जहांसु शुरु हो रह्यो हे वहीं आके वो खतम हो रह्यो हे. वो लीनियर कन्सेप्ट नहीं हे वो साइक्लिकल कन्सेप्ट हे. ये टैफ और नूथ शू और टैफ नूथ जो हे वो वा शेषनागसु घिरी भई हे.

अपने यहां कह्यो गयो हे के सारो ब्रह्माण्ड शेषनागके माथेपे एक सरसोंके दानाके तरह रख्यो भयो हे. भागवत यों केह हे **''कोटिब्रह्माण्डराशयः सर्षपवत्''** वहां. भवान् एक शिष्यते शेषसंज्ञा. ये जो आखो टाईम कपल्ड् विद् सेल्फ अवेयरनेस् अहंकार. मने जो सेल्फ अवेयरनेस हे. जाको अपन सेल्फ अवेयरनेस केह हें, अहंकार केह रहे हें, वो स्वयंप्रकाश ब्रह्मको प्रोडक्ट हे के नहीं? स्वयंप्रकाशमें अपन क्या बात केह रहे हें? ब्रह्म स्वयंप्रकाश हे स्वप्रकाश हे. मतलब ब्रह्मकु अहंकार हे. वो ऐसो अहंकार हे के वा अहंकारके बाहर कुछ भी नहीं हो सके. वा अहंकारको अपन थोड़ो शेयर कर रहे हें. सो अपनो अहंकार कैसो हे? मेरो अहंकारकु मैं आपसु शेयर नहीं करूं. मेरे अहंकारकी एक लिमिट हे. सो तो अपनी चेतना भी मैं आपसु शेयर नहीं करूं हूं. मेरी जो रति हे वाकु भी शेयर नहीं करूं. तो ब्रह्मकी जो

स्वयंप्रकाशता हे मने परमात्माकी स्वयंप्रकाशिता जीवात्मामें अहंकारके रूपमें प्रकट हो रही हे. मोकु कोईसु पूछनो नहीं पड़े के भई मैं क्या हूं? दूसरेकु मोकु पूछनो पड़े के तुम कौन हो? आयो ना ख्यालमें!

हमारे संतरामपुरवाले जीजाजी बता रहे थे के उनके यहां दो भाई हते. अचानक मैं भी वा दिन मौजूद हतो. उनने कही के तुम्हारे कितने बच्चे हें? तो वाने अपने भाईसु पूछी के हें भाई अपने कितने बच्चे? तो वाने कही के दो बच्चे बापू. खुदके बच्चाकेलिये भी पूछनो पड़े क्योंके बच्चा अपने अहंमें आ नहीं रहे हें. पर खुदकेलिये कोईकु पूछने पड़े के भई मैं कौन? ये नहीं पूछनो पड़े.

मैं कौन ये पूछनेकी कोईकु जरूरत नहीं पड़े. क्योंके कोई बतातो होय तो भी अपनेकु पाछो वो अपने अहंकारके बलपे ही अपनेकु समझनो पड़ेगो के मोकु ये ऐसे मान रहे हें. जैसे कोई अपनेको केह दे के मैं कौन? वो केह दे तू पागल. तो वा पागलके बीचमें भी अपनो अहंकार तो बोलेगो ना के ये मोको पागल समझ रह्यो हे. तो दूसरेकी समझकु भी अपन स्थापित करनेको अहंकार हे वो कायको बनायेंगे? पाछो अपने अहंकारको.

तो ब्रह्मकी जो स्वयंप्रकाशिता हे अंशीकी, वो अंशमें अहंकारात्मना प्रकट हो रही हे. वा बातकी लाचारी समझो. केवलाद्वैतीनकु भी ब्रह्मके साथ भेद अनुभव करनेकेलिये अहंकारको लानो पड़्यो अहंब्रह्मास्मि नहीं तो ब्रह्म सब कुछ हे तो केवल कैसे समझमें आयेगो? ब्रह्म एकाकी हे ये समझनेकेलिये तू ब्रह्म हे केहनेसु ब्रह्मकी एकाकिता समझमें नहीं आवे. लाचारी कैसी हे अपने अन्डरस्टैन्डिंग वाकी देखो. वाको कारण क्या?

अपने गोवर्धनपीठके शंकराचार्य जो मैथेमैटिशियन् हते, उनने एक बोहोत मजेदार आर्ग्युमेन्ट् दी हे. के तूको बहुवचन तुम होयगो.

हीको बहुवचन दे होयगो, शीको बहुवचन दे होयगो. अहंको बहुवचन वयं नहीं हे. क्योंके मैं और तू वयं हो सके. मैं और तू बहुवचन हो सके हे. अहं सदा एकवचनमें ही रेहवे हे. अहं ब्रह्मास्मि. तो ब्रह्मकी एकाकिता समझनी हे तो ब्रह्मकु सिंहासन तो अपने अहंको प्रोवाईड करें तो वाकी एकाकिता सिद्ध होवे. अहंके सिंहासनपे बैठे बिना ब्रह्मकी एकाकिता अपनेकु कन्वे नहीं होयगी. अपनी माईन्ड सेटिंग या तरेहसु बनाई हे.

या बातकु समझनेको प्रयास करो के अहंके सिंहासनपे ब्रह्मको बैठाओ तो तो ब्रह्म एकाकी हे समझमें आ सके अन्यथा तो ब्रह्म भले होयगो अपने घरमें वो एकाकी पर अपनेको समझनो होय तो अपने अहंके सिंहासनपे वाकी प्रतिष्ठा करनी पड़ेगी. ‘‘**इह आगच्छ इह सुप्रतिष्ठितो भव अहं ब्रह्मास्मि**’’. तब अपनेको ब्रह्म एकाकी समझमें आयेगो. त्वं ब्रह्मास्मि केहते ही लफड़ा हो जाये. केहके देखो तत् त्वम् असि. ब्रह्मकी एकाकिता समझमें नहीं आयेगी. क्योंके केहनेवालो कौन हे? तत् आ गयो, त्वम् आ गयो पर केहनेवालो कौन हे अहम्. यदि वो ब्रह्म हे तो पेहले वो अपनेकु ब्रह्म क्यों नहीं मान रह्यो हे? तत्‌कु ब्रह्म मान रह्यो हे. चापलूस तो नहीं हे? ये तो प्रश्न उठेगो ना? त्वम् आप: त्वम् वायु: त्वम् अग्नि: ये तो चापलूसी हे. त्वम् ब्रह्म ये तो चापलूसी हो गई. तत्त्वमसि तो कही कोईकी चापलूसी तो प्रकट नहीं करी हे? खाली पीली चमचागिरी कायको करता हे? वोई तो प्रश्न हे ना वहां! तत्‌कु कायकु ब्रह्म मान रहे हो? यदि ब्रह्म एकाकी हे तो वाके लिये सबसु अच्छो योग्य सिंहासन अहमानुभूति हे. ब्रह्म स्वयंप्रकाश हे तो अपनेकु समझनो पड़ेगो के अहमानुभूति जो हे वो ब्रह्मकी स्वयंप्रकाशिताको समझनेको बेस्ट् मौडल हे. आई बात ख्यालमें मेरी!

या लिये जब वो आतुम शू और टैफनूथ बन्यो और वाकु शेषसु कवर करके सर्कल बनायो, अब वो अण्डा बनायो के सर्कल बनायो, जो

भी बन्यो वो बनायो, वो सब केहनेकी विधा भी हें और जो वामें प्रतिपाद्य तत्त्व हे वापे अपन ध्यान दें तो अपनेकु समझमें आ सके के उनकी प्रतिपादन शैली वा मूल तत्त्वके प्रतिपादनमें और अपनी प्रतिपादन शैलीमें बोहोत अन्तर तो नहीं रेह गयो. वाके बाद बड़ी मजेदार बात, इन सबनकु कम्पेयर करके देखें तो सचमुचमें लोग काव्यशास्त्रको आनन्द समझें, पर दर्शनशास्त्र कितने आनन्दको विषय हे वो तुलनात्मक अध्ययन करें धर्मनको, फिलोसिफीको तब अपनेको लगे के काव्य क्या आनन्द देगो जितनो दर्शन आनन्द दे.

अपने यहां एक वचन आयो हे के सृष्टिको पैदा करनेकेलिये प्रजापतिने क्या कियो? ‘‘**प्रजापतिः आत्मनो वपाम् उदक्खिदत**’’. सृष्टि पूरी एक यज्ञ हे. ये सारी सृष्टि एक यज्ञात्मिका सृष्टि है ‘‘**यज्ञेन् यज्ञम् अयजन्त देवा तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्**’’. सारी सृष्टि हे यज्ञात्मिका हे. सृष्टि अपने यहां अज्ञानात्मिका नहीं हे. सृष्टि अपने यहां जो हे वो संघर्षात्मिका नहीं हे. सृष्टि अपने यहां यज्ञात्मिका हे. सृष्टि अपने यहां पापको फल नहीं हे के तुमने अपराध कर दियो सो गो टु हैल. गो टु अर्थ. पापको फल नहीं हे. क्योंके भगवान्ने कोई ड्र्युरेस्में कोई कम्पल्शनमें सृष्टि नहीं बनाई हे, कोईके डरके मारे. भगवानने आत्मरतिके एक्स्टेन्शनमें सृष्टि बनाई हे. तो वा सृष्टि बनाई होनेके कारण प्रजापति – यज्ञ करनेमें कोई चीजकी आहुति देनी चईये, अब वा बखत आहुति देने लायक तो कुछ हतो ही नहीं. न घेंटा हते, न मेष हती, न अजा हती, न गाय हती, न घोड़ा हते कुछ भी नहीं हतो. तो आहुति देनी कायसु?

तो उपनिषद् बोहोत सुन्दर समझावे. ‘‘**प्रजापतिः आत्मनो वपाम् उदक्खिदतः**’’. सृष्टिरूप यज्ञ करनेकेलिये भगवानने अपने आपमेंसु अपनी वपा अपनी चरबीकी आहुति दी हे. ये आत्मरतिको एक्स्टेन्डेड् मौडल हे. ‘‘**यज्ञेन यज्ञम् अयजन्त देवा तानि धर्माणि**

प्रथमान्यामत्''.

ध्यानसु समझो याकी खूबसूरती. अब यामें मीमांसकनकु यामें चिंता हो गई के या बातको स्वार्थमें प्रामाण्य कैसे हो सके हे? यदि वपाको उदक्खिदन वपा खुदकी निकालके वाने आहुति दी तो वो जिन्दो हतो के मर गयो? मर गयो तो वो वपा कैसे दे सकेगो वपा निकालनेमें? और वपा दी हे तो वो जिन्दो कैसे रेह गयो? याकेलिये याको स्वार्थमें प्रामाण्य नहीं हो सके. या लिये ये अर्थवाद हे. स्तावकत्वे वात्क्तवेन हे.

महाप्रभुजी ऐसे नहीं मानें. महाप्रभुजी केंह हें के भई तुम एक मौडल सामने लाओ जा मौडलके कारण तुमको समझमें आवे के श्रुति केहनो क्या चाह रही हे? स्वार्थमें प्रामाण्य क्यों नहीं हे? यदि तुम कहोगे के प्रजापति ने खुदकी वपा को होम कियो. या तरीकेको जो वचन हे वो अपने लेवलपे अपनेकु समझमें नहीं आ रहे हें वपाकी आहुति देनेसु आदमी जीवित नहीं रेह रह्यो हे, ये लाचारी कौनकी हे? अपनी हे. वाकी लाचारी ये तुमने कैसे मानी? याकेलिये याको स्वार्थमें प्रामाण्य मानो.

अभी रीसेन्टली साईन्टिस्टन्ने पता लगाई एक गिलहरी ऐसी होवे के वाको जा बखत कोई शिकार करने जाय तो वाकु ये फेसिलिटी अवेलेवल हे के अपनी टांग अपनो हाथ तोड़के खानेको दे दे. अब जितनी देर वो खावे उतनेमें वो भग जाय. सर्वाइवल किटकी तरेह वाको येफेसिलिटी प्रोवाईडेड हे. जब भाग नहीं सके और वो समझ जाये के खानेको आ रह्यो हे तो अपनेको ये तीर, तलवार, बन्दूक वगैरह प्रोवाईड किये गये हें. पर वाकु प्रकृतिने ये सिस्टम प्रोवाईड कियो हे के वो अपनो एक अंग तोड़के इच्छया, अपन नहीं तोड़ सकें अपनो अंग, अपनेको तो

अंग तोड़नेकेलिये भाला, चाकू, तलवार वगैरहकी जरूरत पड़ेगी पर वाकु प्रकृतिने ये फेसिलिटी प्रोवाईड करी हे, के अपनो एक अंग खुद तोड़के वाको दे दे खानेकेलिये के तू खा और खुद भाग जाये.

प्रजापति आत्मनो वपाम् उदक्खिदत अपन ह्युमन् लौजिकके आधारपे वाकु स्वार्थमें अप्रमाण मान रहे हें तो भई ह्युमन बींग ही एक जीवनको क्राईटेरिया हे. वो क्या यज्ञ नहीं कर रही हे? वो भी तो यज्ञ कर रही हे ना! तो ब्रह्मणे स्वाहा: ब्रह्मणे इदं न''. अंग खा जा. वाको ये फेसिलिटी और प्रोवाईडेड हे के थोड़े दिननमें वो अंग वाको पाछो उग जाये. जैसे छिपकलीकी पूंछ कट जाये तो पाछे उग और जाये. अपने जैसे नख उग जायें, बाल उग जायें, ऐसे वाको वाने जो अंग तोड़के दियो वो पाछे उग और जातो होय. अपनेकु वो फेसिलिटी नहीं नेचरने प्रोवाईड करी याके लिये या क्षुद्र सामर्थ्यके आधार पे अपन सृष्टिकर्ताकी सामर्थ्यपे प्रश्नचिन्ह लगा रहे हें, तो भई तुम रेशनल एनीमल हो के इररेशनल एनीमल हो ये तो वन्स् फॉर ऑल डिसाईड करो?

मैं समझूं दुनियांको सबसु बड़ो इररेशनल स्टेटमेन्ट् ये हतो के मैन इझ् दि मेज़र औम एवरी थिंग. नथिंग कैन बी मॉर इररैशनल दैन दिस. यस् इट इझ् रेशनल स्टेटमेन्ट् इन् रैफरेन्स् ऑफ मैन ओनली. अपन अच्छी तरेहसु जानें के पेड़ जो हे वो कार्बनसु जी रह्यो हे. वो अपनी तरेह प्राणवायु औक्सीजन् सु नहीं जी रह्यो हे. तो मैन मेज़र कहां हे हर बातको? पेड़ जो हे वो आंखसु नहीं देख रह्यो हे. जा दिशामेंसु प्रकाश आ रह्यो हे वा दिशामें बिना आंखके वो कैसे बढ़ जा रह्यो हे. आंखसु नहीं देख रह्यो हे, पेड़ जो हे वो मुंहसु नहीं खा रह्यो हे, **''अपाणिपादो जवनो ग्रहीत पश्यताचक्षु शृणोत्याकर्ण:''**. पेड़ संगीत भी सुने हे. जगदीशबोसने सिद्ध कियो. वो शृणोति अकर्ण: कानके बिना सुन रह्यो हे.

अब अपन ये केंह के ये तो ब्रह्मके बारेमें श्रद्धासु कही गई बात हे, मिसटिक स्टेटमेन्ट हे. लोजिकल स्टेटमेन्ट् नहीं हे तो भई ये पेड़की बात लोजिक स्टेटमेन्ट हे के मिसटिक स्टेटमेन्ट हे, जगदीशबोसकु. अब क्या ये कहोगे के जगदीशबोसको स्टेटमेन्ट मिसटिक स्टेटमेन्ट हे? सबसु

पेहली इररैशनलिटी यहां प्रकट भई के जा बखत अपनने मैन इझ् दि मेज़र ऑफ एवरीथिंग कही. अपनी जो कोई भी रीजनिंग हे वाको मैन मेज़र हे. वामें अपन सामान्य भाव कर सकें के भई के हमकु समझमें नहीं आ रही हे बात. तुमको समझमें नहीं आ रही हे तो अच्छी बात हे. पर ऐसो दावा क्यों करनो के हम सब कुछ समझ जायेंगे! वोही तो समझोगे के जो स्थिति तुमको प्रोवाईडेड हे. वामें तुम्हारी समझको धिक्कारो मत. सूर व्हेके काहे घिघियात हे कछु भगवद्लीला गा. कुछ भगवत्लीला गाओ के तुमको कितनी अच्छी समझ दे दी हे के जो अपनी समझ नहीं हे वो तुमकु समझ हे.

आजही मैंने एक बोहोत मजेदार स्टेटमेन्ट बांच्यो. वा स्टेटमेन्टमें एक बोहोत अच्छी बात एक जैन मुनिने कही हे. मोहदृष्टिसु देहको देखनेपे राग उत्पन्न होवे हे. तत्त्वदृष्टिसु देहको देखनेपे विराग उत्पन्न होवे हे. मैंने कही के भई महाप्रभुजीसु पूछुं के महाप्रभुजी क्या केह रहे हें? ये जैन स्टेटमेन्टके विसाविस वैसे तो मोसु महाप्रभुजी बोलते होते तो मेरो तो उद्धार हो गयो होतो, पर मेरी अन्त:स्फुरणामें महाप्रभुजीने मोकु कही के तत्त्वदृष्टिसु देखनेसु माहात्म्यज्ञान उत्पन्न होगयो. इतने क्षुद्र देहमें जो हर बातमें मरनेकेलिये आमादा हे, वामें भगवानने कितनी कितनी फेसिलिटी पैदा करी हें. यदि ये फेसिलिटी आर्टीफिशियल भी पैदा करनी होंय अपनेको तो अब्जन् रुपया चईयेंगे. और ये एक छोटेसे स्पर्मसु पैदा हो जा रही हे. जामें कोई खर्चा नहीं होवे. तो माहत्म्यज्ञान पैदा होयगो, विराग उत्पन्न नहीं होयगो. मोहदृष्टिसु देखोगे तो भक्तानां कृष्णदासता पैदा होयगी. ये देह इतनो अच्छो दियो हे तो ये तो भगवत्सेवार्थ हे, भक्त्यर्थ हे.

महाप्रभुजीको पूछें तो महाप्रभुजी ये केंहगे के मोहदृष्टिसु यामें भक्तिको भाव जगेगो के भई इतनो अच्छो देह - अपने यहां वार्तानमें याई लिये आवे के इतने सुन्दर देहको खाली फोकट बलात् जला देनो?

क्यों भगवत्सेवार्थ नहीं वापरनो वाकु. भगवद्भक्तिकेलिये, भगवदनुभूतिकेलिये क्यों नहीं वापरनो? जब ये फेसिलिटी प्रोवाईड की गई हे क्यों अपन क्षुद्रतामें खपानो? तो मोकु लग्यो के जैननको एक अलग परस्पैक्टिव् हे. क्योंके वो त्यागवादी हें. अपन न त्यागवादी हें, न अपन भोगवादी हें, अपन तो भक्तिवादी हें. अपनेकु हर बातमें उनको जो परस्पैक्टिव हे, वो या दृष्टिसु दीखेगो के तत्त्वदृष्टिसु देखनेपे जगतमें अपनेको माहात्म्यज्ञान होयगो के अद्भुत माहात्म्य हे गजबको माहात्म्य हे, ऐसो अपनेको लगेगो.

एक शास्त्रीजी हते. मैं अक्सर उनकी बात बतातो रहूं. उनको बेटा महान् गिलिन्डर. कई बखत मारामारी करके जेलमें जा आयो. मैंने एकदिन पूछी के आपके चिरंजीवी क्या करें? तो बोले अरे मेरो बेटा! छः बखत जेलमें जाके आयो. शास्त्रीको बेटा छः बखत जेलमें जाके आयो, ये माहात्म्य हे के निन्दा हे? उनकु बेटामें स्नेह हे तो उनकु माहात्म्य लग रह्यो हे. अपनेकु वो वचन निन्दार्थक लग रह्यो हे. अरे मेरो बेटा! मेरो बेटा! बोहोत गजबको हे. छः बखत जेलमें होके आयो हे.

पहले मारवाड़ीनमें भी लड़की तभी दी जाये के जब टैक्स् रेड भई होवे तो. ससुरालकी क्वालिटी ये मानी जाये के रेड कितनी भईं? बैंकरप्ट कितने भये? जितनी बार बैन्करप्सी भई मने पैसा उतनो ही ज्यादा हे. अब अपन वाकु निन्दाकी दृष्टिसु देखें हें. वहां वो लड़की देनेकेलिये सबसु अच्छो घर मान्यो जाय के जाने अपनो दिवाला निकालो होय. तो हर व्यक्तिके परस्पैक्टिव कितने अलग अलग हें वो लड़कीको देनेको वरको सबसु अच्छी लायकात क्या हे? दिवाला काढ़्यो? तो दो चलो लड़की. मने पैसा खाके बैठ्यो हे. खूब पैसा जमा हें. लड़की कभी दु:खी नहीं होयगी. दीवाला नहीं काढ़्यो होयगो तो टैक्स्में भर भरके गरीब हो गयो होयगो. अब दीवाला काढ़नो गुण हे के अवगुण हे - देहको तत्त्वदृष्टिसु देखनो वो विरागोत्पादक हे के वो

रागोत्पादक हे – ये सारी बातें सबसु पेहले अपनेकु अहंसु पूछनी चईये. के बता भई तू क्या हे? जब समझ गयो के तू क्या हे तो ये क्या हे वो समझमें आ जायेगो. जब तक के मैं क्या हूं वो समझमें नहीं आयो तब तक ये क्या हे समझमें नहीं आयेगो. यालिये अपनेकु समझनो चईये के अपन ब्रह्मवादी हें तो अपनो मैं क्या हे? अब ब्रह्मवादीको मैं क्या हे? ये अपन समझ गये तो ये ईजिप्शियन ब्रह्मवाद क्या हे, अपन अच्छी तरेहसु समझ सकेंगे. मेरी बात समझमें आई ना आपको.

या लिये वहां क्या केह रहे हें के वो जो यूज स्पेट फोर्थ शू एण्ड टैफनूथ. वो जो आतुम हतो वाने थूक्यो. वा थूकनेमेंसु शू और टैफ नूथ पैदा हो गये. अब उनके यहां वो बात नहीं हे प्रजापति आत्मना वाली – वाने थूक्यो मौंहसु थूक्यो कुछ भी कियो जो कुछ कह्यो वो अपने यहां ये उदाहरण बतायो हे **''यथोर्णनाभि सृजते गृह्यते च''**. वा तरेहसु वो मकड़ी जो हे वो अपनी थूकमेंसु वे विश्वको जाला बनावे हे. या तरेहसु वा आतुमने थूक्यो वासु द्यावा पृथिवी बन गई. याकी पैराफ्रेसिंग अपने उपनिषदवाक्यसु हो रही हे. संहिता ब्राह्मण आरण्यक यों केह हे प्रजापति आत्मनो वपाम् उदक्खित .

वाई बातकु उपनिषद दूसरी तरेहसु कैसे केह रह्यो हे यथोर्णनाभि सृजते गृह्यते च. वो मकड़ी अपनो जाला थूकके आखी सृष्टि बना दे हे जालाकी और वामें आनन्दसु विचरण करे. उनको भी वो आतुम जो हे वाने थूक्यो और थूकके, वाकी थूकमें इतनी सामर्थ्य हे मकड़ीके जैसी अपन वाकु अभिन्ननिमित्तोपादानकारण मान रहे हें हों. मकड़ी थूकके वामें जाला बनाके वामें रेहवे हे वाकी स्वमहिमामें प्रतिष्ठित होनेको ऐक्स्टेन्शन हे. सनु भगवन् कस्मिन् प्रतिष्ठितः स्वेमहिम्नि प्रतिष्ठितः. आत्मारामः, आत्मक्रीड, आत्ममिथुन. तो जालामें अपने थूके भये जालामें जो मकड़ी रेह रही हे वो आत्मरमण, आत्मक्रीड, आत्ममिथुन, आत्मराम, आत्मरतिशील हे के नहीं? वाको अपनने मकडीको उदाहरण

मान्यो. उनके यहां थूककी बात आ गई. आ गई होयगी थूक वाको अचानक, खांसीवांसी आई होयगी तो थूक दियो. थूक दियो तो ये शू और टैफ पैदा हो गये. कैसे अपने श्रुतिसु पैरेलल जा रह्यो हे! या बातको देखो. अपनो मौडल भी तो वो कहीं न कहीं तो स्वीकार कर रहे हें के नहीं कर रहे हें? तो फिर अपन क्यों नहीं माने ये भी ब्रह्मवादी हें. श्रुतिके ब्रह्मवादी नहीं हें तो उनको ब्रह्मने वरण कर लियो और उनकु तस्यैव आत्मा विवृणुते तनुं स्वाम् हो गयो होयगो.

और देखो क्या केह रहे हें. या थूकनेके बाद शू जो हे वो सबसु पेहले लाईट बन्यो. लाईट बनके वाने डिवीजन कियो. के कुछ डार्कनेस हे वासु मैं कौनसे अर्थमें अलग हू? अपने यहां भी ये कह्यो जा रह्यो हे. तत् सवितुः वरेण्यं भर्गोदेवस्य धी महि धियो यो न प्रचोदयात्. डार्कनेससु पेहले वो एक अलग लाईट बन्यो. ध्येयं सदा सवितृ मण्डलमध्यवर्ती नारायण सरसिजान सन् सन्निविष्टवित्त केयूर वाहन मकरकुण्डलवान किरीटी हारी हिरण्यमयवपु धृत शंखचक्र – तो पेहले वो लाईट बन गयो. और वा लाईटको वो लोग सूर्य ही मान रहे हें पाछे. लाईट बन्यो वाको मतलब क्या? केह रहें हें के सूर्य हे. वा सूर्यको वो लोग रे केंह हें. अपने यहां राय कह्यो हे. अब उनको उच्चारण क्या हतो वो मोको पता नहीं हे. क्योंके वो अंग्रेजी जा ढंगसु लिख रहे हें, ये लफड़ा तो हर भाषामें रह्यो भयो हे ही.

एलेग्जैन्डर हतो वाको अपन अलक्षेन्द्र केह हें. अपनी यमुना हती वो जैमुनेर केह हे ग्रीक यात्री. अपन पाटलीपुत्र केह हें वो लोग पैलीब्रौथ केह हें. पैलीब्रौथ कायकु केह रह्यो हे भई? पाटलीपुत्र क्यों नहीं केह रह्यो? हर भाषामें या तरीकेको लफडा हे के वो दूसरेकी भाषाके शब्दनकु शुरुआतमें जब युरोपियन यात्री यहां आये तो धेन्तु कहते कोई हिन्दूको, अपन यों केंह के वो पर्शियन लोग सिन्धुको हिन्दू केहते थे. पर ये युरोपियन यात्री लोग अपनेकु घेन्तू केहते थे. सब

यात्रीनकी डायरी पढ़ो तो घेन्तू. ऐसे ऐसे वर्णन करें के काले चेहरामें उनके सफेद दांत घेन्तूकी तरेह चमक रहे थे. अरे भई तुम मंजन नहीं करते थे, तुम्हारे यहां मंजनकी पद्धति नहीं हती पर हमारे यहां तो बचपनसु ही मंजन करनेकी पद्धति हती. हमारे सफेद दांत तो चमकेंगे ही. तुम्हारे यहां मंजन करनेकी पद्धति नहीं हती, वो क्या करें के सुबह उठें और बीयरको एक कुल्ला कर दें तो मौंह फ्रेश हो जाये उनको. मंजन करनो भूल जायें.

हमारे भारतीय विद्याभवनके दीक्षिताचार्यजी केहते के वेद जो हे ना श्याममनोहरजी मंजन करे बिना नहीं आता हे. अब मंजनका वेदके साथ सम्बन्ध क्या? बोले के मुंह ही स्वच्छ नहीं होगा तो वेदका उच्चारण होगा कैसे? वो लोग मंजन नहीं करते थे यालिये उनको लगतो थो घेन्तूनके काले चेहरामें सफेद सफेद दांत बोहोत चमक रहे थे. चमक रहे थे वो निन्दाकी बात नहीं हे. वोतो स्तुतिकी बात हे. के हमारे काले दांत नहीं थे, हमारे पीले दांत नहीं थे क्योंके हम मंजन करते थे. तुमकु मंजन करनो नहीं आतो थो. बीयरको कुल्ला करते थे. यामें इतनो लफडाकी क्या बात हे? चमक रहे थे सफेद दांत तो! हर व्यक्तिको या तरीकेकी कोई कोई अपने कल्चरके, अपने सिविलाईजेशनके तालामें बन्द होनेकी आदत होवे हे. अपन भी अपवाद नहीं हें.

पर मैं ये बात या लिये बतानो चाह रह्यो हूं के अपनेको ब्रह्मवादके कोई एक ब्राह्मिक संदर्भमें ये सारी बातें देखनेकी इनसाईट होनी चईये. कोई बात कोईकी निन्दाकेलिये क्यों हे? कोई बात कोईकेलिये स्तुति क्यों हे? अपने यहां यों कह्यो गयो हे के दन्तमंजन किये बिना कभी भी जप नहीं करनो. मुखशौचके बिना मन्त्रोचारण नहीं करनो. अपने यहांके दांत साफ रेहते हते उनके यहां नहीं रेहते होंयगे! यामें क्या चिंताकी बात हे.

सो वाने लाईट बनाई. वो जब लाईट बनी वाके बाद वो केह रहे

हें के वा शूमने द्यु ने टैफनूथ और शूके बीचमें वाने हवा पैदा करी. एअर पैदा करी. देखो अपनो उपनिषद येही तो केह रह्यो हे तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः. आकाशाद्वायुः. यामें लफड़ेकी क्या बात हे? वोई तो सारी बातें आ रही हें. और वो केह रहें हें के एअर दैट सेपारेट्स् अर्थ फ्रोम दि स्काई. वायुः सन्धानम्. तैत्तरीय उपनिषद् केह रह्यो हे. पृथिवी पूर्वरूपम् द्या उत्तररूपम् वायु सन्धानम् तो वायु जो हे वो सन्धान् हे. वो वाको डिवाईडर हे. इतनी सी बात हे ये कौनसी अलग बात हे. वाके बाद वो केह रहे हें. उनके यहांके एक शिलालेखमें ऐसे लिख्यो भयो हे I am eternity the creator of the millions who repeats spitting of atum. मैं सनातन हूं और क्रियेटर हूं सबको करोड़नकु. अब वो अनन्त नहीं केह रहे हें मिलियन्स् केह रहे हें.

अपने यहां भी तो सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्ष सहस्रपाद ---. अब ये सहस्र हजारको वाचक नहीं हे अनन्तको वाचक हे. वो मिलियन्स् केह रहे हें तो ठीक हे. मतलब वाको अपनेकु अनन्त समझनो चईये. मिलियन्स्को मैंने क्रियेट कियो और कियो कैसे हे? who repeats spitting of atum. अपनो थूक थूकतो जाय. इण्डियन कल्चर हे ना! दुबईमें नहीं थूकें. थूकें तो हंटर पड़े वहां. यहां प्रथमेश काकाजीने पाटिया लगायो. ये मन्दिरकी दीवार हे. यापे थूकनो मना हे. इतनो थूक्यो के पाटिया ही दीखनो बन्द हो गयो. अब ये इण्डियन कल्चर हे. ऐसे ही उनको भी वो ब्रह्म इण्डियन होयगो के नहीं होयगो? इतनो इतनो थूकके इतनी सृष्टि पैदा करदी वाने. चिन्ताकी बात नहीं हे. थूक रह्यो हे तो थूकने दो, पाटिया दीखनो बन्द हो जाये तो हो जाने दो. समझमें आई बात.

Atum was unhappy in the prime evil water. स नैव रेमे. वो प्राईम ईविल वॉटर जो हतो; वॉटर मने ये जल नहीं वो कॅओटिक जो ओशन हतो, वामें कॉसमॉसमें जो बत्तख पैदा भई, वो

हैप्पी नहीं हतो. कुछ अनहैप्पी हतो स नैव रेमे स द्वितीयम् ऐच्छत्. स आत्मानम् द्वेधा पातयत्. या तरहसु वाने वो हैप्पी नहीं हतो, स एकाकी न रमते स द्वितीयम् ऐच्छत्. वा लिये वा आतुमने ये सारी सृष्टि पैदा करी. वाके कारण ये सारो जो मिलियन्स् क्रियेटेड चेहरे अपनेको दुनियांमें अनुभव दे रहे हें.

सो संक्षेपमें अपन देख सकें. याको विस्तार तो हरेक शिलालेखकी पैराफ्रेसिंग मैं आपको आश्वस्त करके कहूं के अपने कोई न कोई शास्त्र वचनसु आनन्दसु करी जा सके. पर ये तो एक स्थालिपुलाक न्यायसु मैंने खाली एक दिशा निर्देश कियो हे के कैसे तरेहके ब्रह्मवादी वो हें और कितने अपने पैरेलल जा रहे हें. अब श्रौत नहीं हे तो नहीं हे, नहीं हे. यमेवैष वृणुते तेन लभ्य: तस्यैष आत्मा विवृणुते तनुं स्वाम्.

या तरेहसु ईजिप्शियनको ब्रह्मवादपे अपनने थोड़ो एक संक्षिप्त हाय हलोको परिचय कियो हे. खाली हाय हलो कर दो ईजिप्शियन ब्रह्मवादको हाय, हाउ आर यू? बस केह दो हाउ डूयु डु? विस्तार तो ये रेण्डल पढ़ोगे तो आपको भी मजा आयेगी. जैसी मजा मोकु आई. मोकु पूछोगे तो हर याके शिलालेखको जितनो याने कफनके बोहोत सारे वचननको अनुवाद याने कियो हे. उनके शिलालेखनको अनुवाद कियो हे पिरामिडनको. और उनके चित्रें भी अपन देखें और उन चित्रनको अपने चित्रनसु कम्पेयर करें तो ब्रह्मवाद मोको स्पष्ट लगे हे. यामें कोई संदेहकी गुंजाईश नहीं हे. ये छोटेसे ईजिप्शियन ब्रह्मवादके इन्ट्रोडक्शनके बाद अपन आलेख पत्र लेंगे.

* * *